मर्श - समिति :

श्री अगरचन्द नाहटा

डॉ. कन्हैयालाल सहल

प्रो. नरोत्तम स्वामी

डॉ. मोतीलाल मेनारिया

श्री सीताराम लाळस

श्री उदयराज उज्ज्वल

श्री गोवर्धनलाल काबरा

श्री विजयसिंह सिरियारी

पिंगळ सिरोमणि

संपादक

नारायणसिंह भाटी

प्रकाशक

राजस्थानी शोध - संस्थान

सम्पादकीय

भारत की प्राचीन काव्य-परम्परा में छंदों का विशेष महत्व रहा है। अति प्राचीन काल में ऋषि-मुनियो तक ने अपने चिंतन को छन्दों के माध्यम से ही व्यक्त किया है। हमारे आचार्य छन्दो के प्रयोग मे जितने निपुण थे उतने ही उनके महत्व के बारे मे भी जागरूक थे। इसीलिए छन्दों को उन्होंने वेदों के ६ अंगों मे से एक आवश्यक अग माना है। 'छन्दः पादौतु वेदस्य' कह कर वेदो को समय की यात्रा कराने वाले अनिवार्य अंग के रूप में इन्हें स्वीकार किया है। क्योकि उस समय मे आज की वैज्ञानिक सुविधाएँ समाज को उपलब्ध नही थी जिसके सहारे वे अपने सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार करते। इसलिए मौलिक रूप में अपनी कृतियो को सुरक्षित रखने तथा आने वाली पीढियों को उनसे लाभान्वित करने के लिए उन्हें छदो के माध्यम का सहारा लेना पड़ा जिनक स्मृति के साथ सहज लगाव रह सकता था।

हमारे प्राचीनतम वैदिक ग्रथों में ७ प्रकार के छदो का प्रयोग मिलता है पर बाद के सस्कृत साहित्य मे छदों की सख्या धीरे धीरे बढती गई। विषयों की विविधता के फलस्वरूप अभिव्यक्ति की शैलियों में भी अनेकरूपता परि-लक्षित होने लगी और कई प्रकार के छन्दो का निर्माण कवियों की प्रतिभा ने किया। बालमीकि रामायण मे १३ प्रकार के, महाभारत में १८ प्रकार के और भागवत मे २५ प्रकार के छन्दो का प्रयोग देखने मे आता है। जब यह विषय काव्य-शास्त्रियों के हाथ मे आया तो काव्य-शास्त्रो और छद-शास्त्रों का निर्माण होने लगा। काव्य के विभिन्न अगो पर इतना बारीकी से विचार किया जाने लगा कि वह स्वयं अपने आप मे एक महत्वपूर्ण विषय बन गया। सस्कृत में कई एक काव्य-शास्त्रो की रचना हुई पर छद-शास्त्रो की दृष्टि से पिंगल मुनि का 'पिंगल सूत्र' बहुत महत्वपूर्ण है जिससे बाद के आचार्यों ने भी पूरी सहायता ली है।

इसके पश्चात् प्राकृत व अपभ्रंश आदि भाषाओ में भी कवियो की आव-श्यकता और आचार्यों की सूझबूझ के अनुसार कई नये छंदों का निर्माण हुआ

छन्दः पादौतु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते ।
ज्योतिषामयनं नेत्रं निरुक्तं श्रोत्र मुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणन्तुवेदस्य मुखं व्याकरणंस्मृतम् ।
तस्मात् सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥
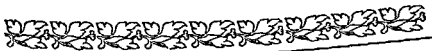
ग्रौर उनके ग्राधार पर शास्त्रो की रचना की गई। इनमे 'प्राकृत पैगलम्' ग्रत्यत प्रसिद्ध है।

यही छद-शास्त्रो की परम्परा ग्रपना वेप बदल कर ग्राधुनिक भारतीय भापाग्रो मे भी ग्राई जिनमे डिंगल का सीधा संबंध ग्रपभ्रंश की परपरा से रहा ग्रौर ग्रपभ्रंश के कई छद डिंगल मे ज्यो के त्यो प्रयुक्त होने लगे। ग्रागे जाकर डिंगल ने ग्रपनी स्वतत्र छद-शास्त्र की परम्परा कायम करली।

डिंगल के नामकरण पर विचार करते समय कई विद्वानों का यह भी मत रहा कि डिंगल की काव्य-रचना नियमबद्ध नही थी ग्रौर न उसके लिए ग्रलग से कोई काव्य-शास्त्र की व्यवस्था ही थी, ग्रत. पिंगल जैसी सुव्यवस्थित काव्य-रचना की तुलना मे उसे ग्रनगढ काव्य-रचना मान कर ही डिंगल नाम दे दिया गया। पर यह धारणा सर्वथा भ्रामक है जैसा कि उसकी काव्य-रचना के नियमों तथा छद-शास्त्र की परम्परा से प्रमाणित होता है।

पिछले कुछ वर्षो की खोज के परिणामस्वरूप जो भी ग्रंथ उपलब्ध हुए उनमें हमीरदान रतनू का 'पिंगळ प्रकास'[1] तथा 'लखपत पिंगळ'[2] जोगीदास चारण कृत 'हरि पिंगळ'[3], उदयराम कृत 'कविकुळ बोध'[4], मछाराम सेवग कृत 'रघुनाथरूपक' ग्रौर किसनाजी आढा कृत 'रघुवरजसप्रकास'[5] उल्लेखनीय हैं पर ये सभी ग्रथ महत्वपूर्ण होते हुए भी ग्रधिक प्राचीन नही हैं। इन सब का रचना काल १७वीं शताब्दी के बाद का है, पर प्रस्तुत ग्रथ 'पिंगळ सिरोमणि' की रचना जैसलमेर के कुवर हरराज द्वारा लगभग स० १६१० ग्रौर १६१८ के बीच की गई। ग्रत राजस्थानी छद-शास्त्रो की परम्परा मे प्राचीनता की दृष्टि से इस ग्रथ का विशेष महत्व है।

ग्रथकर्ता ने ग्रपने ग्रथ मे कई स्थलों पर संस्कृत ग्राचार्यो के ग्रतिरिक्त कई पूर्वाचार्यो का भी उल्लेख किया है जिससे उन्होने ग्रपने ग्रंथ का सम्बन्ध-सूत्र राजस्थानी छद-शास्त्र की पूर्व परम्परा से भी जोडा है। गीत प्रकरण के प्रारभ में तो उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु जाति के दो कवि बादशाहों के भट्ट हुए। उन्होने गीतो का बहुत बडा ग्रथ बनाया पर ग्राचार्यों ने उसे प्रामाणिक नही

[1] रचना काल—स० १७६८। [2] र.का.—स० १७६६। [3] र.का—सं. १७२१। [4] महाराजा मानसिंह जोधपुर के समय में रचा गया। [5] र.का. सं० १८८१।

माना।[1] इससे प्रतीत होता है कि राजस्थानी छद-शास्त्रों की परम्परा प्रस्तुत ग्रंथ से पहले भी किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। कवि ने पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्द वरदाई के रचे हुए पिंगल[2] का तथा नागराज[3] के पिंगल का भी जिक्र राजस्थानी के छंदो पर प्रकाश डालते समय किया है, वह भी इस दृष्टि से विचारणीय है तथा शोधकर्ताओं के लिए इस दिशा में महत्वपूर्ण सकेत है।

प्रस्तुत ग्रंथ प्राचीनता की दृष्टि से ही नही, अन्य कई कारणो से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। सक्षेप मे इसकी विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं।

इस ग्रथ में गायत्री अनुष्टुप, शक्वरी आदि महत्वपूर्ण सस्कृत छंदो के अतिरिक्त २३ प्रकार के दोहो, २८ प्रकार की गाथाओ, ७१ प्रकार के छप्पय के लक्षण तथा उदाहरण दिये गये हैं। बाद में रचे गये छद-शास्त्रों में प्राय: छप्पय के नाम गिना कर या दो-चार के उदाहरण देकर छोड दिये गये हैं। पर इस ग्रथ मे उदाहरण के तौर पर उन्हत्तर छप्पय प्रस्तार के अनुसार कवि ने रचे हैं।

वर्ण-प्रस्तार तथा मात्रा-प्रस्तार भी सउदाहरण दिये गये हैं जिससे छन्द-शास्त्र को समझने मे बड़ी सहूलियत होती है।

लगभग ७५ प्रकार के अलकारों को कवि ने इस ग्रंथ में स्थान दिया है और उनमे से कई एक का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। उपलब्ध राजस्थानी छद-शास्त्रों में अलकारों पर इतना विस्तार से प्रकाश नही डाला गया।

कामधेनका, कपाटबध, कंवळबंध, चक्रबध, अकुशबंध, खटकमळबंध आदि चित्रकाव्यों को भी सउदाहरण प्रस्तुत किया गया है, जो कवि की विद्वता का परिचय देते हैं।

'डिंगळ नाम माळा' मे राजा, मत्री, जोधा, हाथी, घोड़ा, रथ, व्रखभ, धरती, तीर, तरवार, आकास, ब्रह्मा, विष्णु, सिव आदि के पर्यायवाची शब्दों का छन्दोबद्ध संकलन कर कवि ने उस समय की राजस्थानी भाषा के सामर्थ्य का परिचय दिया है। यह प्रकरण राजस्थानी और उससे सम्बन्धित भाषाओ के इतिहास की दृष्टि से बडा महत्वपूर्ण है।

---

[1]पृष्ठ १५१।
[2]पृष्ठ १६३।
[3]पृष्ठ ११६।

इस ग्रंथ का अंतिम प्रकरण डिंगल गीतो से सम्बन्धित है। डिंगल गीतों की रचना राजस्थानी काव्य की अपनी विशेषता है। यहाँ कवि ने लगभग ४० गीतों के लक्षण और उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। अन्य छंद-शास्त्रों से मिलान करने पर पता लगता है कि इसके अधिकाश गीतो के नाम उनमें आये हुए गीतों से भी मिलते हैं पर उनके लक्षणो में थोडी बहुत भिन्नता है। कई गीत तो इसमे ऐसे भी हैं जो परवर्ती ग्रथों मे नही मिलते। गीतों के उदाहरण के रूप में प्राचीन एव समकालीन कवियो के विभिन्न विषयों पर रचे हुए सुन्दर गीतों को प्रस्तुत कर ग्रथकर्ता ने राजस्थानी साहित्य की अलभ्य सामग्री प्रस्तुत की है जो उसके इतिहास की दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

कुछ गीतों को छोड़ कर ग्रंथ का वर्ण्य-विषय 'राम की कथा है। वर्ण्य-विषय की इस परम्परा का निर्वाह--रघुनाथरूपक, रघुवरजसप्रकास, गुण-पिंगळ-प्रकास, हरिपिंगळ आदि ग्रथो मे भी कवियों से किसी ने किसी रूप मे किया है। इस प्रकार छद-शास्त्रो के रूप मे राजस्थानी में राम की महिमा का विभिन्न छदों और शैलियो में अच्छा वर्णन हो गया है और कवियों ने अपने शास्त्रीय ज्ञान को यहां के लोगों के लिये इस रूप मे सुलभ कर दिया है।

स्थान-स्थान पर छन्दों के लक्षणों सम्बन्धी भेदोपभेदों तथा विवादास्पद तथ्यो पर प्रकाश डालने के लिये वार्ता का प्रयोग किया गया है। वार्ता के ये अश पूरे ग्रथ में रोचकता के साथ-साथ एक प्रकार की कसावट ले आये हैं। इन गद्याशो में प्रयुक्त भाषा राजस्थानी के परिष्कृत गद्य का सुन्दर उदाहरण है।

इसमे काव्य-रचना छदों के लक्षण व उदाहरण स्पष्ट करने के लिए की गई है पर कई छन्दों के स्थल काव्य-कला की दृष्टि से भी सुन्दर बन पड़े हैं। कुछ छप्पय तथा गीतो मे चित्रोपमता, ध्वन्यात्मकता और भावाभिव्यक्ति का अच्छा सामजस्य देखने को मिलता है। युद्ध-वर्णन में वीर, रौद्र और भयानक रस का भी वर्णन बडी दक्षता के साथ किया गया है जिससे प्रतीत होता है कि कवि केवल छद-शास्त्र का ही विद्वान नही अपितु कवि-हृदय रखने वाला भी है।

यह ग्रथ छद-शास्त्रियों के लिए जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही भाषा-शास्त्रियों के लिये भी उपयोगी है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है इसकी रचना १७वी शताब्दी के प्रारभ मे हुई है। इस समय तक राजस्थानी पुरानी पश्चिमी राजस्थानी की कई एक विशेषताओ को त्याग कर नया मोड ले चुकी थी।

उस समय की भाषा का स्वरूप इस ग्रंथ में सुरक्षित है। इसमें प्रयुक्त भाषा अत्यंत परिष्कृत और साहित्यिक स्तर की है। इसमें ठेट राजस्थानी के शब्दों का प्रयोग बड़ी निपुणता से किया गया है। भाषा में प्रवाह, ध्वन्यात्मकता तथा चित्र प्रस्तुत करने की क्षमता है। भाषा और काव्य रूढ़ियों के अध्ययन की दृष्टि से यह ग्रंथ अपने समय का अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। अतः सभी दृष्टियों से इस ग्रंथ का ऐतिहासिक महत्व है।

इस ग्रंथ के रचयिता कुवर हरराज के सम्बन्ध में इतिहास मे बहुत कम सामग्री मिलती है। मुहणोत नैणसी की ख्यात तथा कर्नल टॉड के राजस्थान में इन पर कोई प्रकाश नही डाला गया। अन्य इतिहासों से भी केवल इतना ही मालूम होता है कि वे सं० १६१८ में राज्य गद्दी पर बैठे और सं० १६३४ में उनका देहान्त हो गया।[1] वे विद्याप्रेमी और कुशल शासक थे। कवि कुशललाभ उनके राज्य में रहते थे और उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का निर्माण हरराज की आज्ञा से किया। ख्यातो से यह भी पता लगता है कि उनकी लड़की बीकानेर के प्रसिद्ध कवि राठौड़ पृथ्वीराज को ब्याही थी।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इस ग्रंथ में कई स्थलों पर कुशललाभ का नाम भी आया है और ग्रंथ के अंतिम छद में 'कुशललाभ कवि वरणव्यौ' भी लिखा है, पर इससे यह भ्रम नही होना चाहिए कि कही कुशललाभ ही तो इसका रचयिता नही है, क्योकि कुशललाभ ने वार्ता आदि के रूप में कुँवर हरराज के पूछे गये प्रश्नो का उत्तर दिया है तथा कई विवादास्पद बातें विस्तार के साथ भी समझाई हैं, अतः इसी कारण पुष्पिका में उनका भी नाम लिया गया है अन्यथा प्रत्येक प्रकरण के अत मे तथा अन्य कितने ही स्थलों पर रचयिता के रूप मे कुवर हरराज का ही नाम है। मूल प्रति में ग्रंथ के अंत में भी 'हरराज विरचित' ही लिखा हुआ है। वैसे ग्रथ की पुष्पिका में जहां कुशललाभ का नाम है वह भी अस्पष्ट और अशुद्ध है क्योकि इसमें ग्रंथ का रचना-काल भी ठीक नही दिया गया है। पुष्पिका के अनुसार ग्रथ की रचना का समय १५७५ (पाडव मुनि सर मेदनी) दिया गया है जबकि पुस्तक में स्थान-स्थान पर लिखा मिलता है कि 'कुवर' हरराज ने इस ग्रथ का निर्माण किया।

---

[1] राजपूताने का इतिहास, पृ. ६७१ —जगदीशसिंह गहलोत। व जैसलमेर का इतिहास, पृ. ८६— पंडित हरिदत्त गोविंद।

इस ग्रंथ का अंतिम प्रकरण डिंगल गीतों से सम्बन्धित है। डिंगल गीतों की रचना राजस्थानी काव्य की अपनी विशेषता है। यहाँ कवि ने लगभग ४० गीतों के लक्षण और उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। अन्य छंद-शास्त्रों से मिलान करने पर पता लगता है कि इसके अधिकांश गीतों के नाम उनमें आये हुए गीतों से भी मिलते हैं पर उनके लक्षणों में थोड़ी बहुत भिन्नता है। कई गीत तो इसमें ऐसे भी हैं जो परवर्ती ग्रंथों मे नही मिलते। गीतों के उदाहरण के रूप में प्राचीन एव समकालीन कवियों के विभिन्न विषयों पर रचे हुए सुन्दर गीतों को प्रस्तुत कर ग्रथकर्ता ने राजस्थानी साहित्य की अलभ्य सामग्री प्रस्तुत की है जो उसके इतिहास की दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

कुछ गीतों को छोड़ कर ग्रंथ का वर्ण्य-विषय राम की कथा है। वर्ण्य-विषय की इस परम्परा का निर्वाह--रघुनाथरूपक, रघुवरजसप्रकास, गुण-पिंगळ-प्रकास, हरिपिंगळ आदि ग्रंथों में भी कवियों से किसी ने किसी रूप में किया है। इस प्रकार छंद-शास्त्रों के रूप मे राजस्थानी में राम की महिमा का विभिन्न छंदों और शैलियों मे अच्छा वर्णन हो गया है और कवियों ने अपने शास्त्रीय ज्ञान को यहां के लोगों के लिये इस रूप में सुलभ कर दिया है।

स्थान-स्थान पर छन्दो के लक्षणो सम्बन्धी भेदोपभेदो तथा विवादास्पद तथ्यों पर प्रकाश डालने के लिये वार्ता का प्रयोग किया गया है। वार्ता के ये अश पूरे ग्रथ में रोचकता के साथ-साथ एक प्रकार की कसावट ले आये हैं। इन गद्यांशो में प्रयुक्त भाषा राजस्थानी के परिष्कृत गद्य का सुन्दर उदाहरण है।

इसमे काव्य-रचना छंदों के लक्षण व उदाहरण स्पष्ट करने के लिए की गई है पर कई छन्दो के स्थल काव्य-कला की दृष्टि से भी सुन्दर बन पड़े हैं। कुछ छप्पय तथा गीतों में चित्रोपमता, ध्वन्यात्मकता और भावाभिव्यक्ति का अच्छा सामंजस्य देखने को मिलता है। युद्ध-वर्णन में वीर, रौद्र और भयानक रस का भी वर्णन बड़ी दक्षता के साथ किया गया है जिससे प्रतीत होता है कि कवि केवल छंद-शास्त्र का ही विद्वान नहीं अपितु कवि-हृदय रखने वाला भी है।

यह ग्रंथ छंद-शास्त्रियों के लिए जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही भाषा-शास्त्रियों के लिये भी उपयोगी है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है इसकी रचना १७वीं शताब्दी के प्रारंभ मे हुई है। इस समय तक राजस्थानी पुरानी पश्चिमी राजस्थानी की कई एक विशेषताओं को त्याग कर नया मोड़ ले चुकी थी।

'गीत प्रकरण' में ग्रंथकर्ता ने अन्य गीतकारों की रचनाओं को उदाहरण के रूप मे उद्धृत किया है। उनमें कई गीतों पर कवियों के नाम नहीं हैं। वे गीत या तो अज्ञात कवियों द्वारा रचे गये या फिर स्वयं ग्रंथकर्ता की रचना हैं। कुछ गीत ऐसे भी हैं जिनकी प्राचीनता मे सदेह है। संभव है किसी प्रतिलिपिकर्ता ने अपनी ओर से भी दो-चार गीत उदाहरण के तौर पर जोड़ दिये हो। अन्य किसी प्रति के अभाव मे निश्चयपूर्वक उसके सम्बन्ध मे कुछ भी कहना बहुत कठिन है।[1]

ग्रंथ को यथासभव शुद्ध रूप मे प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है पर यह विषय ही ऐसा है कि सावधानी बरतने के बावजूद भी यदि इसमे कहीं त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

इस ग्रथ की मूल प्रति से प्रतिलिपि करवाने की स्वीकृति देकर श्री अगरचन्दजी नाहटा ने इस दुर्लभ ग्रंथ को प्रकाश मे लाने में सहयोग दिया है। तथा श्री सीतारामजी लाळस से मुझे इसके सम्पादन मे सहायता मिली है जिसके लिए इन दोनो विद्वानों का मैं आभारी हूँ।

—*नारायणसिंह भाटी*

---

[1]पृष्ठ १६७ पर महाराजा श्री गजसिंहजी का 'गौख गीत' दिया गया है। गीत की सातवी पंक्ति में 'जोध रौ' (जोधा का वंशज) लिखा है। अतः यह गीत जोधपुर के गजसिंह पर ही लिखा गया है, जिससे प्रक्षिप्त मालूम पड़ता है।

इतिहासकार उनका जन्म सं० १५६८ और उनके गद्दी पर बैठने का समय सं० १६१८ निश्चित करते हैं, अतः १६१८ से कुछ पहले ही इस ग्रंथ की रचना हो जानी चाहिए। इसलिए ग्रथ की पुष्पिका मे यह अस्पष्टता लिपिकार की त्रुटि के कारण ही हुई प्रतीत होती है। हरराज का अन्य कोई काव्य-ग्रंथ हमें उपलब्ध नही हुआ, पर उनके फुटकर गीत अवश्य मिलते हैं जो उनके कवि होने को प्रमाणित करते हैं।[1]

इस ग्रथ की मूल हस्तलिखित प्रति कई वर्षों से श्री अगरचन्दजी नाहटा (बीकानेर) के संग्रह में थी। तीन-चार वर्ष पहले इसकी प्रतिलिपि करवा कर मैंने इसका अध्ययन किया। ग्रंथ बहुत महत्वपूर्ण था पर सम्पादन करने के पहले इसी ग्रथ की अन्य प्रतियों से मैं इसका मिलान करना चाहता था क्योंकि छंदों के उदाहरणो मे स्थान-स्थान पर मात्राओं आदि की त्रुटियाँ अधिक थी, पर बहुत प्रयत्न करने पर भी इसकी कोई अन्य प्रति नही मिल सकी इसलिए एक ही प्रति के आधार पर सम्पादन करना पड़ा। जहा तक संभव हो सका लक्षणो के अनुसार छंदों को मात्राओं तथा गणों आदि की दृष्टि से शुद्ध रूप मे प्रकाशित करने का ही प्रयत्न किया गया है। जहां ऐसा संभव नही हो सका या अधिक अस्पष्टता रह गई वहां पाद टिप्पणी मे पाठकों की सुविधा के लिए ऐसा सकेत यथासभव कर दिया गया है। पिंगळ सूत्र, छंद प्रभाकर, रघुवरजस-प्रकास तथा रघुनाथरूपक आदि छंद ग्रथो से मिलान कर के कई छंदो के नाम तथा लक्षणो के सम्बन्ध में टिप्पणिया भी दे दी हैं, क्योकिभिन्न-भिन्न छद-शास्त्रो मे नाम तथा लक्षणों की भिन्नता भी मिलती है।

---

[1]जावें गढ राज भल भल जावें, राज गयां नहिं सोक रती,
गजब ढहै कविराज गयां सूं, पलटै मत वण छत्रपती ॥ १
हालरण सुभग सुभाग हलाणा, रहणी कहणी एक रहै,
तारण तरण छत्रिया ताकव, कुळ चारण हरराज कहै ॥ २
घू धारण केनट छत्रो ध्रम, कळयण छत्रवट भाळ कमी,
अछ छत्रवाट प्राजळण वेळा, इहग सींचणहार अमी ॥ ३
वायक अगम निगम रो वेता, हद विसवासी अकथ हदे,
उपजेला दुर्भाव इणा सूं, जाणी निकट विणास जदे ॥ ४
आद छत्रिया रतन अमोलो, कुळ चारण अपणास कियो,
चोळो दामण समध चारणा, जिणवळ हल अल रूप जियो ॥ ५

श्री गणेशायनमः

अथ पिंगल सिरोमणि मारवाड़ी भाषा लिख्यते

दोहा– गणपति सरसति देह गुण, संकर सदा सहाइ।
विनती करि नित वीनऊं, मिहर विष्णु महा माइ ॥ १
भरह[1] आदि पिंगळ भणे, सेस अंत ते सब्भ।
तिण रूपी दधि मथ तूव, गुण आंणू इण गब्भ ॥ २

अथ लघु गुरु कथनम्

सोरठा– अ इ उ ल अ न सहऊ ल, कवि लघु गुरु अखर कहै।
म य र स त ज भ न मू अहि आठों इम गण अखै ॥ ३

अथ गण[2] लघु गुरु स्वामी कथन

मगण तीन गुरु मांन, अवनी पति संपति अखै।
यगण आदि लघु जाणि, स्वामी जळ सुख दे सरस ॥ ४
रगण मध्य लघु रेख, अगनी पति अंग दहि अधिक।
सगण अंत गुरु सेप, काळ उदासी नित करे ॥ ५

[1] भरत मुनि से तात्पर्य है

[2]

गण नाम	रूप	देवता	फल
मगण	ऽ ऽ ऽ	अवनी	सम्पति
यगण	। ऽ ऽ	जल	सुख
रगण	ऽ । ऽ	अग्नि	अंग-दाह
सगण	। । ऽ	(पवन)	उदासीनता
तगण	ऽ ऽ ।	आकास	अफल
जगण	। ऽ ।	सूरज	दुख
भगण	ऽ । ।	चद	मंगल
नगण	। । ।	स्वर्ग	बुद्धी

तगण अंत लघु तेम, अफळो फळ आकास-पति ।
जगण मध्य गुरु जेम,. सूरज पति दुख द्यै सरस ।। ६
भगण आदि गुरु भेळ, चद पती मगळ चवै ।
मतिवर त्रि लघु मेळ, नगण स्वर्ग पति बुधि सरस ।। ७

अथ द्विगण विचार—सेस मत

दोहा– प्रथम अगण[1] रूपक पड़ै, दूजौ गण शुभ देस ।
इण मति आचारज अधिक, शुभ कथियौ कवि सेप ।। ८
मास टक अखि विल्व मान, कोड प्रस्थ आढका प्रमान ।
तोल होइ जिण छद तत, मगगाण धुरा गिण बुधिमत ।। ९

सोरठा– तोल छद तहतीक, सेस उकति कवि वच सरस ।
ठवि इण जाण्या ठीक, काळिदास शुक मुनि कहै ।। १०

इति छंदादि सर्व तोल प्रमाण

★

अथ एक आदि गिणती कथनं पिंगळ वाणी भूषणात

आतम चन्द्र-सूर इक आंणो, भार्गव दृग गण रदन वखांणो ।[2]
सरिता तट दूव रांम के सुता, [illegible]ग गुंह अरस निपुता ।।
लोचन विप्र जनम पद लेखो, [illegible] की अयन विसेखो ।
लेखव इक सर्प जीह गज रद, [illegible] कूरम दूव वद ।।[3]
गंगा [illegible] गुगेस नयण गिण [illegible] पावक गुण ।
सूल[illegible] [illegible]ह कर संध्या, [illegible] [illegible]धि
वेद[illegible] [illegible]र विभ्रम, का[illegible]
वि[illegible] वार[illegible]

पांडव इंद्री कमळ पंच वपु, जग्यमात पित तर कन्या जप ।
पंच शव्दगव्य पंचामृत, पातक संघीवांन पंच गति ॥[1]
विधि इण गिणती सेस वखांणी, जे कवि पिंगळवेता जांणी ।

सोरठा– वर्ण छंद वहु वांणि, सेस उकति वर्णो सरस ।
विवधै वरण वखाणि, पद करो गद सौं प्रगट ॥ १
विपम दंडक सम वृत्त, अर्द्ध विपम सम वृत्त अधिक ।
चतुर धरौ नित चित्त, सिरहर पिंगळ सिरोमणि ॥ २

अथ गणवर्ण कथनं

चारि वर्ण गण सेस चवि, भापा कथियौ भेव ।
वंश्य इक दुव शूद्र वदि, दाखूं ब्रह्म रु देव ॥ १
कूतु देव अपूउ रज, ब्राह्मण चूयू वखांण ।
शूद्र वरगे पति सूदर, जोय नागमत जाण ॥ २
जौ विपरीता होइ जिण, रूपक रावळ राण ।
पशु वधू वपु पूत पति, हरै लच्छ घर हांण ॥ ३

अथ छंद[2]

सग्या । १. उकता, २. अति उकता; ३ मध्या; ४. प्रतिसंटा; ५. पूरवका, ६. गायत्री, ७ उसिनग, ८ अनुष्टुपू; ६. वृहती १०. पकतो, ११ त्रिष्टुपू, १२. जगती; १३. अति जगती; १४. सरकरी; १५ अति-पूरवा, १६. असटी; १७. अति असटी; १८. धृति; १६ अतिधृति; २० कृति, २१. प्रकृति, २२ आकृति; २३. विकृति; २४. सकृति, २५ अनि-कृति, २६ उतकृति ।

इति श्री ५ पिंगळ

*

---

[1] पाच की सख्या के सूचक शब्द ।

[2] उक्त छंदों के शुद्ध संस्कृत रूप—१ उक्था. २ अत्युक्था, ३ मध्या, ४ प्रतिष्ठा, ५ (अशुद्ध) ६ गायत्री, ७ उष्णिक, ८ अनुष्टुप, ६ वृहति, १० पंक्ति, ११ त्रिष्टुप, १२ जगती १३ अति जगती, १४ शक्वरी, १५ अति शक्वरी, १६ अष्ठि, १७ अत्यष्ठि, १८ धृति, १६ अति धृति २० कृति, २१ प्रकृति, २२ आकृति, २३ विकृति, २४ संस्कृति, २५ अतिकृति, २६ उत्कृति ।

सिरोमणे वर्णावर्ण छद संज्ञा कथनं प्रथम प्रकाश

श्री ह्रो उकता । गो गांत्युक्ता: ।। २

मोना रीरो । जथा, रामो-रामो । कृप्नो-कृप्नो: । माधो-माधो । विप्नो-विप्नो । अथ मध्या: । केशव कामो । जापर रामो । देव यदामो । रामय रामो । इतिसु प्रतिष्ठा । नल हु निहंता । ससिमुख सता ।। ५ जथा ।

सिव-सिव संता । खलि-मलि खंता । जप कहि जंता । तरि भव तंता ।। ५

इति ससमुखी

*

जोडं तस जर । धारामत धर ।। जथा—
मग्भा सिरहर । धारा मत धर ।। हेरौ हरि हर ।
सेवो वर सर । पावौ पद पर ।।

इति धारामती

*

गायत्री छंद[1]

अथ चूडामणि– छंदात सिसेपणं, वेणी मति भूपण ।।
जथा– अबा कहि ईसरी, वाणी वरदीस री ।
सेवौ नित सुंदरी, नांही नर किंनरी ।।
अथ चूडा– त ग्ग ण भ ग्गा णीयं, चूडामणी चवयं ।।
यथा– भूमी पती भवए, धम्माधुर धवए ।
दोपो सिरदवए, रावां हर रवए ।।

इति चूडामणि

*

मागाणे स ग णीय, अतेदी हुवणीयं ।।
जथा– गोविंदा गुण गेय, शासो सास सवेयं ।।

इति वर्णा छद

*

[1] गायत्री छद एक वैदिक छंद है जिसके कई भेद होते हैं। संभवतया उसी के एक भेद चूडामणि का उदाहरण यहाँ दिया गया है।

अथ मधुमती[1] छंद कथनं

जंपि मधुमतियो, नगणनगण गो।
जथा– गणपति गुण गो, शिवसुत कहिग्रो।
जय सिधि दत जो, तर भव दधितो।।

इति मधुमती छंद

★

अथ कुमारी छद[2]

ज गे ण सगणोयं, कुमारीय कहीयं।
भागीरथी भणीयं, निम्मल वरणीयं।।

इति कुमारी छंद

★

अथ हसमाला[3]

सर गो हसमाला।
जथा– तप को तापसी को, जप को जापसी को।
व्रत को वारती को, सिव संभू विनासो।।

इति हसमाल

★

अथ भाणय छद

दाख चि लेखण डका, भाणय गो दूव वंका।
जथा– वंस खती सूव वन्ना, तेणम व्रह्म ग्रतन्ना।
रावळ रांण रतन्ना, पूजय पाव जतन्ना।।

इति भाणय छंद

★

---

[1] मधुमती मे प्रथम दो नगण फिर एक गुरु होता है। ऐसे चार चरणों से पूरा छंद बनता है।

[2] कुमारी छद के प्रत्येक चरण में नगण, जगण, भगण और जगण तथा अंत मे दो गुरु होते हैं पर उक्त उदाहरण में यह लक्षण ठीक नहीं बैठता।

[3] हसमाला छद के प्रत्येक चरण में प्रथम सगण फिर रगण और अंत मे गुरु होता है।

अथ बीजूमाला छंद[1]

अट्ठों वन्ना दीघ्घा असै, बिजूमाला सेषा भखै ।
जथा– देखो संभू गौरी देवो, सिद्धा-निद्धां अप्पै सेवो ।
हाथे डेरू चम्मां हाथी, सेसो कंठे भूनां साथी ।।

इति बिजूमाला छंद

*

अथ अर्द्ध नाराच[2] भरह पिंगळ मतात्

लघु गुरू लहै, नराच अद्ध नाम है ।
जथा– गिरीस देव गाइयै, परम्म मोख पाइयै ।
पूरन राचां पेखि, षोडस अख्यर सांति सौं ।।
सति अरयै इम सेप, कुवरा गुर हरराज कवि ।।

इति अनुष्टुपु

*

अथ हळमुखी[3] छंद

रागणा नगण सगणो, भा गण ए हळमुख भणो ।
यथा– ईसरी गिरंज असीयं, सब्ब मंगळ सुख दीयं ।।

इति हळमुखी छंद

*

अथ ससिभुजा[4] छंद

नगण-नगण मागाण, पठि ससि भुज पंचांण ।
यथा– शिव-शिव सेवाण, नंद निधु जय नेकाणं ।।

इति ससिभुजा छंद

*

---

[1]यह विद्युमाला का अपभ्रंश रूप है। इसमें प्रथम दो मगण फिर दो गुरु या आठ ही वर्ण गुरु होते हैं।

[2]नाराच छंद में १६ वर्ण होते हैं। अर्द्धनाराच में आठ वर्ण होते हैं प्रथम ह्रस्व फिर गुरु के क्रम से।

[3]हळमुखी में क्रम से रगण, नगण, सगण प्रत्येक चरण में होते हैं।

[4]ससिभुजा का लक्षण कवि ने प्रथम दो नगण फिर एक मगण के रूप में दिया है। पर उदाहरण के तृतीय चरण में यह क्रम नहीं निभाया गया।

अथ वृहती[1] छंद

भागण लोचन भागणीयं, नागण ईस गुरु अणीयं ।
रावळरांण नृपां वरीयं, कुंभवती कथियं कवीयं ।।

इति कुम्भवती छंद

★

इण छंद रो उदाहरण मांहे जांणणो--

अथ पांणू छंद

तीने हार[2] सुचि लहू तते, आंणो हार इक जिणा अते ।
पांणू छंद इण विधा पढो, रांवां-राव हरि-हरा रटो ।।

इति पाणू छंद

★

अथ अमृतगति[3] छंद

विधि मुख मेर कमळ गो, कमळ दुवे गुरू कथियो ।
अमृतगती फणि कथियं, अरध जती कवि विदियं ।।
जथा- गिरिज सुता हरि चढीयं, मम दीयय मुकतीययं ।

इति अमृतगति

★

अथ सुध विराटी छंद

गगा मग्ग गुरु सजोगण, सूंडाळो दुख भंजणोसयं ।
लोका वेदा कह्यो सुखालय ।।

इति सुध विराटी छंद

★

---

[1] कवि के अनुसार प्रत्येक चरण में तीन भगण अंतिम गुरु वर्ण युक्त १० वर्ण का वर्णिक छंद। वैसे छंद शास्त्र में वृहती छंद ९ वर्ण का माना गया है।

[2] हार से तात्पर्य एक दीर्घ (गुरु) का है।

[3] छंद शास्त्र के अनुसार अमृतगति में पहले नगण फिर जगण फिर नगण और अंत में गुरु होता है। इन लक्षणों से उदाहरण में दिया गया छंद भी ठीक उतरता है पर यहां कवि ने जो छंद के लक्षण बताये हैं वे अस्पष्ट हैं।

अथ मयूरणी[1] छद

रोज रो गुरू मयूरणीय ।
यथा– सूर देव-देव सारणीयं ।

इति छद मयूरणी

★

अथ रुकममती[2] छद

आतम भोमो सोग कहीयं, एण विधि यो रुकममतीयं ।

इति रुकममती छद

★

अथ हंसी[3] छंद

मागाण भागण भागण नगण गो, सेसो हसी चवय समसो ।
यथा– काळी अर्द्धंग डवरू करै, धतूरो भोजन अहि धरै ।

इति हंसी[4] छंद

★

अथ मत्ता छद

सेना अंगा गुरू लघु सम्मा, जोडो मत्ता मँदु ज अम्मां ।
यथा– एही संभू प्रिय हर अख्यौ, देवी देवां वर-वर दख्यौ ।

इति मत्ता छद

★

अथ मनोरमा[5] छद

नर जगो हुवै मनोरमा ।
यथा– सिव-सिवा कहै सिवोसमा ।

इति मनोरमा

★

---

[1]इस छंद में प्रथम—रो ज रो (रगण+जगण+रगण+गुरु) होता है।
[2]इस छद का लक्षण—भगण+मगण+सगण+एक गुरु ।
[3]हंसी को लक्षण—मगण+भगण+नगण+एक गुरु होता है पर यहां दो भगण रखे गये हैं ।
[4]मत्ता छंद का लक्षण—मगण+भगण+सगण+एक गुरु।
[5]मनोरमा का लक्षण— नगण+रगण+जगण+एक गुरु ।

अथ चंपकमाळा[1]

चो भ म सा गो चंपकमाळा, कालीय मेटी काळ कराळा ।

इति चंपकमाळा छंद, इति पंक्ति:

*

अथ इन्द्रवज्रा[2] छंद

अख्येरिजू ख...दीयो ज अंते ।
इन्द्रेयवज्राय गुरू दुयते ॥

*

अथ उपेन्द्रवज्रा[3]

मध्ये गुरू अंत लहा रमीयं ।
उपेन्द्रवज्रा कथीय कवीयं ॥

यथा– देवल भट्टकृत, पिंगळ मतात ।
माहेसुरी देव वरी हरीति ।
नैगम्म आगम्म वदै नरीति ॥

इति उपेन्द्रवज्रा

*

अथ छंद च्यार[4], तिण रा वरणां रा उदाहरण माहे छै

न ज ज लगौं सुमुखी निहुतो । दोधक वृत्त कही भभ भोगो ॥
ऊ ग ण दुवर लोग भईगो । मोतीयमाळा कहि मत नोगो ॥

इति १ सुमुखी, २ दोधक, ३ मोतीयमाळा, ४ भद्रका छंद

*

---

[1] चंपकमाला का लक्षण— भगण+मगण+सगण+एक गुरु ।

[2] इन्द्रवज्रा का लक्षण—तगण+तगण+जगण+दो गुरु ।

[3] उपेन्द्रवज्रा का लक्षण—जगण+तगण+जगण+दो गुरु ।

[4] यहां क्रमशः सुमुखी, दोधक, मोतीयमाला भद्रक के लक्षण एवं उदाहरण एक साथ प्रत्येक चरण में दिये गये हैं ।

अथ तोटक[1] छंद

दूह तोटक मबुध सोगणीयं । किर सेस पति कवीयं कथीयं ।।
यथा– रत्न सूर कृतात । सगण दूह तोटक छंद धूयं ।।
गुरु सोळस तीस दुयं लहुयं । चौसठ चियत विसंठीयं ।।
अठताळीस अस्यर वध्यवीयं ।।

इति तोटक छद

★

अथ द्रुतविलबित छद

न ग ण चंद धरी गहि नेम सौं । अस निपूत भकारय देह त्यौं ।।
द्रुतविलबित छंद उदीरित । नित फणीद वरेण निगीरितं ।।
यथा– छदम हूं तदणू जनका छळी । विजय ते जन के समहा बळी ।।

इति द्रुतविलंबित छंद

★

अथ मोतीदाम छंद

अखौ जगण दूम सेनय अग । भणै छंद मोतीयदाम भुयंग ।।
यथा– तिसा बळ जोद्ध जिसा हणमत । दये रिण मांहि मुदा गय दत ।।
सदासिव पंयसहाइक सत । तवै नंहि भूठ कहैं सततंत ।।

इति मोतीदाम छंद

★

अथ छंद भुजंगप्रयात

प्रतापं यकारं भुजंगप्रयातं ।
जठं सेस खीरोदधी मध्य जातं ।।

यथा– संपूर पूर जस सप्रकास । हिमं चद आनंद संजुत हासं ।।
सदा कूळ पादोजळं सीस ससक्त । भवेस रमेसं रहो तूझ भक्त ।।

इति भुजगप्रयात

★

---

[1] तोटक के प्रत्येक चरण मे ४ सगण होते हैं पर यहाँ दिये गये उदाहरण में यह लक्षण ठीक नही बैठता ।

अथ कांमणीमोहणो[1]

वेद रगांण रो छंद सेसो वदै ।
जीव तूं कांमणी मोहणो जो जदै ॥
सेवरे सांमनु सुद्धचितां सदै ।
तंत पावै तिको रांम गावै तदै ॥

इति कांमणीमोहणो छंद

*

अथ मंजवती[2] छंद

मारवाड़ माहे श्रागवीग कहै छै ।

वद हार ग्रत मधिहार वरणीयै ।
सिव मेर दोइ जिह मंजु सरणीयै ॥
यथा– मिवसंभु सभु कहि संभु सेवीयै ।
जीय दभु दंभु मि············जेवीयें ॥

*

अथ चंद्रकळा[3] छंद

करण करतगो, चद्रका छंद गो ॥ ७
यथा– सरण करत तो, रांम साजु ज्यसो ॥

इति प्रति जगती

*

अथ अपराजिक[4] छंद

करण रवि रसो कहौ अपराजिको ॥
यथा– सरण मन महौ धरौ सम साजिसो ॥

इति अपराजिक

*

---

[1] कामणीमोहणो के अनेक नाम हैं—लक्ष्मीधर, शृंगारणी, लक्ष्मीधरा । इसका लक्षण—४ रगण ।

[2] लक्षण स्पष्ट नहीं हैं ।

[3] लक्षण और उदाहरण में साम्य नहीं है ।

[4] संस्कृत का अपराजिता छंद जो वैतालो छंदों के अंतर्गत एक छंद है ।

अथ हेमत छंद

अंतेय दी⋯⋯दिय आदि दुवेजकारं ।
हेमंत सेस कथीयौ कवि कंठहारं ॥

इति हेमंत छद

*

अथ भणय छद

ते जोर जेर गण ए भणए फणंदो ।

इति भणय छंद

*

अथ अपराजित[1] छंद

नयन रस लगोऽपराजित नाम सो ॥
यथा-- जनकपति भजो, सदा दुर तें तजो ।
सब जंतु महि पे,मसौं अचुता सजो ॥

इति अपराजित छंद

*

अथ प्रहरणी छद

दुवन भन लगो, प्रहरण पद को ॥
यथा– दस सिर मरतो, वचन कहत सो ।
गुरु सिख न मनैं, अध गत पत जो ॥

इति प्रहरणी छंद

*

अथ इदुवदना[2] छद

भोज सन इदुवदना दु गुर भाखैं ।
लेख गण जेण हरि नाम अभिलाखैं ॥

इति इदुवदना छद

*

---

[1]अपराजिता का लक्षय—दो नगण+रगण+सगण+लघु गुरु । प्रत्येक सात अक्षरो पर यति ।

[2]इदुवदना का लक्षण—भगण+जगण+सगण+नगण+दो गुरु ।

अथ मालणी[1] छंद

नयण रवि मजेय ।
मालणी छंदणेयं ।।
यथा– भणय अहिणकेयं । बुद्धिवतो समेयं ।।

इति मालणी

*

अथ पंचचामर[2] छंद

गोळ-गोळ एक-एक वन्न-वन्न गाइयै ।
पंचचामरं सु छंद मारवाड पाइयै ।।
यथा– आदि देव सदा सेव हाथे रिद्धि आईयै ।
पूजीया सिंदूर पूर सिद्धि निद्धि पाईयै ।।

इति पंचचामर, इति सरकरी

*

अथ निकर छंद

दिगपति रवि हय । वरण चरण दय ।।
निकर विरत पय । अवनि पतय नय ।।
यथा– जप-जप जगत भगत कर हरिजन ।
तजि-तजि दुखहि-सुखहि कर सव तन ।।

इति निकर

*

अथ वृद्धिनराइ[3]

लघू गुरू लघू गुरू सु एक-एक लै धरौ ।
कहै जु सेस देव ए नराय छंद यों करौ ।।

---

[1] छंद शुद्ध मालूम होता है पर लक्षण स्पष्टतया नहीं बताये गये हैं। कवि ने इस छंद को भी शक्करी छंद के अंतर्गत माना है।

[2] संस्कृत छंद-शास्त्र के अनुसार इसका लक्षण—जगण+रगण+जगण+रगण+जगण+गुरु होता है पर यहां उदाहरण भिन्न तरह का है।

[3] संस्कृत का नराच छंद।

यथा– भजौ जजौ तजौ कुबुद्धि देव सेव भैरवौ ।
फुलेल तेल रंग मेल फूल फाल फैरवौ ।।
जपौ अनद सुख्ख कंद, दुर्ग वद जांणियै ।
वदै सुवेद भेद ए चम्मंड सू वखाणियै ।।

इति वृद्धि छंद

★

अथ मंदाक्रांता[1] (अष्टी) छद

मंदाक्रांता विरत कथयं ।
मो भनो तात मेखं ।।

यथा– आखा मुनी कर भर दये । साधु अप्यां विधाता ।।
पुट्टां थापे जय कहि मुखे । चारणी संत पाता ।।
देवी देवां कर नलवरी, दैण सिद्धीय दाता ।
मीरां भांजे जय करफ मैं, सेवीयां आदि माता ।।

इति मद्राक्राता छद इति अष्टी

★

अथ मेघविष्फूरणी[2] छद

नवो आदे देवी जुत रर ।
गुरू मेघ विष्फूरणीयं ।।

यथा– अहो सव्वे देवां वर हर सही ।
राम नामो अमीयं, सिव सिद्धां अप्पै अप वर गजो ।
इंद्रीय सो समीय, दिवं रातां देवं अह निसि जपौ ।
कायवाचा दमीयं, अजा में लाकन्हांतर भव दधी मोख मागणीयं ।।

इति मेघविष्फूरणी नाम छद

★

अथ सादूळविक्रीड़त[3] छद

जंवैंन्निण्ह गुरूवण सह गुरू सादूळ भूजंगम ।

---

[1]मंद्राक्राता का लक्षण—मगण+भगण+नगण+तगण+तगण अंत मे दो गुरु ।

[2]संस्कृत में मेघविस्फूर्जिता नाम ।

[3]संस्कृत का शार्दूलविक्रीडित छंद ।

यथा– देवां जो सगळां हुयो सुरपती ।
तेजो महा दांमणी ॥
सोमां सूरज जोति मांहि कवीयं ।
वाचा वरी सांमणी ॥
.........कूरम मभि रांम फरसां । कांमायण कांमणी ॥
ध्यावो ध्यांन धरो मनां थिर करो धातार करता धणी ॥

इति सार्दूलविक्रीडित छंद

*

अथ सुवदना[1] छंद

जंपो मागाण रब्भ ॥
नय मल गुरणं ॥

यथा– छंदो सुवदना, रट्टो द्वै मातरंभो ॥
सकळ सिद्धि करो, देवो एक रचना ॥

इति सुवदना छंद, इतिव्रति

*

अथ मालती छंद

मोतो भोनो य गोनोति ।
मुनि जित तिता नेहता मालतीयं ॥

यथा– रांमं रामो रमेसो रघुवर वरय । जानकी सो वरयं ॥

इति मालती छंद

*

अथ भद्रक[2] छंद

भागव भादयो जग गुरु देसे कवि रमां, विरति भदकं ॥

यथा– रांमा-रामा रटो, अघ कट पावो ध्रुव जिमां परम पदकं ॥

इति भद्रक छंद

*

---

[1] पिंगल-सूत्र में इसका लक्षण इस प्रकार है जो उपरोक्त लक्षण से मिलता है–मगण + रगण + भगण + नगण + यगण + भगण अंत में लघु दीर्घ ।

[2] पिंगल-सूत्र के अनुसार भद्रक छंद का लक्षण—भगण + रगण + नगण + रगण + गुरु होता है पर यहां लक्षण स्पष्ट नहीं है ।

अथ ललित[1] छंद

सिव सुत देवौ भेवकरत गौ सुवाक ललितं ।
सिवा सिव जु तेयं ।।

यथा– हरिहर सेवौ देव पर सोहरौ कळमखां परांभेव भजेयं ।।

इति ललित छंद

*

अथ क्रीड़ा[2] छद

क्रीडा आदौ अठौं वन्ना, मनु गण अंक विरति धर हुल हुव ।।
यथा– रांमो-रांमो कृस्नो-कृस्नो, छिनक छिन प्रति दिन-दिन मधि रटौ ।।
केसौ केसौ जीहा जंपौ, तूअ भव दधि करम कळमस कटौ ।।
फेरौ माळा ध्यानां धारौ, पवन जळद मिळि इम दुरत कटौ ।
हाथे दानां पाता देवौ, उदय रवि तिम जिम दुरत हटौ ।।

इति क्रीडा छद

*

अथ अखं छंद

आदि पछि मैं गुरु लघु त्रिलघु ।
अति द्रव दिग नय अहि सखं ।।

यथा– देस अनेका नृप बहु सरए, मडप भोजक······रचीया ।
पकत मंचां कर सुर गण ज्यो छादित नो तन सुवसन कीया ।।
सोपन हूता चढ़ि विरजत सौं सिंघ सिल मग दूम विहसीया ।
तेणय मांहे मनु विजसिंह कै भोज सुता गळ सृजनि हसीया ।।

इति अखं छद

*

---

[1]यहां ललित छद के लक्षण छद-प्रभाकर और पिंगल-सूत्र दोनो के ही अनुसार नही बैठते ।

[2]यह वर्णिक छंद है । इसमें प्रथम आठ वर्णों पर यति और फिर १४(मनु) + १ = १५ वर्ण पर यति होती है ।

अथ क्रौंचपदा[1] छंद

क्रौंचपदा कै आदि सभोग्रं, त गुर जुर कहि नगण नगण य गुरू ।

इति क्रौंचपदा

*

अथ भुजंग विजृंभित[2]

विश्रामेयं अट्ठीईसौ, ममत न जुग नर सलगौ भुजंग विजृंभितं

यथा— ईसानेयं सत्यं वोलै न न प्रिय हर रुह गिरजा कही सुभ देयियं ।
सैलां माहे पूछ्यौ देवां पहिल जुग मघव सु दिवर जा अंते विरंचीयं ।।
प्रसनां प्रांणी वैगौ हूवै सुणत सुखहि रच दुख रौ पुंज विरंचीयं ।
रामौ-रामौ जापौ जापौ दिवस मधि हरि-हरि कहौ लहौ सुवेदीयं ।।

इति भुजंगविजृंभित छंद

इति श्री पिंगळ सिरोमणे रावळ सिरोमणि हरिराज कुवर विरचितायां द्वितीय हुलास ।

*

अथ संकर[3] छंद

दूहा— महादेव कैळास महि, वैठौ डमरु वजाइ ।
तिण रवि उत्पत छंद कौ, सकर नांम कहाइ ।।
एक समय गुरु आगमन, पूछ्यौ सहित सुप्रेम ।
वांणी अदभुत वारता, कह पिंगळ मति केम ।।
सिव भैरू को अद्द करि, असी च्यार लख एह ।
छंद सुणौ सुर गुरु सकळ, जपौ रांम रम जेह ।।
सीखे सुर गुर सिव मुखा, गुरु कस्यप कहि गूढ ।
सेस नाग प्रिथ्वी सुपति, महिधरि अति मति मूढ ।।

---

[1] क्रौंचपदा का लक्षण—भगण+मगण+सगण+भगण+४ नगण+गुरु ।

[2] इस छंद का लक्षण—मगण+मगण+तगण+३ नगण+रगण+सगण+लघु गुरु ।

[3] यहां न तो संकर छंद का लक्षण दिया गया है न उदाहरण । दोहों में गरुड और शेष नाग की कथा वर्णित है ।

कस्यप तिण नै तान कहि, सुरगुर मुख सुण सोइ ।
भ्रम भाजै भूतेस भजि, कथै न दूजौ कोइ ।।
सेस गयौ कैळास सिर, वैरी गरुड विचार ।
छळ वळ अति कर छोहसों, हुवौ जुद्ध तिण वार ।।

*

कवित्त छंद[1]

तिण विरीयां खगईस मिळ्यौ, व्यालहि कैळास मधि ।
पूरब वैर विचार मार लेऊ ज रचै जुधि ।।
छदम को करि छोह बोल'''म जीय तन वडौ ।
मरौं आप अहि हूंत नही तौ मारि विहंडौ ।।
गही पूछ खग चूंच सौं अहि फण झटां मारीयौ ।
हूवौ नांहि कारज सफळ, तरै वचन एम उचारीयौ ।।

दूहा-- चूंच पगां करि चूथीयौ, अति विहवळ हो अग ।
सेस कह्यौ इम गरुड़ सौ, पिंगळ सुणौ प्रसंग ।।
हाथ जोडि अति हरख सौ, आडौ वैठौ एम ।
पिंगळ मत विण किय प्रगट, कहि जावणचां केम ।।
सोडस करम जु खाति सौं, कह्यौ सेस करि कोड ।
तिण करि हरि गुण तवौं, जुगति जीव धरि जोड ।।

*

अथ सोडस करम[2] लक्षण । कवित्त छप्पय

पहिलौ सख्या करम, दुतीय प्रस्तार भणिज्जै ।
तीजौ सूची ग्यांन, चतुरउ दिस्ट चविज्जै ।।
पचम नस्ट वखाण, मेर छठौ सुपठिज्जै ।
कर्म पताका सप्त, अस्ट मरकटी गणिज्जै ।।

---

[1]यह छप्पय कवित्त है । पाठ कहीं-कहीं अशुद्ध है ।

[2]छंदशास्त्र के अनुसार वह क्रिया जिसके अनुसार छंदशास्त्र के आठों प्रत्ययों को समझा जाता है ।

अट्ठ वरण अठ मात्रिका, इम सोडस विधि अक्खीयै।
दीनौ सुधारि हरराज कवि, उकति सेस इम दक्खीयै॥

इति सोडस वर्ण गरुड समागमन सेस मुखात प्राप्त

★

दूहा– इण विधि पिंगळ अक्खियौ, उतरै अनुक्रम अद्द।
गुरू हुवौ अहि गरड़ रौ, जीव वचायौ जद्द॥
तिण थी आचारिज तवै, संकर इक दुव सेस।
संकर मत पच्छिम सरस, दूजौ पूरव देस॥

★

अथ संकर मांहे मल्ल छंद[1]

वेद दूण वन्न पाइ गोल हु स मल्ल गाइ यथा एहवी पुरी सुआहि।
जोड देव देस जाहि सूर वस राज सोइ होड को मनुज होइ॥

इति मल्ल छंद

★

अथ प्रमांण[2] छंद

विचार अट्ठवन्न लै, लघू सदीह पाय दै॥
यथा– सुदास रथ्य राज सो, किये न देव मीढ को।
सुता मना रहै सदा, जजै श्रु (सोम) देव नै जदा॥

इति प्रमाण छंद

★

अथ सखनारी[3] छंद

गहौ दोय गन्ने, चवौ चार चन्ने।
धरौं सखनारी, नमौ सखधारी॥

---

[1] मल्ल छंद का लक्षण—प्रत्येक चरण में आठ वर्ण और अंत मे गुरु लघु।

[2] छंद प्रभाकर के अनुसार प्रमाणिका छंद। इसका लक्षण—प्रत्येक चरण में लघु दीर्घ के क्रम से आठ वर्ण। पिंगल सूत्र में इसे प्रमाणी छंद कहा गया है।

[3] संखनारी का लक्षण—प्रत्येक चरण में दो यगण। छंद प्रभाकर के अनुसार इसे सोमराजी भी कहते हैं।

यथा– समेरिक्ख सेवौ, मखे दान देवौ।

इति सखनारी

★

अथ मालती[1] छंद

जगग्न सुजोय, धरौ इम दोय। वदौ इण वंद, सु मालती छंद ।।

यथा– करे घण क्रिति, दीये बहुदति। समे रिखि भृंग, तिणे धुर भ्रंग ।।

इति मालती छंद

★

अथ तोमर[2] छंद

[मारवाड़ माहे हणूफाळ कहै छै]

सगण करौ इम सोइ, जगण करौ दूव जोइ।
इम छंद तोमर होइ, फिरि हणूफाळ समोइ ।।

यथा– इण माझ देव असेस, ब्रह्मादि इद्र विसेस।
धरि रूप गोतन धारि, कीय आंण सिंधू पुकारि ।।

इति हणूफाळ छंद

★

अथ मधुभार[3] छंद

अगण जगण, इम पाय अंत।
मधु भार मंत, सभ जाण संत ।।

यथा– भणि ब्रह्म वेद, खल पाय खेद।
कवि संभु सद्द, जगतीस जद्द ।।

---

[1]मालती छंद का लक्षण—प्रत्येक चरण में दो जगण।

[2]तोमर छंद का लक्षण—प्रत्येक चरण मे पहले एक सगण फिर दो जगण। इस प्रकार यह वर्णिक छदो के अंतर्गत आता है पर जहाँ यह मात्रिक छद माना गया है वहा प्रत्येक चरण मे १२ मात्रायें तथा अंत में गुरु लघु होता है।

[3]मधुभार छद का लक्षण—प्रत्येक चरण मे प्रथम चार मात्रायें और अंत मे जगण। उपरोक्त पंक्ति मे लक्षण पूर्ण स्पष्ट नही किया गया पर उदाहरण ठीक है।

मघवा सु मन्न, तत पाइ तन्न ।
अघ कर्म आइ । सब ही सुणाइ ॥

इति मधुभार छंद

*

अथ अनुकूला[1] छंद

भग्गण दीजै, तगण भणीजै । नागण कीजै, दु गुर गणीजै ।
ईसर बोलै, इम अनुकूला । छंद बतायौ, वचन समूळा ॥

यथा– ब्रह्म धुनां सों, प्रबुध वरीसा । पन्नग सेज्या, चरण वसीसा ।
आसण बांधै, वैठ अनंदा । भृगरिखी सा, अमतर वदा ॥

इति अनुकूला छंद

*

अथ सकर मांहे दंडकविधि[2] कथनं

प्रथम घनाख्यरी छंद

प्रथम विश्रांम जठै सोडस वरण करि, फेर करौ पचदस अक्षर वखांणीयै ।
सवळा वरण इकतीस एक तुक रच, लघु गुरु नेम नाही इण विधि आंणीयै ॥
मधुरा मिलाइ फिरि च्यारौं तुकां दृढ धरि, फेर गुरु ग्यान हूत सीखौ उर आंणीयै ।
इण छंद नांम घणाअख्यरी, अनेक विधि ग्रंथ विस्तार मय आदि रूप जांणीयै ॥

यथा– भृगु आदि रिखि नै बुलाय खीरोदधि मांझ,
बोल्या हरि वाणी जेही वेद मैं वखांणी सी ।
तुहारौ वृतांत गव पोल सत सुत भीता,
आया एथ असे कन्हा पूरव सुजाणी सी ॥
हमैं तुहे जाइ रीछ वनर सरीर धारौ,
असे दसरथ सुत हुमां इण वाणी सी ।
धुर गढ़ लका मांझ सब काज सांझ कर,
जाऊंलौ परम धाम आपरै सुथांणी सी ॥

*

---

[1] अनुकूला का लक्षण—भगण + तगण + नगण + दो गुरु ।

[2] २६ मात्रा या वर्णों से अधिक मात्रा या वर्ण वाले छंदों को दंडक कहते हैं । लक्षण स्पष्ट है ।

अथ संकर मांहे बयाळीस लाख अड़सठ हजार पांच सैं बांणवें रो भेद चोबीस अक्षर प्रस्तार में—

दुमिला[1] छंद

[दूणो तोटक पण पछिम रा कवीस्वर कहै छै]

सुभ अट्ठ सगांण करो तुक अंतर चोवीस अख्यर आंण सरै ।
धुर मत फणीपति एम कह्यौ दुमिला छंद चातर पाय धरै ।।
द्रिढ़ आंणहु जीव भली विधि सु दधि अक्षर काट सु दूर करै ।
तिण मांझ रटौ हरराज विधी कत नावक ज्यौं भव-सिंधु तरै ।।

यथा– इमि आदिस दीध भली विधि सु मधवादि कपीस हुवा घर मैं ।
तिणवार सुजग्य करै रिख शृंग अनेक रिखी सधुता घर मैं ।।
इण माझ सु जग्य पुरस्स प्रगट्टीय हे मरो'''भलोयं कर मैं ।
अति अद्भुत वात हुई स सुणी अवनी-पति देख रह्यौ भर मैं ।।

इति दुमिला छंद

★

अथ मतगयद[2] नांमा छंद प्रकासणं

तेईस अक्षर प्रस्तार में इक्ताळीस लाख छपासठ हजार सात सैं इक्यावनमों भेद छै ।

मोहीज छद चोबीस अक्षर प्रस्तार में हो इतरै इक्ताळीस लाख सितर हजार नव सैं तेरवों छद छै ।

★

मत्तगयंद छद प्रकासयति

अट्ठ भगाण करौ इक हीन जु एक र दोय सुव्वन्न मिळावै ।
गोरव लाघव तेण धरो, इम छंद सुवंद भुजंग बतावै ।।
इण व्रत्तात हुवै चतुवीस सु अख्यर मत्तगयंद जु गावै ।
दूजय पत्यय सु फेर करो, गुर अंत सु दोइ तेवीस वणावै ।।

---

[1] दुमिला का लक्षण—प्रत्येक चरण में आठ सगण=चोवीस अक्षर ।

[2] मत्तगयद का लक्षण—दो पक्ष, (१) आठ भगण (२) सात भगण अंत मे दो दीर्घ । उदाहरण दूसरे पक्ष के अनुसार पहले दिया गया है ।

यथा— देख चरूर हुवौ मन हंसित दुदुभि देव अकास वजावै।
सब रिखीस मरीच हुलसत भ्रंग ही आद सु वेद हि गावै॥
मेनक अपछर नृत्य रच्यौ फिर आगम जांण वसंत सु आवै।
देव महेस सुरेस नरेस सु जांण मनों भुव भार मिटावै॥

*

चौवीस अक्षर प्रस्तार में ओहीज छद छै

यथा— देख चरूर हुवौ मन हंसित दुदुभि देव अकास वजावत।
(इण भांत च्यारां तुकां जांणणो)

इति संकर छंद

इति श्री पिंगळ सिरोमणि वर्ण मध्ये सकर छंद कथनं

*

अथ मातृका छंद कथनं

तत्र आदि गण निरूपण

सर्व आदि मधि अंत गुर, चतु कळ वरणौ जेम।
माहे तिण रै मातृका, छद कहै सहि तेम॥

*

छदां मातृका रा मांहे मुख्य पद्धरी[1] छंद छै

विश्रांम आदि दस मात बोल, तुव मात-मात सुत आस तोल।
इण वांण पद्धरी छद आंण, जग्गांण अंत वर्दीयै सुजांण॥

*

दूहा पीठकाबंध

मात्रा सोळह मेल कर, विण जगगण वद वांण।
छद विपरजय होइ इम, जाणौ कवी सुजाण॥

उदाहरण सिंघावलोकन कथा श्री सीता पूर्व जन्म प्रसग

यथा— इक समय महीप ज हुवौ कोइ, आसक्त मृगन उद्यांन सोइ।
सब ध्यांनावस्थित रिखि सधीर, तप करै तेथ मुनि गंग तीर॥

---

[1]पद्धरी छंद १६ मात्रा का होता है जिसके अंत में जगण रहता है।

रिखि लस्ट पुस्ट बन देखि राज, क्योंही न देव कर कौन काज ।
अनुचर हि प्रेर दंड देहि आज, रिखि होइ क्रुद्ध तन छिद अकाज ॥
पूरित घट लोही भरचौ भूरि, पापिस्ट अग्र ले धरचौ पूरि ।
भूमी निवेस करिद्यौ मलीन, कुंभ सोइ निवेसित भूमि कीन ॥
अनमोघ रुधिर वह ब्रह्म अंस, पुत्रिका उपजि तिण जग प्रसस ।
वाल तिण सब्द कीनौ सुभाइ, पूरण सरीर हुवौ अवधि पाइ ॥
रिखि लियौ काढि सो घट सरुप, निसरी अजोनि कन्या अनूप ।
कृत जात कर्म मुनिवर प्रकास, सुभ वेद मती दयौ नाम तास ॥
तिण उपजि उग्र वैराग तांम, व्रत ब्रह्मचर्य आचरज्य यांम ।
आवाल ब्रह्मचारणि अदेह, देवहि तिण अर्पित करी देह ॥
तपसी समूह मिळि तप तिताप, वरखा न सीत ग्रीसम वियाप ।
अति करत कस्ट जद्यप स्व अंग, स्वाभाविक सोभा वधी संग ॥
वन सघन सुखद आश्रम विराज, सुभ सग तठै साध्वी समाज ।
इक समय तठै दमसिस अभीत, अति वली असुर आयौ अनीत ॥
तिण देखि अजोनी भगी ताम, वस भीत विवरगत गई वांम ।
पापिस्ट द्वार पग चिन्ह पाइ, सो घस्यौ विवर अपणैं सुभाइ ॥
उठि रोम त्रिया कंपित सरीर, अकुळाइ धड़क व्याकुळ अधीर ।
स्वाभावि जोति तन हुव प्रकास, तिण देखि अधम दम वदन तास ॥
बल करसि कियौ तप भंग बाल, सो दुस्ट असुर खळ सुद निखाल ।
वपु सस्त्र छेद कीनौ विसेस, त्रिय रुधिर पात्र पूरचौ सतेस ॥
सखि हुती तापसी एक साथ, हठि रुधिर पात्र तिण दियौ हाथ ।
वेतिरा सहित उप कठ वीर, सजनी भुव गाडहु घट सधीर ॥
फिर कह्यौ दसानन सो प्रकाम, निस्सेस करौ तव वस नाम ।
अवतार दुमोय इण लोक आण, कुळ राकस सोऊं छाडि काण ॥
यों कहइ मात्र तन उठी आग, ज्वाळा कराळ ब्रह्मांड जागि ।
हुइ भस्म सुत्रोधानळ सुभाइ, हिय सोक लोक हुइ हाइ-हाइ ॥
तिण रुधिर पात्र वेतिरा तीर, सखि भूमि गाडि राख्यौ सधीर ।
रुधिर तिण उपजि कन्या सरूप, अवतार जोग माया अनूप ॥
सुभ अग सता सरलण सुभाइ, इहि समय रमा अवतरी आइ ।
ऋतु काज जनक आरंभ कीन, प्रभु तेंडि सकळ मंत्री प्रवीन ॥
सभाग सिध हुय जग्य साज, भुव सोधि सुद्धि द्विज वेद काज ।
सम काज करत सिसि सोधि मूळ, तिण सोदि अवनि इक सुरग तूल ॥

मिळि तठै राजरांणी समेत, कनकमय जोतिहल ऋतु निकेत ।
हळ सीत अग्र इम अटक होइ, सह कन्या निकस्यौ पात्र सोइ ।।
हुव तठै महा विस्मय ज भूप, सो अतुळ देखि कन्या सरूप ।
आनंद पुहप वर्खा अकास, फिरि हुई गगन वांणी प्रकास ।।
पोखहु विदेह पुत्री सप्रेम, निरधार निगम करि सहित नेम ।
कारण इण उपजी देव काज, राखौ सु जतन मिथळेस राज ।।

इति श्री सीता पूर्व जन्म अथ प्रसग सपूर्णं

*

अथ छंद विताळ निरूपण

गीया[१] पण कहै छै

रगाण अते रचौ गण गिण, दीप मेदनि जांणियै ।
विस्रांम मत्रा विधूतुद अर, क्ळा भांण वखाणियै ।।
इण भाति सु छद तुहे जाणौ, तीन नांमह आणियै ।
मरु वेयतल सरस्सी पच्छिम, गीया गायव माणियै ।।

*

यथा गर्भस्तुति श्री रांमजी री

छंद विताळ

भुज चारि सजुते चारि आयुध, हृदय मन सोभा सणे ।
केयूर मुक्ता माळ ककण, विवध तन भूखण वणे ।।
गण ईस कोटिनि अग्रवसो, कुळ अमर वदनं करै ।
वनमाळ उर सिवि चित्र विभ्रति, हास चद्रक चित हरै ।।
कटि सिंघ मडित हेम ककणि, नुवल भनत नूपुरै ।
जोतिमय नख अरुण राजित, रूप अद्भुत नर हरै ।।
सो देखि कौसळ सुता विस्मत भई छिन्न भ्रमा वही ।
करि जोडि करि-करि परम करुणा, वार-वार वखाणही ।।

---

[१]'रघुनाथ रूपक' मे गीया छद २८ मात्रा का मिलता है (पृ० ६६) जिसमें १६ और १२ मात्राओ पर यति और अंतमे रगण है। उससे यहां दिया गया उदाहरण भी मिलता है पर लक्षण पहली पक्ति में स्पष्ट नहीं हो पाया ।

आनंद धारां अश्रु अविरल प्रेम थाह न पाव ही ।
अभिळास पूरण हुवौ अपणौ जनम साफळ जांण ही ।।
तुम पार ब्रह्म अपार प्रभुता परम धांम प्रमांणीयै ।
जग करण पालक नास जग जित जग निवास सु जांणीयै ।।
रवि कोटि प्रगट प्रकास राजित ईस कोटि महेसुरा ।
विधि कोटि कोटिनि विस्व स्रजता काळ कोटि भयंकरा ।।
हय मेध कोटि अधर्महंता मरुत कोटि सहावळी ।
ससि कोटि जगदानंद स्वामी कोटि सुर नर निस्चळी ।।
वैस्रवण कोटि धनेस वैभव सक्र कोटि विलासनं ।
त्रैलोक वंदित पदम पद तेई कोटि तीर्थ निवासनं ।।
सर कोटि पंचनि अनुल सुदर खिमा कोटि वसुंधरा ।
सामुद्र कोटि गंभीर सोभा कोटि चंड भयंकरा ।।
वपु जग्य कोटि पुनीत पूजा दे वर दयाळ भौ ।
सुभ द्रस्टि कोटिक सुधा स्रावक परम गति दायक प्रभौ ।।
ब्रह्मांड कोटिस विपुल विग्रह विमळ जस जग विस्तरे ।
कांमधुक कोटिक काम दाता विस्वजित विसंभरे ।।
कच कूप जिण ब्रह्मड कोटिनि नियत निखिल निवास ए ।
सोइ अमिता विग्रह मम उदर गत प्रेम भाव प्रभास ए ।।
यह चरित लोक विलंबनां लगि करत कारण हेत ए ।
निगम गावत नेति नित मन वाच काय समेत ए ।।

इति स्री माता कौसल्या कृत श्री रामजी री गर्भ स्तुति

*

अथ काव्य[1] छंदवसतू छंद कथनं

यथा– मत्ते तत्ता मेल, मरत मनु छिन्न भणिज्जै ।
मुद्रढ़ बाधि गुण-सधि, कवी जड च्यारि करिज्जै ।।
काव्य छंद इण नांम, और वसतूक कहिज्जै ।
उल्लालै मजुत्त, नाम धरि छ पद धरिज्जै ।।

---

[1]काव्य छंद—जिस रोला छंद की ११वी मात्रा लघु हो उसे काव्य छंद कहते हैं। मात्राओं का क्रम ११ और १३ के अनुसार चलता है।

यथा– अवधि पाइ उतपन्न, ग्रेह अवधेस अवधिपुर ।
पित दसरथ प्रथ्वेस, धर्मरथ भारवहत धुर ।।
पतिव्रत्ता सपुनीत, मात कौसल्या राणी ।
हंस वंस अवतस, जाति खत्री जग जाणी ।।
ऋतु वसंत मधुमास मिळत पख स्वेत मध्य दिण ।
नखत्र पुनर्वस सिद्ध जोग आगम उतराइण ।।
मेख मान व्रण भोम वुद्ध कन्या कर्कत गुर ।
सफर सुक्र सक्रमण लगन मिळि कर्क उच्चवर ।।
अर्क वंस अकास अवधि वित्तीय अरणोदय ।
कौसल्या प्राची सु राम रवि प्रगट जगत जय ।।
समय निसाचर तिमर किति दिगकिरण प्रकासिय ।
दुस्ट कुमुद सकुरीय सत्रु नाखत्र विनासिय ।।
अवधि सिसिर अवसांन जनम आगम जग जाणिय ।
अमर व्रद आंनद निखिल वन पुहप विधानिय ।।
कंटक भय भर टळिय सीत दाहक नंहि सज्जै ।
सत कमळ विकसत कित्ति कवि कोकिल किज्जै ।।
मख निसांण धुर गरज आस घण घटा वधि उर ।
मिळै मनोरथ जळद सत चातक रट आतुर ।।
सुर सिखड मन मुदित ज्योति विद्युन आभासिय ।
किति सरित विथ्थरिय विदुस मुख सिंधु विलासिय ।।

★

अथ छंद उधोर[1]

चवि तीन चौकळ चंग, उद्धोर छद सु अग ।
इक हार मेर अणह, विधि करहु एण वणह ।।

यथा– मव रिखि निपूजि सनेह, विधि जुक्त राज मनेह ।
पुनि वामदेव वसिस्ट, प्रण पाइ पूजि प्रतिस्ट ।।

---

[1]उधोर छंद के प्रत्येक चरण में १२ मात्रायें होती हैं। अंत से पहले का अक्षर दीर्घ होना चाहिए।

दिवसण भूखण दांन, सब भांति कृत सनमांन ।
अरचे सु अवधि नरेस, सौगंध द्रव्य मुदेस ॥
सब हुंस पंसो साथ, हित पूजि जोड़े हाथ ॥

इति उधोर छंद

*

छंद चौपई[1] कथनं

भूसर मत्ता पहिला मेळ, मांहे च्यारो तुक्कां मेल ।
छंद होइ इण विधि चौपयौ, सेस बतायो वचन सु कह्यौ ॥

यथा उदाहरणं

कौसल्या सुत रांम सुकह्यौ, लघु केकई सुत भरथ हि लह्यौ ।
सौमित्र लछमण सत्रघंन, माता च्यार पुत्र जण मंन ॥
जाती करम कीया दसरथ, सही मडळ च्यारों ही सथ ।
लछमण रांम तणो सहि चार, भरथ तणे सत्रुघण अणु भार ॥

इति चौपई छंद

*

अथ मात्रिका दूहा

तियांरा नांम जाति वरतारा[2] लिख्यते

यथा— हस १ राह २ गयंद ३ पहु ४ पिगळ ५ तरळ ६ ।
तमाळ ७ सायर ८ सुदर ९, मेर १० नग ११ कुंजर १२ ॥
हर १३ गुकमाळ १४ दमणो १५ मरवो १६ अहि १७ पवण १८ ।
घण १९ विजय २० आंणद २१ अमोलो २२ पंकति २३ अखै ॥

सब इम दूहा छंद

इति सरब साख्या कथनं

*

[1]चौपई की प्रत्येक पंक्ति में १५ मात्रायें होती हैं ।
[2]छंद-रचना के नियम ।

१ सक्र २ वक्ररू ३ नकुळ ४ ....५ कपि ६।
सर ७ गोधूळि ८ अनुक्रम सौं आंणौं इणां मय रस तज मन मूळ ॥

इति उपजाति कथनं

★

पुनः ग्रंथांतरेण उप जाति कथनं

तापवंकाळी भख तवौ, भागण जंघ वखांण।
नागण तव हूंता नगण, जागण कुता जांण॥
सोमराज जांणौ सगण, तोतौ आंणत गांण।
यगण रगण जिण में रटौ, भीम वळे कहि भांण॥

सोरठा– भगण रगण जिण मेळ, मेळक नांमां मेळसौं।
कहि फिरि नांमां केळि, मगण यगण जिणसौं मिळे॥
मगण तगण कुह नांम, सगण जगण जांणौं ससी।
दूहा गुण वहु दांम, सेस उकति कवि वच सरस॥
गण नगण कहि मेख, नगण जगण जाणौ निवड़।
सगण तगण सो सेस, रगण यगण सोरौ मकंद॥
तगण यगण सौं ताळ, सगण रगण सौं सामिळौ।
भगण जगण कहि भाळ, मगण नगण जाणौ मडुल॥
नगण भगण कु नाम, सगण तगण जाणौ सुजस।
जगण रगण सु जाम, तगण मगण जांणौ तुलौ॥
आदि इणे विधि आख, दूहौ छद दुरस सौं।
सेस सिरोमणि साखि, कहै एम हरिराज कवि॥

★

अथ भरह पिंगळ मतात सेस उक्त यथा

मसू य रस तज मन मिळे, आढक आंमां आख।
यसू रस तज भन म हुवै, बोलौ तेण विसाख॥
र सू स त ज भ न म य रटौ, तारा नांमां तेम।
स सू त ज भ न म यर सदा, होय नाम इण हेम॥
त सू ज म न म य र स तवौ, नाम वालमी नेत।
ज सू भ न म य र स त जंपौ, हाक्ळ नांम सहेत॥
भ सू न म य र स त ज भजो, जांणौ रोमथ जेम।
न सू म य र स त ज भ न रौ, तवौ नांम इण तेम॥

कहै एम हरिराज कवि, सभे नांम समूळ।
अनुक्रम सौ जाणं अठै, म य र स त ज मन मूळ ॥

★

नाळक दूहा सोरठो

दूहो दुकटो काम, जो जोड़ें सो जांणसी।
व्यावर तणौ विराम, वांझ न जांणै वीझरा ॥

इति दूहा सर्व सख्या कथनं

★

अथ दूहा लख्यण[1] कथ्यते

चौकळ त्रिण्ह इक पहिल चवि, इग्यारह दुव आखि।
पच्छिम दळ इम ही परठि, दूहा लख्यण दाखि ॥

इति सर्व दूहा लख्यणं

★

बीजक—अथ अनुक्रम जाति कथनं

प्रथम हंस[2] जाति लक्षण

हर-हर कहि गुर करि रटो, भणौ वेद अण भंग।
हस एण विधि कर हुवै, अखिर छावीसे अग ॥

यथा— सम्भा मारा सारणा, रट्टौ जेठौ रांम।
नाही रूँढां सौ नमें, नामे तत्तां नाम ॥

इति हंस दूहा

★

उदाहरणं—अथ वराह[3] दूहा

विस्व दुगण मुनि कहि वरण, रस मुनि त्रिगुण रहोइ।
नाम वराह सु छद वद, जिण फिरि लघु गुर जोइ ॥

---

[1]दोहे का लक्षण—मात्रा १३+११ फिर १३+११।

[2]हंस जाति दोहे का लक्षण—अक्षर २२ गुरु+४ लघु=२६ 'रघुवर-जस प्रकास' तथा 'छद प्रभाकर' मे इन्हीं लक्षणों के छद को 'भ्रमर' कहा गया है।

[3]वराह का लक्षण—२१ अक्षर गुरु+६ अक्षर लघु=२७ अक्षर। 'रघुवर-जस प्रकास' मे इसे 'भ्रामर' और 'छंद प्रभाकर' मे 'सुभ्रामर' कहा है।

यथा– परठंतां सभ्भे पुरी, देमां जो दसरथ्थ ।
माहे किथ्थे माहिसां, मंडे मथ्यां मथ्थ ॥

इति वराह

*

अथ दूहा गयंद[1] कथनं

पंच चव गुण गुर परठि, वसु लघु मांहि वखांण ।
सज्झे अट्ठावीस सौं, जो गायदो जांण ॥

यथा– विस्वामित्र प्रसिद्ध सो, अग्गै जो उद्धार ।
देखी सोभा नग्र की, गयौ राज दूवार ॥

इति गयंद जाति कथनं

*

अथ पहु[2] दूहौ

रवि मुनि गुर अरयर रटौ, इक उण सिव लघु आंण ।
पहु नांमां दूहौ पढौ, जुग अंक अख्यर जाण ॥

यथा– पादा अर्घा कर पती, ऊभौ सामौ आइ ।
प्रीत सु पूजे पादुका, वारंवार वणाइ ॥

इति पहु

*

अथ पिंगळ[3] वर्णनं

पिंगळ पढ्हु पुरांण पर, गुर लघु रवि कर गाइ ।
सेसे दियौ वताइ सो, मास वन्न इण मांहि ॥

यथा– हाथ जोडि आगै हुवौ, ऊभौ सांम्हौ आइ ।
कोटी प्रण पति सहुकरी, सींघासण वैसाइ ॥

इति पिंगल

*

[1] गयंद का लक्षण—२० अक्षर गुरु+८ अक्षर लघु=२८ अक्षर 'रघुवर-जस प्रकास' तथा 'छंद प्रभाकर' मे इसे 'सरभ' कहा गया है।

[2] पहु का लक्षण—१९ अक्षर गुरु+१० अक्षर लघु=२९। 'छंद प्रभाकर' में इसे 'श्येन' तथा 'रघुवरजस प्रकास' में 'सेन' कहा गया है।

[3] पिंगळ छंद का लक्षण—१८ अक्षर गुरु+१२ लघु=३०।

दूहा उदाहरण—

अथ दूहो तरळ[1]

तरळ सरळ करि लघु तवो, भूम मत गुर भाइ ।
इकतिस अख्यर आणीयै, भणीयै एण सुभाइ ।।
यथा– विनती सौं बोल्यौ वचां, देवामय दसरथ्थ ।
हय गय धन मांगौ हसे, कहौ मनां री कथ्थ ।।

इति तरळ

★

अथ तमाळ दूहो[2]

लहि गुर आधा आध लघु, दंता लगि सब दाख ।
छंद तमाळ सु ढाळ चवि, रटै सेस मति राख ।।
यथा– विसवामित्र पवित्र सो, बोल्यौ एण सु वांण ।
मन वच काय प्रणांम सो, जज्जां राम सुजांण ।।

इति तमाळ दूहो

★

अथ सायर दूहो[3]

भू सर भू वसु गुर लघू, सायर छंद विसेम ।
अख्यर तेतिस आणियै, सरस कहे कवि सेस ।।
यथा– दहु दळ सुद्धा दासरथ, बोल्या एण सुवांण ।
औरै इच्छा मागि अखि, रांम न द्यौं महरांण ।।

---

[1]तरळ दोहे का लक्षण—१७ गुरु+१४ लघु। यहां दिया गया उदाहरण का दोहा इस लक्षण के अनुसार नही है। 'रघुवरजस प्रकास' तथा 'छंद प्रभाकर' में इसे 'मर्कट' दोहा कहा गया है।

[2]तमाळ का लक्षण—१६ गुरु+१६ लघु। र. ज. प्र. तथा छं. प्र. में इसे 'करभ' कहा गया है।

[3]सायर का लक्षण—१५ गुरु+१८ लघु। र. ज. प्र. मे इसे 'नर' नाम दिया गया है।

अथ सुंदर दूहौ[1]

त्रिण्ह कळा चौकळ चवौ, आंख गुर सव आंण।
विस्व दूण लघु करि वदौ, सुंदर छंद सु जांण।।

यथा– रत्त नैण करि रोस सौं, वोल्यौ विस्वामित्र।
रांम दीयौ कै थाप र्यौं, करौं विघ्न नेकत्र।।

इति सुंदर दूहौ

★

अथ मेर[2] दूहौ

भूमि नेत्र मिव का भणौ, विस्व दूण दुय वोल।
लघु गुरु अनुक्रम सूं लहौ, कहौ मेर दुण कोल।।

यथा– सबही सिर हर वोलियौ, वचन एम वासिस्ट।
रांम दियौ थे दासरथ, करौ दूर सब कस्ट।।

इति मेर दूहौ

★

अथ नर[3] दूहौ

अस्व वांण गुर आणियै, अस्व अस्वपति आंण।
बाण धरौ फिरि लघु वदै, जांणौ नर सव जाण।।

यथा– एथ वसिस्ट स ऊथ कण, विस्वामित्र पवित्त।
मन में दसरथ मांनियै, करौ कांइ हिकमत्त।।

इति नर दूहौ

★

[1]सुंदर दोहे का लक्षण—१४ गुरु+२० लघु। 'रघुवरजस प्रकास'[1] में इसे 'मराळ' नाम दिया गया है।

[2]मेर का लक्षण—१३ गुरु+२२ लघु। र. ज. प्र. में इसे 'मदकळ', छं. प्र. में 'गयंद' व 'मधुकर' कहा है।

[3]नर दोहे का लक्षण—१२ गुरु+२४ लघु। र. ज. प्र. में 'पयोधर' कहा गया है।

अथ कुंजर[1]

एक ऊण सवत अखो, तू खित लघु कर तेम।
कुंजर नामां छद करि, अहि कवि कथियौ एम॥
यथा– वचन बोल इम दासरथ, सेन चतुर अंग साथ।
लैकर आविस लार हूं, विण नायन के नाथ॥

इति कुंजर

★

अथ हर[2] दूहो

हर कहि हरि विण गुण लहो, वद हरं हरं फिरि वेद।
हर छंदो इण विधि हरो, भणं सेस हर भेद॥
यथा– महा कस्ट सुं रांम नुं, दियो जु दसरथ रोइ।
तद्रा दिक फिरि देख तिण, श्राप चकित हुइ सोइ॥

इति हर दूहो

★

अथ सुकमाळ[3] दूहो

अंक अंक गुर आणियै, सुकमाळां सुकमाळ।
वाजि आयु द्वै हीन वद, लघु इम बांध सु ढाळ॥
यथा– लखमण जुत श्री राम चल, ले रिखजी रै लार।
मरवो ताडक सरण महि, सत कर भय हर सार॥

इति सुकमाळ दूहो

★

अथ दमणो[4]

लघु हता गुर इम लहो, दमण नाग कुळ देस।
चाळिस अख्यर मध्य चव, सर्स कह्यो विसेस॥

---

[1] कुंजर का लक्षण—११ गुरु+२६ लघु। र. ज. प्र. मे 'चळ' कहा गया है।
[2] हर का लक्षण—१० गुरु+२८ लघु। र. ज प्र. में 'वानर' कहा गया है।
[3] सुकमाळ का लक्षण—९ गुरु+३० लघु।
[4] दमणो का लक्षण—८ गुरु+३२ लघु। र. ज. प्र. मे 'मच्छ' और छं. प्र मे 'कच्छप' कहा गया है।

यथा— विसवामितर पवितर मुनि, विदिया चवद वताइ ।
असरम आया आपणइ, अवयव लियै उछाइ ॥

इति दमणो दूहो

*

अथ मरवो[1] दूहो

लहि गुर सत चौतीस लघु, सत कह्यौ कवि सेस ।
मरु इम छंदौ मांनियै, वांणी जांण विसेस ॥

यथा— करम जगत खित सव करै, दयत मारिया दौड़ ।
मरिच पुतर इम मेलियौ, करतव सव जव कोड़ ॥

इति मरवौ दूहो

*

अथ अहि[2] दूहो

अहि छंदौ इण विध अखो, रस गुर रस तिण लेह ।
कवि वच सरस करावियै, चाळिस विवरण देह ॥

यथा— सुणिय धनुम भंग उज्ज सु, हरस हुवौ मन माहि ।
जिय कण हम तुम दुव चलौ, इचरज हुव हिय्र माहि ॥

इति अहि दूहो

*

पूर्वं रूप उदाहरणं

अथ पवण दूहो[3]

पवण-पवण सम गुर पवो, लघु वमु देवा लेह ।
इण विधि छंदौ आखियै, दहु दळ इण विध देह ॥

यथा— रांम लखण अर त्रिय सहि, जनक द्वार इम जाइ ।
अरघ वरध वहु विध करहि, कर-कर पर कर काइ ॥

*

---

[1]मरवौ का लक्षण—७ गुरु+३४ लघु ।
[2]अहि दूहे का लक्षण—६ गुरु+३६ लघु ।
[3]पवण दूहे का उदाहरण—५ गुरु+३८ लघु । र. ज. प्र. में इसे 'प्रहित्र' नाम दिया है ।

अथ घण दूहो[1]

वेद गुरू आकास वद, पहिला वेद पढ़ाइ ।
घण इण छंदौ वेद घण, घण जिण वेद घणाइ ।।

★

अथ कथासूचक दूहा व उदाहरण

अँगधीस कालिग अखि, वँग सम पतिवेद ।
मागध अज विज कंठ दस, राम लखण सिसु भेद ।।
देखे राजा बहु दिसा, विसवामित्त पवित्त ।
दुज बहुत ए बाल दुव, किमे करूं जिय वत्त ।।
बहु रज वट हट गय बले, सिसु किम इथ कण सोइ ।
रिसिवर तुम इम कर रटौ, दळ बळ सह कर दोइ ।।

★

अथ विजू दूहो[2]

विजू नेत्रां सिव वदौ, मास दिवस अर मास ।
इण विधि छंदौ आखियै, भणौ महा बुध भास ।।

यथा– बहु रज वट हट गय बलय, सिसु किम इथ कण सोइ ।
रिसिवर तुम इम कर रटौ, दळ बळ सह कर दोइ ।।

★

अथ आणद दूहो[3]

आणद-आणद आखियै, नेत्रां आण नरांह ।
मास दिवस इक मास महि, गुर लघु जांणगरांह ।।

---

[1]घण दूहे का लक्षण—४ गुरु+४० लघु। उदाहरण में दिये गये दोहों में से अंतिम दोहा ही शुद्ध है।

[2]बीजू दूहे का लक्षण—३ गुरु+४२ लघु। र. ज. प्र. में इसे 'विडाळ' कहा गया है।

[3]आणद दूहे का लक्षण—२ गुरु+४४ लघु प्रकार। र. ज. प्र. मे इसे 'सुनक' कहा गया है।

यथा– वहु रजवट हूट गय वलय, सिमु किम इय कण सोइ ।
रिसिवर लुम इम कर रटय, दळ वळ सहकर दोइ ।।

*

अथ ग्रामोलो दूहो[1]

मेर-मेर गुर मांहिलै, मास विस्व रस मोल ।
इण विधि छदो आखियै, आमोलो क विमोल ।।

यथा– सवइ महिज इण सिव सरस, दुरस चरस कर वरण ।
अमर सरप नर मय अधिक, जगत जनक के चरण ।।

*

अथ पंकति दूहो[2]

पंकति सव ही लघु पढो, रहो महा मति राख ।
दूहा छंद सु धार वद, सेस सिरोमणि साख ।।

यथा– सवइ महिज इण सिव सरस, दुरस चरस कर वरण ।
अमर सरप नर मयु अधिक, जगत जनक कहि चरण ।।

इति सर्व दूहा रा वरण वध मातृका बंध लघु गुरु नांम कथनं

*

अथ सोरठा

छंद विपरजय बोल, दूहो लख्यण दुरस सौं ।
ल्यावौ छदो लोल, सोरठ नांमां इम सरस ।।

इति सोरठा

उदाहरण अर भेद जाणणा[3]

*

अथ मोरकळा छंद

सुसेन्ना अंगां सत्ते गुत्तां, द्विपद दूहा दाख ।
इकलो अहै सेसो वदै, सेस सिरोमण साख ।।

---

[1]अमोलो का लक्षण—१ गुरु+४६ लघु ।

[2]पंकति दूहे का लक्षण—कुल ४८ अक्षर ही लघु होते हैं । र. ज. प्र. तथा छं प्र मे इसे 'सरप' नाम दिया गया है ।

[3] इसी प्रकार सोरठों के भी दोहों की तरह २३ भेद हो सकते हैं ।

यथा– इण विध रामो बोलै नांमो, लखमण सुणो सुवात ।
महि माहे माटी नांहि फाटी, धनुस तणो ए गात ॥
तद लखमण बोलै मन महि तोलै, मेर आदि दे भार ।
सुखातर नहि आणो धनु परमांणो, भांग करो अब छार ॥

इति मोरकळा छंद

★

अथ वडा दूहा[1]

सोरठ गत पहिलां सरस, वदै दुरस करि वर्ण ।
अधदळ दूहो वड दुहो, चवि इम च्यारे चर्ण ॥
यथा– धनुस भंग धरियाळ, रांम लखण लागा रहसि ।
नर नारी पुर लोक प्रति, दुव भाई विरदाळ ॥

इति वडा दूहा

★

अथ कुंडळिया[2] छंद

ऊपर दूहो हिज अखे, काव्य छंद तळिकाइ ।
सीह गत धुर अंत मिळ, कुडळ छंद वणाइ ॥
यथा– देखै सारी ही दुनी, कोदंड हाथ कुमार ।
करण खाच हर धनुस का, कीया खंड वंकार ॥
कीया खंड वंकार, सर्व ही दोखी दमा ।
रावण मन महि धास, रही भव सीमां ॥

★

तिढ़तिया वद्‌पट

परसुराम आया सही, लोकां पेखंतां ।
दाखै दसरथ पूत नू, सीता देखंतां ॥

---

[1] वडा दूहा—पहले और चौथे चरण में ११ मात्रा तथा दूसरे और तीसरे चरण मे १३ मात्रा होती हैं ।

[2] कुडळिया का लक्षण—पहले दोहा रख कर फिर काव्य छद रखने से कुडळिया बनता है ।

घनुस भंग किम कीयौ, छत्री कुळ खंता ।
दखिण कर फरसी ग्रहै, बोले वादंता ॥

*

अथ दढ़िया

रे रे राम अनरथीया, इम धनु भांगीजै ।
परसुराम घर मांहि है, तै नहिं जांणाजै ॥
बोलै रांम महाबळी, जीरण धन हूंतौ ।
अवध गाह विप्रां ओया, फिर गुर है तूं तौ ॥

इति दढिया

*

अथ संकर नीसाणी[1]

आकति कळकौ छद जो, तेरह नव कीजै ।
नीसाणी बहु भांत है, देसँतर कीजै ॥

इति संकर नीसाणी

*

अथ पदमावती[2] छंद

मेघा सर कर पग नाद चतुह कळ, सूर च्यार जुत ही आंणौ ।
विरत त्रिभगी जिम जगण नाहि, धर अद पदमाव्रति इम जांणौ ॥

यथा– जीरण धन हूंतौ, हम धनु लेवौ ।
उ········ हाथ कीय, इम परसै ॥
सब करामात दीय, काज सिध कीय ।
प्रणपति कीय फिरि, कीय दरसै ॥
आदि करभ कीय, फिरि थांन नक गय कर ।
श्री रांम चले अपने घरं ॥

---

[1]संकर निसांणी में कुल २२ मात्रायें होती है । १३ और ९ मात्राओं पर यति रहती है ।

[2]'रघुवरजस प्रकास' में पदमावती छद २४ मात्राओं का बताया गया है । पर यहाँ लक्षण तथा उदाहरण स्पष्ट नहीं है ।

तहां दसरथ ऊभा, समेले जग मांहि ।
धन तूं जस सुकरै ।।

इति पदमावती छंद

*

अथ दंडकमाळा छंद

सर गुण गुण कर दोइ ऊण धर, कर गुण चौकळ पर गुर सरिजै ।
असटादस माथै विरतिस रस धर, दंडक छंदो इम करिजै ।।

दूहा– कळ मनु आदे कीजियै, द्रपट दूव पद दाख ।
सो नीमांणी भूलणौ, विरतां गुर लघु भाख ।।

*

उदाहरणं

परसुराम आया सही, लोकां पेखंतां ।

इणकौ उदाहरण तै अर नव कळकी तुक में जांणणौ। त्रिभंगी छंद कै सम पद की च्यार तुकां सुं एक तुक कीजे, तौ लीलावती छंद होइ[1] ।।

*

अथ गाथा[2] कथनं

सत्तावीसे ए सूरा, लघु जिण मैं तीनै आंणौ पूरा ।
क्रम-क्रम इक गुर थहै, द्वै लघु होइ नांम अणु घूरा ।।

दूहा– सत्ताइसै आदि है, गाथा भेव अनेक ।
यौंही राज विचार करि, जग्र करै सब एक ।।

*

---

[1]लीलावती छंद मे कुल ३२ मात्रा 'रघुवरजस प्रकास' के अनुसार होती हैं। ऊपर के छंद का उदाहरण आदि स्पष्ट नहीं है।

[2]गाथा मे कुल ५७ मात्रायें होती हैं। २७ गुरु और ३ लघु मात्राओं वाली गाथा को 'लछी गाथा' कहा गया है। इसमे क्रम से एक गुरु कम होता है और २ लघु बढ़ते हैं। इस प्रकार गाथाओं के भेद होते हैं। 'रघुवरजस प्रकास' तथा 'लखपत पिंगळ' में २६ गाथायें हैं पर यहां २८ गाथाएं हैं।

गुरु	लघु	सर्व	नांम	संख्या
२७	३	३०	लछी	१
२६	५	३१	रिधि	२
२५	७	३२	बुधि	३
२४	६	३३	लज्जा	४
२३	११	३४	विद्या	५
२२	१३	३५	क्षमा	६
२१	१५	३६	देही	७
२०	१७	३७	गौरी	८
१६	१६	३८	धात्री	६
१८	२१	३६	दूती	१०
१७	२३	४०	छाया	११
१६	२५	४१	कांती	१२
१५	२७	४२	महामाया	१३
१४	२६	४३	कित्ती	१४
१३	३१	४४	सिधी	१५
१२	३३	४५	माना	१६
११	३५	४६	रामा	१७
१०	३७	४७	गाही	१८
६	३६	४८	विस्वा	१६
८	४१	४६	वसिता	२०
७	४३	५०	सोभा	२१
६	४५	५१	हिरणी	२२
५	४७	५२	चक्री	२३
४	४६	५३	नारी	२४
३	५१	५४	कुररी	२५
२	५३	५५	सिंघी	२६
१	५५	५६	हसी	२७
।	५७	५७	सरपणी	२८

इति सर्व गाथा कथनं, तिण रा भेद घनेक छै

*

अथ गाथा लक्षण माह

आदे द्वादस अखो इम द्विपदे ही अस्ठादस दुवयं।
चवति थयं फिरि चौथे गाहा लक्षण वदे भुयंगम् ।।

★

अथ जंत्र निरूपणं कथा मात्रासूचक गाथा उदाहरण

यथा लछी[1] गाथा प्रथम

ज्यों जीवै संजीवं मांहै यो मधि भागे मा भाई त्यो आए,
आज्योध्या वन्नावन्नी सुवाधाए।

इति लछी गाथा

★

अथ रिधि[2] गाथा प्रथम

यथा– जांनां च्यारों जोड़े पूजे अंबा ग्रहां प्रमेसं।
प्राभे अद्दि पुरखं अह्मांणी आदि वंदाये ।।

इति रिधि गाथा

★

अथ बुधि[3] गाथा तीजी

राजा पाट सु रामं मो बैठां ही सौंपोजै छत्रं।
तो आवै आणंद जीवं, मुक्ति होइ सुख कंदं ।।

इति बुधि गाथा

★

अथ लज्जा[4] गाथा चौथी

राजा जु वंद्यो रांमं, करो मनोरथ पूरण कांमं।
भणो एम वासिरट, वांमां भट्ट मंत्री बुज्झं ।।

इति लज्जा गाथा

★

---

[1]लछी का लक्षण– २७ गुरु+३ लघु।
[2]रिधि का लक्षण—२६ गुरु+५ लघु।
[3]बुधि का लक्षण—२५ गुरु+७ लघु।
[4]लज्जा का लक्षण—२४ गुरु+६ लघु।

अथ विद्या[1] गाथा पंचमी

पुस्य नखत प्रभाते जोयौ, सुद्ध वेळा जोतखीयं ।
राज तिलक द्यो रांम, अज्योधा मांहे उच्छाहं ॥

इति विद्या गाथा

★

अथ क्षमा[2] गाथा छठी

इतरै धायं अवासे आई, मथुरा कैकई पासे ।
उछव कोणं सयांणी तो रटो हे मूरख रांणी ॥

इति क्षमा गाथा

★

अथ देही[3] गाथा सातमी

कपटी कपट कराए मामूसाले भरथ्थ मेल्हाए ।
राजा राघौ रचए मत्तय सर्व मत्री मतए ॥

इति देही गाथा

★

अथ गोरी[4] गाथा आठमी

कैकेई यौं कहए लहुडै कुंवर तिलकां ना लहए ।
मथुरी यौ समभावै रीसांणी रांणी रढ रचौ ॥

इति गोरी गाथा

★

अथ धात्री[5] गाथा नवमी

थातो दोइ यित्तए भरथ नै राज काज मैं रखे ।
राजा जाचि सु राणी म करिस ढील मूरख मति हीणी ॥

इति धात्री गाथा

★

---

[1] विद्या का लक्षण—२३ गुरु+११ लघु ।
[2] क्षमा का लक्षण—२२ गुरु+१३ लघु ।
[3] देही का लक्षण—२१ गुरु+१५ लघु ।
[4] गोरी का लक्षण—२० गुरु+१७ लघु ।
[5] धात्री का लक्षण—१९ गुरु+१९ लघु ।

अथ दूती[1] गाथा दसमी

रांणी इम रीसांणी तोड़य हारय डोरय तत्तांणी ।
तिथ कण राजा तितरै राजमहल आइ दसरथ्थं ॥

इति दूती गाथा

*

अथ छाया[2] गाथा इग्यारमी

देखे ए दसरथ्थ रट्टय इण विध कैकेई रांणी ।
पाट भरथ सोंपीजे रामं वरस चवदह वन रहै ॥

इति छाया गाथा

*

अथ कांती[3] गाथा बारमी

आखय दसरथ एहं उठि रांणी भरथहि राज देवं ।
कासा वसतर करि ए रामं लखमण हि सोंप रांणी ॥

इति कांती गाथा

*

अथ महामाया[4] गाथा तेरमी

तिलक विघन हुई ताम राजा राम लखमण सों रट्ट ए ।
करहु सहु वन महि वासं रामं लखमण जानकी जुत्तं ॥

इति महामाया गाथा

*

अथ कित्ती[5] गाथा चवदमी

पित सुण वचन प्रमांण पंचम सरित उलंघिया पारं ।
शृगमेर सर सिरारं गाम तजेय गंग तट रहए ॥

इति कित्ती गाथा

*

---

[1] दूती का लक्षण—१८ गुरु+२१ लघु । र. ज. प्र. में इसे 'चूरण' कहा है ।
[2] छाया का लक्षण—१७ गुरु+२३ लघु ।
[3] कांती का लक्षण—१६ गुरु+२५ लघु ।
[4] महामाया का लक्षण—१५ गुरु+२७ लघु ।
[5] कित्ती का लक्षण—१४ गुरु+२९ लघु ।

अथ सिधी[1] गाथा पनरमी

भारद्वाज भगत्तं विविध करी रांम लखमण जांनकी।
जळद फळ थळ जुगत्तं अतिथि धम्म करिय रिख अधिकं॥

इति सिधी गाथा

*

अथ मांना[2] गाथा सोळमी

वसहि इक किय वासं अनुचरं वात मरणपि तु अखियं।
तिल जौ जळ कीय तरपं पिता काजहि दांन दिय विविधं॥

इति मान गाथा

*

अथ रांमा[3] गाथा सतरमी

यथा– चितरकूट तजि चलहि अत्तर तपण थळ आये।
वन आसरम सिख्या दे अनुसूया अभरण चीर ग्यांन दिय उत्तम॥

इति रामा गाथा

*

अथ गाहो[4] गाथा अठारमी

सेत तुरग रथ सभियं, आए इंद इम अतरि रिम आश्रम।
एम रहसि मन रचियं, परिक्रम करि दरस अभिरांमं॥

इति गाही गाथा

*

अथ विस्वा[5] गाथा उगणीसमी

दिवस कतिक रिसगृहिय, रह एम सव निसचर करि नासं।
तिण पछि पचवटि तेम, रचि लखण थानक सुख रहियं॥

इति विस्वा गाथा

*

---

[1] सिधी का लक्षण—१३ गुरु+३१ लघु।
[2] मांना का लक्षण—१२ गुरु+३३ लघु। र. ज. प्र. में इसे 'मांणसी' कहा है।
[3] रांमा का लक्षण—११ गुरु+३५ लघु।
[4] गाही का लक्षण—१० गुरु+३७ लघु। र. ज. प्र. में इसे 'गाहेणी' कहा है।
[5] विस्वा का लक्षण—९ गुरु+३९ लघु। र. ज. प्र. में इसे 'वसंत' कहा है।

अथ वसिता[1] गाथा बीसमी

सूरपनखरी रखसी करि घण रुचि रतनु सुचिर बहु कपटं ।
सियपति इम वरस रसं, मन मैं लिय अतिहि मनोरथं ॥

इति वसिता गाथा

*

अथ सोभा[2] गाथा इकीसमी

तस सिय पति इम तवियं, कुण कुळ जनम करम किम करियं ।
सूपनखरि मम नामं वर विण फिरौं लहू नहिं मोह सम ॥

इति सोभा गाथा

*

अथ हरिणी[3] गाथा बावीसमी

यथा– सियपति इम कहि वचनं लखमण जति पास जाहु तुम सुंदर ।
लखमण तिय पति वचनं सिय पति लग गय सुपति वधु तूं ॥

इति हरिणी गाथा

*

अथ चक्री[4] गाथा तेवीसमी

रख जुत कंवळ करण सिय भय कर इम रचि वपु धसि भयकरी ।
सिय पति तिण दिस तमकं भय जुत लखण श्रवण स नासा ॥

इति चक्री गाथा

*

अथ सारौ[5] गाथा चोवीसमी

कुरर कुरर जिम कुररी धवतिय रसक तिम वदम करत धवइ ।
तिस खर दुसरय तह यहि वदन दुस अपन निज कायं ॥

इति सारौ गाथा

*

---

[1]वसिता का लक्षण—८ गुरु+४१ लघु ।
[2]सोभा का लक्षण—७ गुरु+४३ लघु ।
[3]हरिणी का लक्षण—६ गुरु+४५ लघु ।
[4]चक्री का लक्षण—५ गुरु+४७ लघु ।
[5]सारौ का लक्षण—४ गुरु+४९ लघु ।

अथ कुररी गाथा[1] पचीसमी

सुणि सुपनख दुख अति रुख मह हय मह गय मह पय चलि दळं।
तिय पति सर कर सरसं मारति सर खर दुव कर खर दळं ॥

इति कुररी गाथा

★

अथ सिंघी[2] गाथा छाईसमी

सुपनख लंकपति सरसं वचन रचन किय कथ अपतन दुख वय।
फिर कहि सिय तरुणि विहसि रघुवर लखमण नित जुत रहि ॥

इति सिंघी गाथा

★

अथ हंसी गाथा[3] सताईसमी

इम सुणि दसमुख सुवचन मन महि सुरत करत रिति सिय हरणय।
मातुल उठि तयत जितम हिरण तन धर कर रुचि हिममय ॥

इति हंसी गाथा

★

अथ सर्पणी[4] गाथा अठाईसमी

मरिच सुणिल दसमुख वच उठि तन धरि हिम किरण सुवरण मय अच।
जगतपति तरुणि जननि करण हरण तन धरि मठ निकट ॥

इति सर्पणी गाथा

इति गाथा उदाहरण संपूरण

★

पुनः अथांतरे छंद झंफटाळ[5]

यथा– रिस मेघ मत्त विसामय ताटक रिस फिर रस तयं।
झफटाळ झफातियं इण दोय नांमा दाखिय ॥

---

[1]कुररी का लक्षण—३ गुरु+५१ लघु।
[2]सिंघी का लक्षण—२ गुरु+५३ लघु।
[3]हंसी का लक्षण—१ गुरु+५५ लघु।
[4]सर्पणी का लक्षण—कुल ५७ लघु।
[5]झंपटाळ—'रघुवरजस प्रकास' में इसे झंपताल कहा है। लक्षण—प्रत्येक चरण में १४ मात्रायें और अंत में गुरु।

यथा– दिवस एक सिय देखीयें, पतिहि कहि मन मह पेखियै ।
आखेट काचन अग करो, धव कंचुकी कर ले धरौ ॥
रटि एम लखमण राघवं, नहिं कुरंग ए राकस नवं ।
फिरि सिया कहि ए ल्याविजै, जळ अन्न तद मुख खाविजै ॥

★

अथ अनुस्टप छंद[1]

यथा– आठ ए अखरा पायं च्यारे पाया सू ना मिळें ।
लहु गुरु गिणे पाय पंचम रस सयुत ॥
समये सातम पाए विखमं पहिला कहो ।

यथा– लखमण सिया सौंपो पांणि पिनाक नें सरं ।
ले धाए लार अग कै तिलोकोनाथ भी भ्रमं ॥

★

पुनः साख राजा भोज पिंगळ रो उदाहरणं

यथा– रे रे चरखा मां रोवें जद तो भ्रमियै तवें ।
रांम रावण मुंजायं तिया के केन भ्रामते ॥

★

अथ बिम्रखरि[2] छंद

आवं सूरां मत्तां आंणो, जिण तिण पाए इम ही जाणो ।
च्यारुं पायो सम्भे चावो, पटि दुव पद मिळ भेदां पावो ॥

इति भरहप्पगळमतात यथा

अगलो दीसै औ किण मातहं जव सू मारूं सर इक इक जहं ।
इम मन सोच मार सरइक्कह निणगत्ति पकडि पवण सत गुण तहं ॥
यथा– जग करता सब भावां जाण्यो पहिला जीव राकस पहिचांण्यो ।
सर सू मर राकस पोकारचो राम सद्दल खमण उचारचो ॥

इति द्विम्रखरी छंद भरह पिंगळमतात्

★

---

[1]अनुस्टप का लक्षण—जिसके चार ही चरणो मे ५ वा अक्षर लघु तथा ६ ठा व ८ वा गुरु और २ तथा ४ चरण का ७ वा अक्षर लघु हो ।

[2]विम्रखरी छंद मे १६ मात्रायें होती हैं ।

अथ पादाकुलति[1] छंद पिंगळ भास्करात्

यथा– आठूं सूरां मत्ता आंणो, जिण तिण पाए इमहि जांणो ।
च्यारूं पाया सम्मे चावो, पादाकुल गुर अंते पावो ॥

[य]था– बोलै सिय इम लखमण वांणी, जिय मधि रांम तणी ए जांणी ।
अबळा राक्स बहु विधि आखै, दुसट वचन सिय लखमण दाखै ॥
सुणि सिय वचन लखमण रीसाणा, वद मुख राम मुनी ग्रह वांणां ।
जय कहि रांम निकट भल जांणा, दसकंठ आए सिया हरांणा ॥

इति पादाकुलति छंद उदाहरणं

अथ चौबोला[2]

आठूं सूरां मत्ता आणो, जिण पद विखमे इमहि जांणो ।
चवदह पायां सम मधि चावो, चवबोला इम छंद वणावो ॥

यथा– पंचवटी यौं दसकंध पापी, थिर वेद लोप मति थापी ।
तापस वेस लियं यौं ततपर, सिय हरण दस सीस करे सर ॥

इति चौबोला छंद

छप्पय

दूहा– सरप आदि सहि पद सरस, छप्पय भाव अनेक ।
सेस उकति विवचौं मुरस, जत्र करै महि एक ॥

अथ कवित्त निरूपणं

प्रथम छंद उल्लाला

दूहा– पनरह मात्रा प्रथम पय, दुतीय तीन दस देह ।
त्रिय चतु इम ही परठवो, उल्लाला गति एह ॥

यथा– रावण सीता हरण कर इम, गिरध मग विचरो कियो ।
रुद्र रस करि धजा पताका, लडि रांमय वड जस लियो ॥

इति उल्लाला छंद

[1] पादाकुलति छंद का लक्षण—प्रत्येक चरण में १६ मात्रा और अंत में गुरु ।
[2] चौबोला का लक्षण—१६ और १४ मात्राओं के क्रम से चार चरण वाला छंद ।

अथ सर्व लघु सर्प नांम[1] छप्पय कथनं

तत्र प्रथम छप्पय लक्षण

दूहा– काव्य छंद ऊपर करो, अघ उल्लाला आख।
सेस सुकवि कवि वच सरस, छप्पय लक्खण दाख ॥

अथ सर्प छप्पय

मत पचास सत इक मिळै, दोयां ऊपर दाख।
सर्प नांम छप्पय सरस, भणै सेस मति भाख ॥

यथा– निसचर सिय कर हरण, विरख सिस पसुतर घर कर।
मम भजि तजि मुख भवन, करत सुख भवन अनत धर ॥
वन· उपवन तर सघन वसति, निसचर मधि सियवर।
धरत न वसतर पत्तर विकर भय, निसि दिन दुख पर ॥
तिर जटयर रिसत नरखित रहि सुख सिय वचन नरचन सब।
इम करत करत निस दिन कथन तन दुख सरित सुतरित तब ॥

इति सर्प जात छप्पय

*

अथ सर छप्पय[2]

सर नांमा छप्पय सरस, गुरु इक प्रथमें गाइ।
इक सो इक्यावन करो, वरणो सुद्ध वणाइ ॥

यथा– गिरवर वसि रघु लखन पवन सुत दरसण किय तहँ।
विपर वरण धर तुरत दुरत भव भव विद्रुरत जहँ ॥
सिय पति नम किय सरस दरस ध्रुव जनम असिस दिय।
मम ग्रह दुर दिन पवन वसत सियहि हरण थिय ॥
यह सुननहि पवन सुत हरख हुइ वसन अभरण रामहि समपि।
इम गगन गगन दस वदन जुत यह परचय कहि वचन कपि ॥

इति सर नामा छप्पय

*

---

[1] सर्प का लक्षण —कुल १५२ ही प्रकार लघु।
[2] सर छप्पय का लक्षण—१ गुरु + १५० लघु।

अथ सूर[1] छपय कथ्यते

दूहा– सूर सूर मधि वन्न वसु, तवि गुर लहु ताटंक।
भणै सेस वहु भाव जुत, सार घसत धरि अंक॥

यथा– गिर चितर रघु लखन वसत रित वरखय वित गय।
हनूमत करतय दरस परम पद जुगल जनम जय॥
परम पुरस हिय परस हरख मन वचन रचन कर।
मम सुण प्रण पति परम धरम हित तुम नर तन धर॥
वालि डरण वन वन विहरत डरत सकल वनचर विकळ।
तुम हतहु तिनहि परचयत दिन सब मरकट तुव परस थळ॥

इति सूर छपय उदाहरणं

*

अथ वसु[2] छपय कथनं

सूर वेद अग करि लहू, गुण गुर माहे गाइ।
चंद्र वेद अका चवौ, वसु इम छंद वणाइ॥

यथा– रघुवर इम कहि लखन सुनहु तुम वचन रचन मम।
घन रितु वित गय सकळ तदपि विहुं सुधि दिय नहिं हम॥
कित घन वह सुगरीव पतिन नहिं हय गय परठिय।
तब लखमण वहि तुरत धरण महि सुव नहिं हम सिय॥
कपिपति लखमण चरण गहि क्रोध समहु दयता दमण।
दिम दम सहस सु गमन दळ सुधि किय सिय चवदह भवन॥

इति वसु छपय उदाहरणं

*

अथ सद्द[3] छपय

दूहा– सद्द सिंधु गुर करि सरस, लहु जुग विस सत लेख।
गुरु मुख दुव जुत एक सत, सुद्ध छंद कहि सेख॥

---

[1] सूर का लक्षण—२ गुरु+१४८ लघु।
[2] वसु का लक्षण—३ गुरु+१४६ लघु। उदाहरण में ४ लघु कम हैं।
[3] सद्द का लक्षण—४ गुरु+१४४ लघु।

यथा– कवि तर तर लखि कटक भटक नट लटक घटक घट।
दुदुभि दुहूँ दिस दुगमह सुगम मनु असुर करण घट॥
छतर चमर धर सधरह करहिं जुध उछव घर घर।
फिरि फिरि दिस दिस विदिसि गहर सद गरजत गिर पर॥
जिण सद थरक घर थळ विथळ नभय भमय फण नागरा।
टळ टळय सकळ सुरसि वसहित भळ भळ भळमिळ सागरा॥

इति सद्द छप्पय उदाहरणं

★

अथ सख[1] छप्पय

दूहा– सिव मुख बंकाही धरो, सरल बीस सत सोइ।
सरब पंच इक इक परठ, सख छंद सिध होइ॥

यथा– गज गव अख पुणि गवय मयँद नळ नयळ जांमवत।
तपन सरभ वद वनित कर भवि दुर थहर हर दत॥
पणस दुरय मुख हणु कलय रुख जरथय कत्थय कहि।
वलिवत दधि मुख समुख सरभ धर दुव धरन रसहि॥
इक इक दमय लख लख अरब इछ्यण जुध बहु कहिरवपि।
रघुवर इम जलपयसु कपि कारज सभ सामत कपि॥

इति संख छपय उदाहरणं

★

अथ दीप[2] छपय

चंद दीप दीपां चवौ, नवौ जगण मति नेह।
अठारह इक सत लहु, कहू सहु निसदेह॥

यथा– दस दूव दखणहि दिसहि जनक सुत खबर करण जहँ।
जिण जळ विण मुख सुखत दुम्रत कपि वर गज मुख तहँ॥
स्वय प्रभा इक सकत तकल रघुवर दरसण जहँ।
सुभट विवर पर वरत करत जळ अचवन सुख तहँ॥

---

[1]सख का लक्षण—५ गुरु + १४२ लघु।
[2]दीप का लक्षण—६ गुरु + १४० लघु।

अवतरण रांम इण श्रवण सुणि ततखिण गवन सु मुकति किय ।
अमक वण ठवड अर घर कठय फिर पेखण लागी जु सिय ।।

इति दीप छप्पय

★

पुनः उदाहरण

चहुं दिसि दस चळ चलसि भुजग सल सलिस अधन भव ।
तल भूव जळ थळ विथळ विकळ कळ कळसि सेन तव ।।
कळ मळ जळ विन जीव पत्र गन दरस समय जर ।
जव जुत सुभट सुगयण देखि वन वन जुत तिहिं सर ।।
कर कर गहि संचर सुभट सुघर कनक सर कनक सव ।
सोय प्रभ जोगणि सरस त्रिख जुत तिण भट दरस छवि ।।

इति कजळध्वज छप्पय

★

अथ सुक[1] छप्पय

दूहा– स्वयं प्रभा जोगणि सरस, सुणे नांम श्री रांम ।
गत पाई उत्तम गगन, चढ़ी जोति हुइ वाम ।।
सुक गुर सत लहु वन सहे, कहे महाकवि राय ।
संख्या अट्ठ सु छंद इए, वरणौ सुद्ध वणाय ।।

यथा– अंगद गिरवर गति गगन महि गथि गांन किय ।
किम केकय कर कळह रांम वन सहित जांनकिय ।।
हुव किम जननिय हरण किम स जट जूट मरण जिय ।
सुणि कथ सव सपति प्रगट निरपतर पतर थिय ।।
हिय हरस करस मुगतय करग सरग सुदिस सहि सल सले ।
रघुवर जनि तन यज मरण सरण करण वन सभले ।।

इति सुक छप्पय

★

---

[1]सुक का लक्षण—७ गुरु + १३८ लघु ।

अथ सेखर[1] छपय

सेखर वंकां सेखरां, दुह दळ मांहे देख।
वरण सुद्ध कर चरण वद, साख पिंगळां सेख ॥

यथा– संपत जथ सुग्रीव सुण लंक गढ़ सु सरसिय।
सव जोजन जळ सधर कुधर घर कनक सुदरसिय ॥
खग अग विट चर वदन सदन तरतल करसिय थळ।
असन वसन परहरिय धरिय चित रघुवर तपवळ ॥
सपात वचन अगद सुण जोध सकळ हरखे जिया।
कूदण काज लंका लुळे सिध कांम हुइस सिया ॥

इति सेखर

*

अथ हीर[2] छपय

दूहा– वंका निध वणाय कर, हीरा कविता होय।
सेस सहस मुख कथ सरस, संख्या दसमो सोय ॥

यथा– जळ निधि तकि सहि सुभट भपण नह करत भभकत।
जळ अति रणथळ दुगम सुगम सहि जोध कह कत ॥
अंगद कपि प्रति अख दख वळ छळ दुव भला।
पगतळ गिरवर पेल हणु तद दीधह मला ॥
कसमसत कमठ धस मस धरण तरण रथ विथक्यौ नहि।
सिव आदि चराचर भय चकित जोध लंक भुक्यौ जहि ॥

इति हीर छपय

*

अथ भ्रमर[3] छपय

दोहा– आकासां धुर रचौ इक, सच्च भ्रमर गुंजार।
भार एक सत भेळ करि, संख्या सिव ततसार ॥

---

[1]सेखर का लक्षण—८ गुरु+१३६ लघु।
[2]हीर का लक्षण—९ गुरु+१३४ लघु।
[3]भ्रमर का लक्षण—१० गुरु+१३२ लघु।

यथा अथ हनूमांत वर्णनं

दिन सूरिज होइ दोइ गिरां गैणांग कीयौ गम।
किना नाळ गोळा भमाळ किना अनळ सु आगम॥
किना तेज होइ पुज किना पंखी इसर गत।
किना तारका अवध देख मूक्यौ देव पत॥
किना सरासन हथ सिव अज गव सूं छूट्यौ सही।
किना रूप धर रांम मन जव जव सू चल्यौ जिही॥

सुखम सु तम धर सधर दस रूप दरसाए।
गढ़ चढ़ गिरवर गणण पवल दिस पंठ सुमाए॥
तपन महोदर धमर घूम प्रति घर घर पेखे।
दहूँ दिस सिय हिय हेरि दरद मंत्रि वहु देखे॥
हणवत तह मन महि हरख सिय घर घर महि सोधिया।
भुरज विमर घर घर भमे कपि कांनन दिस मुंह किया॥

इति भ्रमर

★

अथ नर[1] छप्पय

दोहा– नरहर नरहर वरण धरि, अस्ठां सत्त ठवेह।
गुण नरहर रागांन करि, दुनी सुफळ होइ देह॥

यथा– तव हणवत उठि तुरत जणणि दिस चित धरि चाले।
गजगति हरि गति गमे सकळ कपि सिर हरसाळे॥
तुरत दुरत भव टूट तए जणु उडगण ताए।
वन असोक तिण महि महल सीता मडाए॥
सहस किरण जगमग जुगति सकत रूप सपेख सिय।
वानर वनचर कवन तुव तद रहस हणवंत हिय॥

इति नरस्योदाहरणं

★

अथ रतन[1] छप्पय

रतन नेत्र सो हीण रत, भट करि सूरज भेळ।
खड़ग खड मंडाखिलां, महियळ संख्या मेळ॥

यथा- असुर नयण हरि दरस तरणि तर मूल नसाए।
अनुचर तवि इम बचन रचन रघुवर हरि आए॥
सुणि रांवण मन सधर कुंवर वर अख कहाए।
रे रे वनचर कवन दवण जनु वन महि लाए॥
जूट परसपर मलज्यु घाव दाव घूमहि घण।
परवत उठाइ अर सिर पटकि तरण तेज कूदत तण॥

इति रतन

★

अथ गगन[2] छप्पय

दोहा- ताल गगन वंका तवौ, संख्या रतन सु सोइ।
सत ऊपर हर गुरु सरस, हरि गुण हित करि होइ॥

यथा- कहु कहु फिरि फिरि कहत चतुर मुख पास चलायौ।
असुर दमय कर करग कवण तुव किहिं दिस आयौ॥
कवण कवण तुव जनक जणणि तुव कोंण कयय जन।
किहिं दिसि तुव कहि थांन अमर कहिं अनुचर महु इन॥
कपि इम कहि कहि वचन सच लघु किंकर मम नाम दिय।
इण विध सुण उससे क्से किमाणुह कारज सिध किय॥

इति गगन उदाहरण

★

अथ गंग मनोहर[3] छप्पय

दोहा- गग मनोहर नाम गिण, दूव छपय ए दाख।
मनु गुर रौ तिय मान है, रतन कोस अभिळास॥

---

[1] रतन का लक्षण—१२ गुरु+१२८ लघु।
[2] गगन का लक्षण—१३ गुरु+१२६ लघु।
[3] गग मनोहर का लक्षण—१४ गुरु+१२४ लघु।

यथा- सुजनुज निज कर निकट सकट बिछुरण किम कीजै ।
बभिखण जहँ महँ बोल कहो लंका किहि दीजै ।।
हड़ हड़ हड़ हड़ हसत दसए दस मसत दसाणण ।
नखमित भुज पर निभत दिपति तिहि अधसिर आणण ।।
वचनहि निसचर उच्चरिय घ्रत कपास सिण राळ घण ।
लागहि अगन सहकर सघन फरकि फरकि घर घर वहण ।।

इति मनोहर छप्पय उदाहरण

*

अथ छिद्र[1] छप्पय

उपरला मांहे वरतारो छै ।

यथा- कहकि कहकि कर कूद मनहु सिव नयण लयण किय ।
दधि वाडव किन दहण महण मँह अनळ किनां दिय ।।
कनक कळस पुर लगहि सकळ सुख महल सिळगै ।
करभि किरण खर करग ससकि सुक सारस दगै ।।
इण विधहि अनेक राकस दहै अनुचर कपि रघु रांम रै ।
नखमित सतह तिरकुट सकळ वंदिय होळिय वानरै ।।

इति छिद्र

*

अथ गंग[2] छप्पय

चंद कळा दीरघ चवै, गंग कहो कवि छंद ।
सुमिरण सीता पति सरस, कहि मधि आणंद-कंद ।।

यथा दूहो कथा निरूपक

अच्च कूद मधि वार निधि, किय सिनांन टरि काय ।
राकस मारि अनेक रिण, पुनि आए रघु पाइ ।।
हरख वहुन रघु लखण हुइ, सिय सदेस सुणंत ।
मौज दीघ चूड़ामणी, कपि चिर कहि श्री कंत ।।

*

---

[1]छिद्र का लक्षण—१५ गुरु+१२२ लघु ।
[2]गंग का लक्षण—१६ गुरु+१२० लघु ।

अथ श्री रांम सीता संदेस श्रवणं हनूमांन मुखात् केकंधा समीपे हनू वाक्य

यथा– मिस पतर सिय देखि सेस जनु जीव देह सँग।
इंदु कळा उपमेय सरळ मनु दखण दिस गँग॥
पडिवा दिन कर पाठ नाठ किन ग्यांन सिसय तन।
कजळ तिलक तँबोळ हिन धरि पति रघुवर मन॥
तुव वियोग अभरण तजि दसा दुसह नहि जात सहि।
काणण असोक एकांत रहि इण विध हणुमत वचन कहि॥

इति गग

★

अथ ससि[1] छप्पय

दूहा– इंदु कळा मित बंक कहि, एक जुत्त धरि अंक।
ससि छप्पय इण विधि सरस, नाग सु कथ्यो निसंक॥

यथा– सुणि वच रघुवर लखण सुभट्ट सम कटक सज्ज किय।
सेतु बंध पर उतर भट्ट सांमंत हकक छिय॥
सेतु बंध मिव धरच पुहप जळ रतन पूज विध।
उदध मग्ग दुव तरण अगन सर रघुपती कर किध॥
द्विज रूप समद धर कर तुरत रांम सरण मन रच कर।
मणि रतन मुक्त धर पर सधर सोम जुत करण धरण धर॥

इति ससि छप्पय

★

अथ नरद[2] छप्पय

दोहा– वर पुरांणा मत वदो, कवित घरो करि कोड।
गीत गाय श्री रांम रा, हानै जिको न होड॥

यथा– समुद उतरि रघु रांम तांम वभीखण पाए।
वानर सुभट सु आदि रघु तव रांम मिळाए॥
ताव ताम मतंग देसाति पदवी दसी।
वचन रचन करि मिळण सरण सह सुख रस रसी॥

[1]ससि का लक्षण—१७ गुरु + ११८ लघु।
[2]नरद का लक्षण—१८ गुरु + ११६ लघु। उदाहरण में लघु पूरे नहीं हैं।

रघुपति मधि परवत लिखत तरत पतर जिम कमळ पर ।
सरवर महि निसचर डुवत रघुवर निसचर चळ सधर ।।

इति गरुड़

*

अथ ग्रीखम[1] छप्पय

दोहा– ग्रीखम रितु धरत्रि गुण कर, जळ ग्रीखम मँहि जोइ ।
संख्या नखमित सरब ही, हरि भज तरि भव तोइ ।।

यथा– वालि सुवन पग वंद आप दहकँधपुर आए ।
समाचार सहि दीध सुतौ रांवण सुणवाए ।।
सुणि किरोध परिजळिय जणहु सुर मुख घ्रत संगे ।
सत दस सिर किय रूप हजार भूपहि मन धार सु अंगे ।।
सिलहत पग कपि सहस तर घर घर इणि विध धर हिय ।
सिवर अरचन करि सकळ वळपय जळ अन घन सरव किय ।।

इति ग्रीखम

*

अथ मोहकर[2] छप्पय, अथ कथा निरूपक

दोहा– सभा तिरच्छी वालि सुत, मुनि तिरछा अन मंधि ।
मैं जांणी दहकंध सुर, कुण एही दहकंध ।।

यथा– महि सहि कहि कहि सरब वेग धावहु ज कमधा ।
सहि खहि घर घर खरद वहौ वहि अंगद बंधा ।।
लट लट चट चट नहट मिळै घट खळ मद भट कट ।
मार डार त्रिण मय इक थळ जांणहु दह जट ।।
आवासे दहकंध रै वृद वयठौ दौड़ कपि ।
कनक महल सिल नग कळस चूरण किय इक चोट मपि ।।

इति मोहकर

*

---

[1] ग्रीखम का लक्षण—१६ गुरु+११४ लघु। लघु मात्रायें उदाहरण में पूरी नहीं हैं।

[2] मोहकर का लक्षण—२० गुरु+११२ लघु। उदाहरण में लघु मात्रायें पूरी नहीं हैं।

अथ रंजण[1] छप्पय

दोहा– रंजण गुर सहि राग खट, सामंतां भट सूर ।
सेस लहू सेसौ वदै, हाफिळ गाफिळ हूर ।।

यथा– समाचार कहि सकळहि अंगद इम रघुपति अखै ।
मरकट भट सहिस घट जोधा सहि जूटत दखै ।।
देवां पति विहुं दळ ज सुणै संदेस सु प्रघळ ।
पौरस सौरस भटकि छुट्टै जनहु गोळा खळवळ ।।
हल हुकम हुकम हुइ दळ विहु खळ बळ दळ गोळा गुड़हि ।
रण रव दव बिहुं वद सवद महि महि गहि गहि गहि मुड़हि ।।

इति रंजण

*

अथ किसन[2] छप्पय

दोहा– किसन छंद श्री किसन रा, जनम दोय पिण जांण ।
गुर लहु अठोत्तर गिणौ, भणौ सेस दुव भांण ।।

यथा– हलकारे किय हुकम राम नीसांण रुडदे ।
रण तूरी संख रद्द भेर भेरी भरडदे ।।
दमामा दमदमक दमे तिण वार दमकै ।
जिण वेरा सुणि सवद उदधि मरजाद झमकै ।।
सिर सेस नमै कच्छप भमै सत मुनि ताळी चूकगिय ।
सूर सकट भूल्यौ मगहि पदम अठारह मदकिय ।।

इति किसन

*

अथ कनक[3] छप्पय

मेर सेर दुहु मान किय, सेस चाप सर चीत ।
सत वळ सेना कर सरस, करौ किसन चौ कीत ।।

---

[1] रजण का लक्षण—२१ गुरु+११० लघु ।
[2] किसन का लक्षण—२२ गुरु+१०८ लघु । यहां दिया गया उदाहरण लक्षण के अनुरूप नहीं है ।
[3] कनक का लक्षण—२३ गुरु+१०६ लघु ।

यथा– चढ़ै रांम सर चाप उतर दिस द्वारहि आए।
गोचर नल कपि वीर सँग जिण सेस सहाए॥
जोध सुपह सगरह दुवार पुरवहि दरसाए।
सत वळ सत नव कोटि दखिण दिस पोळ दिपाए॥
जोधार कोटि पछिम जुड़इ कपि कुमद जुत सेस सम।
चर गिरवर आणइ तिकइ दोळो खाइ कोटि दम॥

इति कनक

*

अथ ध्रुव[1] छप्पय

दोहा– ध्रुव अवतार धुरंधरा, जरा जुफत दस जोर।
मोही कूला मोहिया, चविदो फत चहुं ओर॥

यथा– चहुँ ओर चतुरँग गंग जनु संग गिरियं।
दळिय रोळ दुव गम झांफ किन भांन झिरियं॥
रोक नगर किय रात पात परधान पुकारं।
नव खण महल निमध कंध दह मुख ललकारं॥
वानर विय गढ पाळ जळ हळ वळ घर चहुँ ओर हिल।
कपि वपि दीठा कागरं महल चित्र सह महल मिळ॥

इति ध्रुव छप्पय

*

अथ भुवण[2] छप्पय

दोहा– भवण दूण इक हीण भण, जोध सूर कर जोर।
सेख लहू सेखां सवद, रटिहर गुण तजि रोर॥

यथा– कोसीसा चढि कपि वपि जणु मेर वणाए।
तरण सहस तनु तेज चमर चहु ओर चलाए॥
पीतावर वहु परठ धनस सायक कर धायं।
उर भ्रग लता अनूप करण कुंडळ झळकायं॥

---

[1] ध्रुव का लक्षण—२४ गुरु + १०४ लघु। उदाहरण मे लघु कम है।
[2] भुवण का लक्षण—२५ गुरु + १०२ लघु। उदाहरण शुद्ध नहीं है।

तेतीस कोटि चरणां तवै सुरपति गावै सेस रा ।
रुद्र ब्रह्म नारद रिखा त्रिभुवण नायक तेख रा ॥

इति भुवण

★

अथ धवळ[1] छप्पय

दोहा– रस नयणां रघुपति रटौ, गुर छाईसे गाइ ।
धवळ नवळ धरपति धणी, महिपति जैसे माइ ॥

यथा– रांवण देखै रांम तकि नंहि मन मंहि तांणें ।
दळ वळ मरकट देखि जूह जनु मद गज जांणें ॥
तीन भुवन सुर तिके अटक लंका मह आंणें ।
नरधि देवां नाग परण कर आंणी पाणें ॥
कपि नर मो सम वड किसी दस दिग मिळ ल्यायौ दळां ।
संकईस मन भाळ लखि खासी खिण राकस खळां ॥

इति धवळ

★

अथ कमळ[2] छप्पय

दोहा– कमळ छंद फुरलीय कमळ, सत्ताइसे सेस ।
अठाइसे सत अखि दखि, लहु गुर ही सहि देस ॥

यथा– मेघनाद मुख मांडर वदनहि गारगडदे ।
नव लग द्रव भानक गाज भेरी सगुददे ॥
करनाळां कर कुणकि भुणकि वीणादिक भणके ।
गोळवाण गंणागि साक सायक सभके ॥
रामायण रीढां गुरचि वजरह राकस वाहिया ।
करै एम कर कुधर सिरहर मरकट साहिया ॥

इति कमळ

★

[1] धवळ रा लखण—२६ गुरु+१०० लघु। उदाहरण शुद्ध नहीं है।
[2] कमळ रा लखण—२० गुरु+१८ लघु।

अथ तरळ[1] छपय

दोहा– तरळ बुधि सिव सिध तवि, मद मदकळ अरि मेर ।
सरद सार समरस सुसर, कथ सर दात क्रिपेर ॥
भर कर सर धर धर दुभर, मद मदकळ हो मांहि ।
चाल मनोरम वेस जद, तवि खर बुधि सहि ताहि ॥

यथा– गड गड नाळां गोड़ अरावां छूटै अगन ।
कुल यह वधि अँधकार गिणागहि देखै गगन ॥
घूम सोर हुय धीक भीक अँगार सु भुकै ।
खलभल दुहुं दिस खेचल जोधार सु चुकै ॥
निसरै थाट कपाट नभ राकस भय कर होय रवद ।
दौडिया नाग सिर पग दे नदि वरसाळहि सरित नद ॥

इति तरळ

*

अथ बुध[2] छपय

दोहा– साकण डाकण सकत मिळै हर ग्रीघां मांस ।
वर अच्छर वेताळ सकति सरसति सर हांस ॥
चुटियाळी चौसठि मिळै नारद पर मतं ॥
सूर रथ नहि सकि रचे रिणताळ सुरतं ।
डगमगति धरा कैळास डिग खेचर भूचर रिणखळां ।
वाजत वीण डमरू डमकि दुंदभि वाजे दहुं दळां ॥

*

अथ मद[3] छपय दूहो कथा निरूपक

दोहा– जिण वेळा सिंघू वजै, रीठ उडै रिणताल ।
हर जवू हरवळ हुये, अवभो नखै भूपाळ ॥

---

[1]तरळ का लक्षण—२८ गुरु+९६ लघु । उदाहरण शुद्ध नहीं है ।

[2]बुध का लक्षण—२९ गुरु+९४ लघु । उदाहरण मे लघु पूरे नहीं हैं ।

[3]'मद' का लक्षण नहीं दिया गया तथा 'तरळ छंद' के प्रारंभ में वर्णित छंदों की सूची के अनुसार यहां 'सिधि छपय' को भी 'मद' के पहले नहीं रखा गया ।

यथा– जेण वीच इंद्रजीत वज्र अंगद सिर वाए।
गदा टाळ किय गाज साज व्रख हाथ सुहाए।।
वड राकस कपि वांण वर मांहोमाहे मंडीया।
मोड़िया जंभ सिर मार कर वांनर दळे विहंडीया।।

इति मद छपय

*

अथ मदकळ[1]

दोहा– चार राकसे चाप वांण बूठा बिहु वीरे।
रघुवर वांणे रीठ सोणि चळ नाळ सरीरे।।
लोहित नाम सु लध चढि धड़क छप वीरे।
मछा मेंगळ मत्त घमन वढ़ि कंप सुधीरे।।
सिरां मेस सेवाळ से रघुवर राकस राड किय।
लोडता तुरंगम चक्र लगि थिर चर द्रुम आकंप थिय।।

इति मदकळ छपय

*

अथ मेर[2] छपय

दोहा– सिव नयणां जुग मां सरस, गुर करि गोविद गाय।
मेर छंद अहिपति मुणै, भणियहु एण सुभाय।।

यथा– रघुपति लगमण रीठ बाण इंद्रजीत विडारे।
रिण छोडे भग राकस सकति सरणो तकि सारे।।
मेवा अन वहु मेल वहु मेल दाग तिल जव फळ दीधा।
विधवत गुर घर पूज मंत्र सुणि सिग छुद सीधा।।
घुंभला पांन पंटा गठठि खिवरा कुंवर गु वाडिया।
सप्तपुर मगन पोधी समी होमे तरहु वाडिया।।

इति मेर

*

[1] मदकळ का केवल उदाहरण ही दिया गया है। ग्रंथ में दिये गये प्रमाण के अनुसार १२ गुरु और ८८ लघु होने चाहियें।
[2] मेर का लक्षण—११ गुरु + ८६ लघु।

अथ सरद[1] छप्पय

दोहा– वेदां सिव नयणां वदे, वंका धर नर वीर।
इण विधि छप्पय अहि पति, धरै महा कवि धीर ॥

यथा– सांपड सुधहि सरीर करै मंजण काया कज।
जपै मंत्र बहु जाप सिखा बांध किरपांण सज ॥
धर आसण मन धीर नीर इछद कर नेमां।
पर कर पावक पूज खांति दिग अरच सु खेमा ॥
देवाळय पैंठो दुगम गिरविर विच जिण नाहि गम।
अधार गुफा तरवर अधिक ता महि तमिता होइ तम ॥

इति सरद

*

अथ सर[2] छप्पय

दोहा– सरद मेर गुर कर सरस, सभ सु सामंत सोइ।
छत्र धीर पति चीत चवि, छप्पय सर इम होइ ॥

यथा– मेघनाथ मयमत्त आय दहकध जुहारिय।
दीरघ तात सु भुज सनेह कर ग्रीव सुभारिय ॥
आणण पिय रिण निरखि छोडत प्रांग सु थाई।
पूठ छोक मिळ सोक थियो धीरज मन ताई ॥
त्रिय ताम फरूकै वाम तन तिर जटा सीत धीरप तठै।
सोहाग अभै प्रिय तूझ छवि जैत छत्र हुइ सह जठै ॥

इति सर

*

अथ सार[3] छप्पय

दोहा– सार धार इव लार वद, धुरा धडक खटग्रग।
सेस सुकवि कवि वच सरस, सारा छप्पय सग ॥

---

[1] सरद का लक्षण—३४ गुरु+८४ लघु।
[2] सर का लक्षण—३५ गुरु+८२ लघु।
[3] सार का लक्षण—३६ गुरु+८० लघु।

यथा– रोम रोम हुइ रोर धुरा घड़ धड़ करि अगन।
टळै घोर दुखित मन मांद दीपके थयो मन ॥
चरण आदि कर चिन्ह महो छवि सहि मडै।
बभीसण लंकेस वाच त्रिहु लोकन खंडै ॥
लोह छक जोध आगा लगै वीर सुणै रिण आंगणै।
त्रिलोक नाथ त्रिजटा तठै भय नहि भवणहि सीता भणै ॥

इति सार*

★

अथ दाता[1] छपय

दोहा– गुर गुणचाळीसे गिणो, काळ छूत भी काय।
सायर चंदा इंद सर, दाता छंद बणाय ॥

अथ कथा सूचक दोहा

असुवर के सुर ओमके, जोधकंप रह जद्द।
ता मदुरे श्री राम तहा, रिख आए नारद्द ॥
देवां कुण आलव दियण, तव पौढ़े रिणताल।
रांम हुंकारो पख रव, पैसे नाग पयाळ ॥
गोढ़ हणू राखो गरड़, सेवग उभै संग्रांम।
करन सकै नारद कहै, राकस माया रांम ॥

यथा– गरड हुंकारै रांम तांम आगम रिण तठै।
पत्र मयूर सुपेख सहग दिन कर भा नठै ॥
राकस रिण तजि भूमि विवर महि जाइ सु पैठै।
फूट मुकुट तूनीर जुत्त दर्भासन बैठै ॥
सापेत लगन आग्या सु दीय रावण संघरि लंकरा।
प्रळय अगनि जिम करि पुरी क्रोधानळ मनु संकरा ॥

इति दाता उदाहरण

★

*टिप्पणी– इसके पश्चात प्रस्ताव के अनुसार दो छप्पयों के लक्षण व उदाहरण नहीं दिये गये, यह आगे के छप्पयों के लक्षण से भी स्पष्ट है।

[1]दाता का लक्षण—१६ गुरु+७४ लघु।

अथ क्रिपण[1] छपय

दोहा– क्रपण इंदु दुव चंद कर, नर नखदत गयु देस ।
छंद होइ विध इक सरस, सल्ह महा कवि सेस ॥

यथा– रांम चित कर तांम दांम दलेल सु दीधे ।
सुण मुनो वयण प्रसग स द्रग ए धर सर सीधे ॥
वागे पख विहंग निहग श्रहि गरुड सरूपं ।
कपि जोधा कर कळळ भे पडी लळभळ भूपं ॥
संख भरे जैत्रां सवद रघू सर घणु टंकार विय ।
छत्र झड़े रांवण श्रवण पड़े कहा रिपु कारविय ॥

इति क्रपण

*

अथ कांत[2] छपय

दोहा– कांत सख भेरी कळळ, छत्त जैत्र रण छाइ ।
कांत छंद हुइ सेस कर, भणियै एण सुभाइ ॥

यथा– राघव स॰ टंकार सूणै श्रवणे सर लग्गीय ।
कूडौ वर पाइ कुंवर कूड पूजी सु सकत्तीय ।
लंका गढ कपि लूव प्रबळ सेना रघुपत्तीय ।
दससीस तांम दूवौ दीयौ वैगा मोडौ वनचरां ।
उमरां साथ राकस अधिक सकळ सेन जिम संघरां ॥

इति कांत

*

अथ संगम[3] छपय

दोहा– सगम सगम सो सरस, जंगम जंगम जोड ।
निदळी संकक कर तिके, कथसा कवियण कोड़ ॥

यथा– घूम निघूम विघूम दुरत जुव राख दुवारे ।
सेनापति सपेख करै श्राकप करारे ॥

---

[1] क्रिपण का लक्षण—४० गुरु+७२ लघु ।
[2] कांत का लक्षण—४१ गुरु+७० लघु । उदाहरण अपूर्ण है ।
[3] जंगम का लक्षण—४२ गुरु+६८ लघु ।

माया रचि मातंग जोध दुव साथ बुलायं ।
हेकाहेकी हणू जोध बिव जांणे आय ॥
विन्है अद्रि वांणां विहुँड रज रज रिणवट रोळिया ।
वडि महा कपि जोध वद विहुंवा भीच विरोळिया ॥

इति जंगम

★

अथ जड़[1] छपय

दोहा– जुगां जोड़ सायर जिके, तिके गुरू कर ताइ ।
सिव नेत्रां सुर सौ सरस, गुर कर माहे गाइ ॥

यथा– रांम न मरियौ रीठ दीठ कर देख्यौ दुहुं दळ ।
छळ कर मारौं छिद्र करौ राकसी मिळे कळ ॥
प्रहसत कर पह वेय देय वाइक दुवाहा ।
सुणौ सांम अरदास सेस जिम होय सवाहा ॥
होय पूठ मांझी हलक पर दळ हणे पधारिया ।
कहै कौण संग कौण सू खबर देह हलकारिया ॥

इति जड छपय

★

अथ विदग्ध[2] छपय

दोहा– चौसठ लघु को नेम चवि, गुर चमाळिसे गाइ ।
सख्या अठोत्तर सही, लही महाकवि गाइ ॥
सुपह सिलावट अरथ सुणि, हुकम कियौ रिण हेर ।
प्रहसत बीड़ौ हाथ पर, माण दांण रिण सेर ॥

यथा– धुमनरासा धूम निसाचर सम हत नदं ।
कुंभ हणू कर कोप दुविध नर दुरीस जदं ॥
चुर चुरस बीधा च्यार प्रहस मूठे हत मफं ।
गिर रहचै सुगरीव विन्है गुड़ सालूद वफं ॥

---

[1] जड़ का लक्षण—४१ गुरु + ६६ लघु ।
[2] विदग्ध का लक्षण—४४ गुरु + ६४ लघु ।

प्रहसत पड़ीयो चापड़ै वह सथ पुळीया वप्प।
पेख दसा लंकाधिपती आरंभ कीधौ अप्प॥

इति विदग्ध छपय

*

अथ शृंग[1] छपय

दोहा– पैंताळीसे परठवौ, शृग भंग सो होइ।
सेस लहू सेसौ कहै, जदु सख्या करि जोइ॥

यथा– दळ चौरड डंबरे सभ्रू कुटुंब समांनं।
गमे गमे मद गाळौ मिळै गैवर मद भांनं॥
हैंवर रथ हळ हळीय वीर कळ कळीय विधांनं।
सेख कमठ सळसळीय दसे दिग टळीय धियान॥
चतुरंग चलाये दळ चतुर नीसाणे पडती नीहस।
दस सीस तांम दूवौ दीयौ वीर क्रोध चढ़ीया वीहस॥

इति शृग छपय

*

अथ अजय[2] छपय

दोहा– सेस रसां सम वड सरस, लहु एता कर लेख।
वचीया गुर ते विचखणा, सांकळिया कवि सेख॥

यथा– गिरवर सो गज दौड़ चूप चौदत चढीयं।
हीरा माणिक हेम टोप दस मसतक्क मढ़ीयं॥
जगमग जगमग जोत होत दस दिसा प्रकासं।
दिनकर सो दीपत सोम जिम अमी सहास॥
जगम रथ वहु जोतीया अत काय चढ़ी आवरै।
रांवण साथे रहचीयौ त्रिभुवण पति दीय तापरै॥

इति अजय

*

---

[1] शृंग का लक्षण—४५ गुरु+६२ लघु।
[2] अजय का लक्षण—४६ गुरु+६० लघु।

अथ विजय[1] छप्पय

दोहा– पांडव सिद्धां परठवौ, संताळीसे साथ ।
लहु गुरु इम ही सब लहौ, अहिपति कथियौ आथ ।।

यथा– गज चढीयौ गाजंत नाग नर अतक नांमी ।
साप बाण कर साही वहनइ खुवाहे वांमी ।।
फरी हाथ फरकत फेर त्रिस्सूळ फिरावै ।
त्रिसरा गज चढ़ि तांम अठ्ठ सुर सजुत आवै ।।
सिर दस छत्र कीधां सरस रावौ रामण चापड़ै ।
फरकंत धजा अधर फरक्क आवै रघुपति आपड़ै ।।

इति विजय

★

अथ वय[2] छप्पय

दोहा– गुर अड़चासां गाइजै, लघु कर छप्पन लेख ।
वय छप्पय वाखाणीयै, सेसौ कहै विसेख ।।

यथा– देवां देव दिनेस दळा कपि आयस दिज्जै ।
कटक चढ़ियौ कोड करै उच्छव जुध किज्जै ।।
हुक्म करै हलकार दळां पति बीड़ौ दीधौ ।
कपि पति कीधौ कोड लहू बीरा रस सीधौ ।।
सांफळै हुय रावण सिरै बीरे बीर बजाड़िया ।
कायरां होय आकप किय तीरे कीसा ताड़िया ।।

इति वय

★

अथ वलि[3] छप्पय

दोहा– गुणपचासा गुर करै, लहु चौपन करि लाइ ।
दरसत सिव नयणा सरळ, गुण वळि वंधण गाइ ।।

---

[1] विजय का लक्षण—४७ गुरु + ५८ लघु ।
[2] वय का लक्षण—४८ गुरु + ५६ लघु ।
[3] वलि का लक्षण—४९ गुरु + ५४ लघु । उदाहरण अशुद्ध है ।

था– रांवण विच रंढ रांण गवय गव अख मय गंजण ।
भिड़ै वीर भैभीत तांम कोपीया निभै तंण ॥
चत्र कोस सिर च्यार प्रलंब वाहै रांवण वप ।
वाणे रीठ बजाड़ सोर दीय गिरवर तर सब ॥
नाग बांण वाहे निहसि सुग्रीवा लगि निसचरां ।
जीव भूल पड़ियौ जरां आणे रघुपति अनुचरां ॥

इति वलि

★

अथ कर्ण[1] छप्पय

दोहा– पच्चासां गुर परठवौ, लहु बावनां लेख ।
सत ऊपर नयणां सरस, सांवळि करणां सेख ॥

यथा– रांण बांण कपि राज पडै रिण भूमि परट्ठं ।
वाजा असुर वजाड़ि नाख आवध कपि नट्ठं ॥
वीर प्रेत वैताळ सक्ती डाकण सु कहक्कं ।
खेचर भूचर खेल मिलै वीरां वहु झुक्कं ॥
कपि पति प्रलंबा कोड करि ऊठाडे कर आपरै ।
श्री राम निकट कपि पति रखै सायक काढ़ै सापरै ॥

इति कर्ण

★

अथ वीर[2] छप्पय

दोहा– सूर इक्यावन सांवळै, वीरा वीर वजाइ ।
सख्या बावनवी सही, कवि छप्पय कथ काइ ॥

यथा– हड हड रांवण हँसे दसण दस मुख दीपतौ ।
वेगौ हणवत वळै जरां मुख रांण जंपतौ ॥
हेक धीक हूं तनौ वाही दूजी तो मोनों ।
भलां भलां कपि वाहि डाव करि लीधा दोनों ॥

---

[1] कर्ण का लक्षण—५० गुरु+५२ लघु ।
[2] वीर का लक्षण—५१ गुरु+५० लघु ।

हीली हीली भाग हणु वाही धीक दुवांह री ।
पाड़ीयौ रथ मथ ऊपरां साकड़ अंग सनाह री ।।

इति वीर

★

अथ वैताळ[1] छप्पय

दोहा– ताळ कच्छ दुवताळ तवि, वीर धीर वेताळ ।
सख्या तेपनवी सही, रट अहिपती रसाळ ।।

यथा– उरड़ रांण ऊठीयौ चरड़ अधरा चावंतौ ।
करड़ करड़ कर कोप फरड़ सायक फावतौ ।।
घरड़ धरड़ दे धीक दरड़ वांनर कर दट्टै ।
खरड़ खेंगर खाड सरड़ कर भालां सट्टै ।।
हड़ हड़ै दसां वदना हंसै मरड़ मारदिय मच्छरां ।
लखण राम सनमुख लड़ै वैकुंठ वसि वर अच्छरां ।।

इति वैताळ

★

अथ वारता

इण प्रकार सूं दूहौ आवै सो वैताळ दूहौ कहीजै । छंद आवै सो वैताळ ही कहीजै, नै छप्पय तौ वैताळ छै हीज । गीया छंद नै वैताळ कहै सु तिण री जात जुई ।

वैताळ छंद उदाहरण

धम धम प्रथी पुड़ धधक धीकां भभक भौका भाप ।
दरड दौडै मरड़ मोड़ै सरड सायक साप ।।

इण जात नै अम्रतधुनि कहै जु मूरख, अखराडंबर कहै मो कवि मद ।

इति

★

अथ वहन्नर[2] छप्पय

दोहा– दीरघ नर तेपन दियै, चोपन छप्पै चार ।
छय्याळी लहु अक्षरा, पिंगळ लाभै पार ।।

---

[1] वैताळ का लक्षण—५२ गुरु+४८ लघु । उदाहरण शुद्ध नही है ।
[2] वहन्नर का लक्षण—५३ गुरु+४६ लघु । उदाहरण शुद्ध नही है ।

यथा– वीस भुजा फर वीस पांण कवांण परठै ।
थ्रोण पड़ै मुख सीस थिरै वहि कपि वर तठै ॥
घूमतौ रिण घाइ नील धिखतौ ग्रायौ नक ।
मच्छर गिरवर मूक कियौ सहि वांण चहूं चक ॥
दावानळ डूगरा एम वणीयौ रथ ऊपर ।
चाप ज सर दह चाढि कोप वांणै कर कूपर ॥

सोक रल दीध किसां सिरै रांवण रीछ रमाड़िया ।
त्रिभुवण ताप दीधौ तिकै जोगण वीर जगाड़िया ॥

इति ब्रह्मनर

*

अथ मरकट[1] छप्पय

दोहा– चौपन ही गुर परठवौ, लघु चमाळा लाय ।
मरकट छप्पै सेस मुणि, वरणां सुद्ध वणाय ॥

यथा– नीलकठ हैमरां नील हैमरां पयट्ठहि ।
ठाम ठास रथ नील नील खळ घनख वयट्ठहि ॥
नील मझ सारथी नील दह सीस दसाणण ।
नील छत्र सिर धजा जोध पेखीया जणा जण ॥
जाळ नल नील खळ जाळीयौ कूप रूप हजार कर ।
रघुनाथ भीच रथ रांमणह नील एम होमे निडर ॥

इति मरकट

*

अथ हरि[2] छप्पय

दोहा– गुर सेस सामंत सर, हरि छप्पय कर हेर ।
सेस लहू सेसौ वदै, जदै कदा कवि जेर ॥

जया– दावानळ कर दाव जांण नीलां नीलराज जळीजै ।
तांम राम जळरांण सास कर जीव सु लीजै ॥

---

[1] मरकट का लक्षण—५४ गुरु + ४४ लघु । उदाहरण अशुद्ध है ।
[2] हरि का लक्षण—५५ गुरु + ४२ लघु । उदाहरण अपूर्ण है ।

भागा कपि भडवाय लखण रघुपति कोप हरा तूं कूदीयौ।
दैत्य पलांचर पर्वत पडिवा चौरंग अगन घामे चढे॥
वहता भाखर बांण वढि वड भीच पाड़िवा वादतै।
सात जोध कपि छात चढि................................ ॥

इति हरि

★

अथ हर[1] छपय

दोहा– पांडव गुण दुय कर पढौ, एक जुत्त करि और।
संख्या सत्तावन सही, रटि हरि भजण रोर॥

यथा– गवय मयंद गवाखि, गहर सुर घन ज्यौं गज्जै।
हणू सुग्रीव सु हाक भीच भीचां सहि भज्जै॥
सूर लखण सक जोधार रोम पेखै कुळरीत कुळवट्टां।
आजोकौ दहकंध अच्छ उर घूक उभट्टां॥
सीखै सीख श्री रांम सब तक्कै लखमण ताकड़ै।
घाव डाव मूकै घणा सत्रां लीधा सांकड़ै॥

इति हर

★

अथ ब्रह्म[2] छपय

दूहा– सत्तावन गुर सांकळै, माहे मेळा गर्ग।
सिव पूजौ गावौ सकति, सुख ही पावौ सर्ग॥

यथा– कपि धीरपै कांई नांम श्री राम वात तवि।
लखमण गौ लकेस चाप सग्रहि वाणे चवि॥
नीछटि वाणं निहसि घाव विहसि बिलकुले बकारै।
सायक बांणा सोक सात भड़ मार सघारै॥
तीन मुर छत्र धजा सारथ मरे घोड़ा रथ चहुँ संघरीय।
सुकर दसे दस धनुस सू धनुस धनुस दस दस सिरीय॥

इति ब्रह्म

★

---

[1] हर का लक्षण—५६ गुरु+४० लघु। उदाहरण अशुद्ध है।
[2] ब्रह्म का लक्षण—५७ गुरु+३८ लघु। उदाहरण अनुरूप नहीं है।

अथ इंदु[1] छप्पय

दूहा– सर सिव गुर गुर कर सकळ, लहु छतीसे ल्याइ ।
गुण गुण सउ संख्या गई, गोविंद गुण मुख गाइ ॥

यथा– चाप वांण दस चाढि वेग धनु लखमण वाहै ।
वाढ़े पण छावीस व्रह्म दीय सकत सुहाए ॥
पडीयं पंजर फूट लखण धक घूण पड़्यौ धर ।
कीस भाल कर कर कळळ रांम सायक दीधा सर ॥
धरा धमकि अहि धड़हड़े कछर सेस अहिपति कांपीया ।
लखण सकति हीयं लगी चवद लोक भयचक्कीया ॥

इति इंदु

*

अथ चंदन[2] छप्पय

दोहा– गुणसठ माहे अडि लगण, लहु चौतीसे लेख ।
सख्या कीधी साठवी, कथिगा कवियण सेस ॥

यथा– हाथी होय हणवंत चढे राघवहि चलाए ।
लखमण पडीया जेथ तेथ सीता पति आए ॥
रावण रथ आरूढ बीस कर वाण सुहाए ।
तन तन कीधा तोड तीर धन पिणक सुहाए ॥
चोर विकळ कहि चापड़ै सिर अम सारथ मार सथ ।
वाकार वीर रिण भू विचै रांमण हाथी भांग रथ ॥

इति चदन

*

अथ सरभ[3] छप्पय

दोहा– गुर करि गोविंद गाइजै, आखा सारस आग ।
लघु रदना कर लेखगा, भरह सुमगळ भाख ॥

---

[1] इंदु का लक्षण—५८ गुरु + ३६ लघु । उदाहरण शुद्ध नहीं है।

[2] चंदन का लक्षण—५९ गुरु + ३४ लघु । उदाहरण शुद्ध नहीं है ।

[3] शरभ का लक्षण—६० गुरु + ३२ लघु । उदाहरण शुद्ध नहीं है ।

भागा कपि भड़वाय लखण रघुपति कोप हरा तूं कूदीयौ ।
दैत्य पलांचर पर्वत पडिवा चौरंग अगन धाये चढ़े ।।
वहता भाखर वांण वढ़ि वड भीच पाडिया वादतै ।
सात जोध कपि छात चढ़ि................................ ।।

इति हरि

★

अथ हर[1] छप्पय

दोहा– पांडव गुण दुय कर पढ़ौ, एक जुत्त करि और ।
सख्या सत्तावन सही, रटि हरि भंजण रोर ।।

यथा– गवय मयद गवाखि, गहर सुर धन ज्यौं गज्जे ।
हणू सुग्रीव सु हाक भीच भींचां सहि भज्जे ।।
सूर लखण सक जोधार रोम पेखै कुळरीत कुळवट्टा ।
आजोकौ दहकंध अच्छ उर थूक उभट्टा ।।
सीखै सीख श्री रांम सव तक्कै लखमण ताकडै ।
धाव डाव मूकै घणा सत्रा लीधा सांकड़ै ।।

इति हर

★

अथ ब्रह्म[2] छप्पय

दूहा– सत्तावन गुर सांकळै, मांहे भेळा गर्ग ।
सिव पूजौ गावौ सकति, सुख ही पावौ सर्ग ।।

यथा– कपि धीरपै कांई नांम श्री रांम वात तवि ।
लखमण गौ लकेस चाप संग्रहि वांणे चवि ।।
नीछटि बांणै निहसि घाव विहसि बिलकुले बकारै ।
सायक बांणा सोक सात भड मार सघारै ।।
तीन मुर छत्र धजा सारथ मरे घोडा रथ चहुँ सघरीय ।
सुकर दसे दस धनुस सू धनुस धनुस दस दस सिरीय ।।

इति ब्रह्म

★

[1]हर का लक्षण—५६ गुरु+४० लघु । उदाहरण अशुद्ध
[2]ब्रह्म का लक्षण—५७ गुरु+३८ लघु । उदाहरण अन्

अंगद वाली कथ अखै तोवय हूंदा तद्दही।
वार तिहतर परिक्रमण साखो सूरज सद्दही॥

इति सादूळ

*

अथ कमठ[1] छप्पय

दोहा– सूर कमठ छप्पय सरस, सिव नयणां रस सोय।
लघु रस जुग मां लेखवौ, हार मेर सिध होय॥

यथा– वीड़ो लै रघुवीर वचन सीता पति वदीयौ।
सकळ सेन सिरदार गुण उद्यम करि गहीयौ॥
अग हणू प्रति अख पवन सुत मौन काइ पकड़ी।
लै बीडो लग पाइ घड हुं पति कारज सो घड़ी॥
कप्पिराव पखराव कळि पवन सुत मन करै।
सपाति सगग गमनां गगन रघुवर मसतक कर धरै॥

इति कमठ

*

अथ कोकिल[2] छप्पय

दोहा– वेद रसां गुर कर वदो, सेस कवी कहि सत।
लहु चौवीसे लेखवौ, कोकिल छंद कहंत॥

यथा– जाइ हणू जोईयौ जोत परवत जगमग्गं।
हूके ही ल्यौ हेक सामटि परवत सगमग्गं॥
आणे खिण आंतरै गहर अबर घन गज्ज।
पूछा समटि पहाड़ लखै अैरावत लज्जं॥
जडी परस लखमण जीया कपि उच्छव करि कोड ही।
मंदोदरि राणौ मुणै जीव आस छुटी सही॥

इति कोकिल

*

---

[1] कमठ का लक्षण—६३ गुरु+२६ लघु। उदाहरण शुद्ध नहीं है।
[2] कोकिल का लक्षण—६४ गुरु+२४ लघु। उदाहरण शुद्ध नहीं है।

अथ वारता

इण मांहे अर्थ अंतरंग हूंत आणीजें बहिरंग न जांणीजें। अंतरंग नैं बहिरंग कासूं कहीजें सु तौ इण दूहा सौ लहीजें। दूहै केथ वताये कवि बुधि बल तें ल्यायौ सु तौ भरह पिंगळ में भाखौ जैरौ सेस सिरोमण साखौ। दूहौ एथ हीज किम कीजे ? आगैं ठौड़ नही छै बीजें। यथा उदाहरण जांणौ। पहिलां वार्त्ता थी पहचांणौ।

दोहा– आखै पहिला अंतरंग, लख्यण बीजै लेख।
वात हूंत जाणै विगत, दळपति चित्रक देख॥

अठै भाव लख्यण आगै फेर कहिसी हीज।

इति

*

अथ खर[1] छपय

दोहा– इखु सासतर गुर अखौ, सिव दूणा लहु सार।
संख्या छयासठ सो सही, पढि किण लाधौ पार॥

यथा– उठै लखमण आप हाथ अति डर कर अरि हर।
ताटकै रिण तूर सुणाया रांण मंगळ सर॥
घण मुदगर दे घाव तोमर घण मार सारथौ।
बरछी कुतल बीड़ धीब सकुलां धार थी॥
परमेसुर सुरपुर पकड़ि वद आणि बैठाणिहौं।
सची लछी सकती सहित त्रिदस थान जुत तांणिहौं॥

इति खर छपय

*

अथ कुंजर[2] छपय

दोहा– अगा अगे आंण गुर, कुंजर में गाइवो।
पगां चगे भाण लहु, कर माहे लेखवो॥

---

[1] खर का लक्षण—६५ गुरु+२२ लघु।
[2] कुंजर का लक्षण—६६ गुरु+२० लघु।

यथा– कुंभ जगावण कोड कहै वहु आरंभ कीधा।
हुये दैंत हलकार लट्ठ मुदगर कर लीधा ॥
दस हजार वड़ दैंत सयन मह लै जोधा सुध।
अंग अंग ऊपरा असुर तोड़ै वहु आउध ॥
ताकि ताकि हण घाइ तस जिम जिम जोधै भीकीयौ।
ढीकड़ी जांणि ना साठ उडि तिम तिम निंद्रा तोकीयौ ॥

इति कुंजर

*

अथ मदन[1] छप्पय

दोहा– मदनां मैंगळ मत्त, गुर सतमठै गाईजै।
सैमौ भाखै सत्ति, वतीसौ पति वाईजै ॥

यथा– अनुचर पाछै आई कुंभ तन निंद्रा कहीयं।
मदगर घावे मार रहै थकि नीद न रहीयं ॥
रांमण एम सुरह कुंभ राणी निंद्रा कथ।
जागै केम जुगत्ति तिकै परकार कहौ तथ ॥
उत्तर रांणी दीध तिम श्रवणे नाद सुणावसी।
जागवै कुंभ इणही जुगति किना काळ सोवै किसी ॥

इति मदन

*

अथ मोन[2] छप्पय

दोहा– सिद्धां रस्सां सांकुळौ, गुर एता कर गाइ।
तिय शृंगारां लघु तवौ, भरहां कथियौ भाइ ॥

यथा– राजा सुणी ही राज गीत गाए गंध्रवां।
ग्रेहां ग्रेहा गाज लाज एरावां अव्वां ॥
तांनां कानां तिक्के सुणै कुंभौ सळसळीयौ।
जाग्यौ एण जुगत्ती अधिक ज्यदां आकुळीयौ ॥

---

[1] मदन का लक्षण—६७ गुरु+१८ लघु। उदाहरण लक्षण के अनुरूप नहीं है।
[2] मोन का लक्षण—६८ गुरु+१६ लघु।

हाला हजारां घटां पीवै कुंभौ सोय हीं।
मेवा भैसा माणसां खाद्या खेमां खोय ही ॥

इति मोन

★

उदाहरण अथ तालंक[1] छपय

दोहा– आके रस्से आंणियौ, वांका अवस वणाय।
तियासी ले तेणरी, गिणती आंण गिणाय ॥

यथा– लोही लिद्धो भांत सोय कालेवौ कीधौ।
पूरै लागौ पोत एम प्रधांना लीधौ॥
काची निंद्रा कांई केम जगायौ कथ्थं।
सो धोवो मांसिल सोंध मांहै सो सथ्थं॥
आहचै कूंभौ आगै साहंचारै यूं सूर हीं।
भलां जाग्यौ कूभ तू पूरा कांमां पूर हीं॥

इति तालंक

★

अथ सेस[2] छपय

दोहा– सेसां दुव जम्मां दरस, सेसै कहिया सोइ।
इक्हत्तर सख्या अखी, लघू समासम होइ॥

यथा– ऊठै रांणां कूंभकरन्न आए राकंसं।
लेईस सीता लंक संक नांम नासंसं॥
कठा लाए कोड होड ना दूजी हल्लं।
प्रधाना पूछी इसी मावां ध्यावै सल्लं॥
जोधै वाधी जांण री साणां भाणां साह री।
आजे रामां हाम दे नी तो लंका जाह री॥

इति सेस

★

---

[1]तालक का लक्षण—६६ गुरु + १४ लघु।
[2]सेस का लक्षण—७० गुरु + १२ लघु।

अथ सागर छप्पय

दोहा– वा गुर गा गुर वो लिजै, सागर नागर सिद्ध ।
जा गुर पा गुर जोडिजै, केहर भागुर किद्ध ।।

यथा– लंका आया लोक सकना मांने सर्थ ।
कैळामां ओकार सार सीता सामर्थ ।।
आ आ ई ई अंग धार सोभावै धन्या ।
पुव्वां जम्मां पेख कोडि सों तापी कन्या ।।
क्रीडा मांडी कन्यका वायक्कां उच्चार ही ।
तो नौं मारै ताकड़ं ओतारां ओतार ही ।।

इति सागर

*

वार्ता– इण कवित्त मांहे अर्थ वहिरंग छै । सो अनेकार्थ भाव धुनि नव रस रौ संकर छै ।

दोहा– पिंगळ वहु देखे प्रगट, सकळ सिरोमणि सार ।
पल पल नित प्रति पेखि है, पूरण मारग पार ।।

*

अथ छप्पय पूर्वोक्त निरूपणं

दोहा– रस कळ सर कळ राखियै, गुर छप्पय महि गंग ।
अंते लहु ही लीजियै, सकर कळि महि संग ।।
तीक्ळ राखू तेय सू, चौकळ गग चहत ।
छंदोभंग न छंडियै, केई भग कहत ।।
सो तौ भंग न समुझियै, लघु दीरघ नहिं नेम ।
दोना मत्ता दाखवै, कहौ भगहि केम ।।
काव्य छंद मे कोविदे, भ्रम ही भागौ नाहि ।
गण कळ सख्या ना गही, मत्ता सख्या माहि ।।
सेख सिरोमण मकुर्चा, भरह न पायौ भेत्र ।
इण महि छै सोई अधिक, कवि कोविद नर देव ।।

वार्ता– क रासौ काव्य छंद कहत, सो तौ मांहे मत्ता हो लहंत ।
मत्रा किम करि ल्यावै, सो तौ प्रस्तारा समझावै ।
तारा उपजी प्रद्धा, वत्तां रौ पण कद्धा ।
खटकळ पचकळ खंडा, छप्पय सो नाही छडा ।।

गुर प्रस्तारे गाई, दस मत्ता दरसाई ।
गंग भट्ट कीय गुस्टं, पताका थी पुस्ट ।।
भ्रम ही सौ वह भूल्यौ, समकळ उपर चल्यौ ।
छपय समकळ नाही, सब कवियण समझाई ।।

दोहा– काव्य छंद समकळ नहीं, सो तौ समकळ छंद ।
वह तौ समकळ ही सही, विसम उलालै वंद ।।

पुनः– काव्य छद समकळ जिम जाणो, वह व्रत्तांत थी पहिचांणो ।
सो तौ समकळ नाही, विसम व्रत्त है माही ।।
खटकळ पंचकळ कहीय, सो तौ विखम कळा ही लहीयं ।
पिंगळ सारे बुझी, जोग अजोग न सुझी ।।

*

अथ मतांतर मांह, वारता

पहिल काव्य छंद मांहे व्रत्त कही, सो तौ गंग भट्ट नौ आददे कवीस सम व्रत्त कहै छै। तैसू आगै उलाला री व्रत्त उवेनै ही समव्रत्त कहै, सो तौ सच्ची, पिण बहत्तरमौं छपय सरव गुर हीज छै। जेथ निवेड़ो नाही। तुकै इक इक लहू छै। तरै काव्य छद मांहे आठ लहू रहिया। मौहर सो तौ आठ लहू समव्रत्त कहीजै। सो तौ पताका मांहे सपुस्ट छै। सो पण सच्ची। अन्य कविमर सकर सरीसा पिंगळसार रा जाणणहार सो कहै छै—गंग भट्ट भ्रामिल थौ, क्यौंज पताका माहे तौ समव्रत्त री जायगा छै। पिण विरत थी गिणीजै तरै तौ पहिला खटकळ पछै पंचकळ छै। तेथ ही विसम व्रत्त बुझी, जरै विसम सच्चो। तरै गंग कहै—पिंगळ सू प्रमाण छै कै नही, एण भ्रम ऊपजै। तिणे उपर नाळिक[1] दूहौ।

दोहा– सेस सिरोमणि ना सुण्यौ, सुण्यौ न पिंगळ सार।
भरह आदि दे ना भण्यौ, (तरै) गयौ जमारौ हार ।।

तर विसम सच्ची। प्रथम खटकळ आगै पचकळ। एती विसम व्रत्त फेर तठा आगळ दस मत्ता बुझी। तिण माहे दोय पचकळ पडिया, सो भी विसम व्रत्ता सच्ची। ए काव्य छद की एक तुकरा कही। सो तौ विसम व्रत्ता ही लही।

---

[1]परम्परा से चला आता हुआ दोहा।

विखम व्रत्ता मच्ची। प्रस्तार नस्ट उदिस्ट मेर पताका मरकटी आदि देनें सरव मारग मिसरत ही वुझी सो तो मारग इणँ ही सू भंग जांणियौ। सो तौ इण बात मूं मम विसम बात पक्की समझी। तरै प्रस्तार आदि दे नैं कविसुर यूं ही खेद करै। सम विसम हीज पढ़ियो चाहीजै। नैं चौकळ आदि दे नैं पहिलां गण पांच कहिया सोई सच्च, नैं प्रस्तारादिक गण सांच नहीं। इसडी वुधि थी पहिचांणी, तठा ऊपर नागराज री साख। यथा—वूझूं प्रस्तार गणां लहू दीर्घ व्रत्ता सम विमम, इति। फेर काळिदास, गंग, कासीरांम, माघ कवि, चिरंजीव भट्टाचार्य, नागराज इणां कविसरां रा पिंगळ री मत सगळो देख नैं पिंगळ सिरोमण रच्यौ।

मंतातर– खटकळ आगळ पंचकळ (एथ तौ विश्रांम) आगळ फेर त्रिकळ।

सो त्रिकळ तौ वुझी, पिण चौकळ भी सुझी।
सो चौवळ त्रिकळ वाद, नियम था ही उपणी नाद।
सो कथणी कवि ची काची, साख विनां नही साचो।
साख तौ रांमां वटुआ, सो लल्ल[1] पिंगळ का तटुवा।
भट्ट का विरद उपाया, सो गणेस चै तुत गाया॥

दोहा– सिवकळ पहिली समुझियें, वदौ जेथ विश्रांम।
आगळ चौकळ आखियें, धरौ काव्य ची घांम॥

वार्ता– एण वुध सौं त्रिकळ ची जायगा चौकळ वुझी। सब कवीयण नु सुझी।

दोहा– वौहत्तर छप्पय वडिम, आदि लहू गुर अंत।
त्रिकळ थां नै चौकळा, फेर वौहतर हत॥

वर्ता– वोहोत्तर छपय कहै, लहू गुर जां मे भी लहै। फिर त्रिकळ वरजैं, चौकळ तेथ धरजैं। इण विध फेर अग्गे, दूणो छद दखे।

दोहा– सकळ तास मे ना कियें, अनुमिय थिय हिय माहि।
पिंगळ छदा वर्णियें, जुक्ता मुक्त न जांहि॥

इति छपय छद वरणनं

*

---

[1]लल्ल भट्ट पिंगळ का प्रसिद्ध कवि हुआ है। उसने सिद्धराज जैसिंघ पर भी कवित्त कहे हैं।

अथ सवाया छंद

वार्ता– मत्ता दत्ता विरम मिळ वर कह्यौ, सवाया छंद सु नांम ग्रंथ री विस्तार का भय थकी उदाहरण माहे ही समझणो।

इति सवाया

★

अथ अनुक्रम गति

एक लाख, एक हजार आठसै वत्तीसमौं भेद, तिण थकी प्रसिद्ध छंद अनुक्रम गति कथन।

छपय छंद सूचक

मरहट्ठा दुमलाय हंसगति दीपक दख्यं।
लीलावति गति लल्ल चद्रकळा दंड विचख्यं॥
पदमावति चौबोल लोल कळ गंजण कहीयं।
सद्द नद्द कळ सार, धार अनुक्रम चित धरीयं॥
आठसै वत्तीस मात्रा वरणि, एक लाख हजार अहि।
मुचकुंद कुद अरविंद मिळि, रोम कुंदन दस सु कहि॥

इति सर्व छपय छद कथन

★

वार्ता– मागधी छंद आदि देनै केइक फेर प्रसिद्ध छंद छै। सो पूरब दिसी दखिण पछिम देस में जांणणा। मारवाडी मां प्रसिद्ध न छै।

दोहा– भग्गावां नर कुंभ थी, (तद) करै कोप श्री कंत।
तद कोवंड हाथे करी, मारकुवां भय मंत॥
देवा इंद्रां दुदुभी, जैत्र वजाए जोर।
सख कनाळ भेरी सघण, घरहरिया वहु घोर॥

इति कुंभ जुद्ध

★

अथ रांवण जुद्ध

अथ अम्रतधुनि[1] मात्रा छद संकर।

यथा– पाण राण मसले प्रगट, धड हड पड़ घड धांम।
झीका धीका रांण झर, त्वक्क निसकति काम॥

---

[1]अमृत धुनि मे पहले एक दोहा फिर प्रत्येक चरण में २४ मात्रा। इसमें ध्वनि विशेष का खयाल रखा जाता है। प्रायः वीर रस का ही वर्णन इसमे होता है।

उक्क कसक्कति वडिम बिहसति जुजु जयियत क्क्क कहकत ।
रयख्य खळभळ दृद् दुहु दळ गग्ग गयहय उम्भ भयनय ।।
त्थत्य थरकति त्तत्त तरवर उप्प परवत डुडु डगमग ग्रक्क कसक ।
फफ फनपति उभ्रु भ्रभ्रकति उद्ध धुनधर ।।

घर हर पर उव्वक, महिराहर व्रह मंड ।
प्फ प्फ फनपति फिर रहे, सुभ गगय नव खंड ।।

भग्गा गय नव खंडु डगमग घद्धु धुनिघर घ्घ घ्घ घहरत ।
नं नं निरखत च्च च्च चरवर छ छ दुव छर सख्य खरवर ।।
भ्भ भ्भ भटवर उल्ल सुलसति वह रति उडु डर कर ।
ढ्ढ ढ्ढ ढकदिय व्व व्व वारिय ज्जु ज्जु जन सब प्फ प्फ फरहर ।।

फर हर धज नेजा फरक, नरवर पति श्री नाह ।
धर तुव तर हर धरहरै, गिरवर पग जिम गाह ।।

पग्ग गिरवर ज्ज ज्ज जम पर सग्ग गय सब ननं नट जिम ।
घ्घघ घायल रस रस समक्कति गुघ्घ घूमति म्म म्म मदपिय ।।
उछछ छछक्रन उभ्भ भट जिम राम रटरिण घांमं घटमहि ।
उल्ल लसक्कति प्प प्प पड़ फिर मथ्थ पडि थिर भभ भटवर ।।

भ्भ भ्भ भटवर भूमि भर, नरवर तोड़ै नेट ।
खर दूखर त्रिमरा सळा, ज्ज ज्जी तेरण जेट ।।

जेट जित्तिय भट वर मित्तीय, द्द द्द दाणव उभ्भ भूपं ।
श्राण अग्नितिय ताम जित्तिय वजन मय द्द द्द कधर ।।
उ उ प पटकीय जैत्र जजीय मं म मगळ उघ्घ धजोय ।
सिद्ध चारण गध पस ध्रीप पुस्प पाणय ।।

इति अम्रत धुनि

*

अथ कथा सूचक

राम मिळै दगरय अमुर मिळै, मांनव आहि ।
रटं धमळ मंगळ रमाळ सिद्ध, चारण अप्रव महि ।।
पारजा तक पुहप, अमर वरमाळ उवारै ।
धूप दीप धारती, मद्दर आरती उतारै ।।

कुळ हमे वंस मंगळ कळस, तळै सूळ त्रिभुवण तणा ।
सग्रांम वधावै जैत्र सहि, देव रांम देवांगणा ।।

सावित्री सरसती सिवा आरती उत्तारै,
अंद्रांणी आणंद हूंत जैकार सुजाणै ।

चंद इंद्र चतुरांण वरण कुमेर निगम विप्र ।
विधि अनेक वाधाय पुहप वरसै कीरति विस्र ।।

दिगपाळ दसे सिर पुजवीय विजय विजय खत्री वरण ।
सोवनै थाळ मुगता बिसाळ सरणाई पंजर सरण ।।

देव मंगाया देव लक वड़ पुहप विमांण ।
राघव सीत आरोह संग सँग लखण सयांण ।।

चढ़ि चालतै रांमचंद घण तूर घुराए ।
अहि नर कपि सुर असुर संग रथ जख्य सराए ।।

सेव चले सहि देव संग पुहपें गंध्रप वरखिया ।
रांम दिखावै जैत्र रांमि हणु सिय रघु लछ हरखिया ।।

आदि अहनाणे अत्रि रिख, सकळ दिखाए सीत ।
ईखि ईखि मातंग गिरि, प्रभु आणद जु प्रीत ।।

★

अथ लघु गुर सम विसम मगणादि कथनं

खक्र वक्र नर नक्र चक्र मक्रा क्रति कुंडळ ।
सर पिंजर गुरु सक्र लहूता टकन मडळ ।।

सूर मेन सुर सग भार चित्री चर भल्लं ।
कोक आदि नर टक दुंद कहि कर भदु भल्ल ।।

परजाय पढ़ै परजा पढौ, लोम विलोम न नांम रस ।
लहु गुर सब ही इम लहौ, कर दुव दुव कर खर दुरस ।।

इति लोम विलोमादि लहु गुर सम विसम मगणगण समूह शृंखला

★

वध धी जांणणा पुनः गुर उदाहरण

सिंह सूर सांमत भड, चड च्यार दुव एम ।
आदि जु गिणती एण सू, जाणै कवि सविवेक ।।

मेघनाद ताटंक मुनि, तांडव नृत कहि तेम ।
दुव नांमां ही कर दखौ, जाणे कवि गुर जेम ॥

इति सरव गुर रा नांम जाणरा।

*

अथ लहू कथनं

वंध छत्र सर सरल तर, हार गुरू तहु मेर ।
रिण सूखम अहिमात्र गण, सर सरोज खर सेर ॥

इति लघु नाम कथनं

*

पुनः अर्थ[1] सूचना

वेद च्यार गुण तीन गण, खट अंग कर कहि दोय ।
नव अंका वंका गणां, हेरै कविवर होय ॥

इति सर्व अर्थ सूचना

*

दोहा– पिंगळ खट त्रिसत परठि, रच्यौ सिरोमणि राय ।
कवि मारग रूपक रचै, परगट मारग पाय ॥

इति श्री पिंगळ सिरोमणे रावळ श्रीमाल पाट पति तस्यात्मज कुंवर सिरोमण श्री 'हरिराज' विरचितायां, मात्रा प्रकरण नाम चतुर्थो ध्यायः ।

**

अथ प्रस्तारादि कथन

तत्रादौ सोडस करम लख्यण पूर्वोक्त

पहिली संख्या करम दुतिय प्रस्तार भणिज्जै ।
तीजौ सूचि म्यौ चतुर उदिस्ट चविज्जै ॥
पंचम नस्ट वखाण मेर छठौ सु पठिज्जै ।
कर्म पताका सप्त अस्ट मरकटि गिणिज्जै ॥
अस्ट वरण अठ मात्रिका, इम सोडस विधि आखियै ।
दीनों सुधार 'हरराज' कवि, उकत्ति सेस री दाखियै ॥

इति सोडस कर्म लक्षणं

*

---

[1] वेद=४, गुण=३, अंग=६, कर=२, अंक=६ ।

अथ आचारिज मत

प्रस्तार विना जांणा पहिल, सूची केमहि समुभभ ।
पढै आचारिज पिंगळो, मत लिय बुद्धी मभभ ॥

प्रस्न वारता

आचारिज रै मत री वात, सेस भेद सूं ना ठहरात ।

पुनः प्रस्न

सेस देव सूचि धुरी भासी, सेस सिरोमणि पिंगळ साखी ।
आचारिज रै मत सू भेद, जिणरी साख माहि छै वेद ।
वेहूं मारग सच्चे सही, साखां आणु पूरव थी कही ।
विधि विधि कवित्त अनेकां देस, आचारिज मिथ्या कि मिथ्या सेस ।
मनां विचार करौ बुधिवत, पिंगळ देस अनेका हूति ।
कुण मिथ्या दोनां नुं कहै, मत्त उत्थापै सुख ना लहै ॥

दोहा— पिंगळ अनेक उद्भुत्त प्रसन, लिखै ग्रंत कुण लेह ।
तद हरिराज विचार करि, बुध थी उत्तर देह ॥

वारता

छत्तीसू पिंगळ छै आदि, सो भी जिण तिण कीयो विवादि, कीय मन सूं हरराज विचार, सेस अचारज दोनू सार, आदि कूण अंतै कौण हुवौ, सेस आदि आचारिज चवौ, इण ही बुधि सू नही विचार, जं री साखा पिंगळ सार ।

दोहा— जद हरराज विचार करि, धर्मं धुरंधर धाम ।
सेसैं सोडस कर्म कहि, (पिण) आचारिज परिणाम ॥

वारता उत्तर

सेम महा उत्तम मति भाखो, सो पिंगळ मांहे अभिलाखो ।

तदुत्तर वारता

श्री सेस भगवान जद गिरवर पर गरुड नुं मिळिया सो तौ दोनां री उत्तम मति । सेस महा तीक्षण मति गरुड़ ही तीक्षण मति, तद तौ कठिणपणो दोना नौं लाग्यो । क्योंज कही अरु समभी भी तद सूची, अर प्रस्तार रो पूरव अर परन देख्यो । अज सूचि पहिला थी । कठिण प्रस्तार समुद्र्या बिना कठण सूक्ष्म को तीक्षण मति हाय, सो न विचारं, अर अनेक

आचारिज, माघ पंडित, कवि काळिदास लल्ल, हीरामणि, हमीर[1], दुरसौ कवि केसव, भोज, पिंगळ, भरह, सेस, इण आदिदे नैं और पिण कविसरां रा कीया, पिंगळ तिण विचार कीयौ ज सूख्यम मत पहिली चाहीजै तौ उत्तिम। तद आचारिजां प्रस्तार सूख्यम मति पहिलां कीयौ। अर प्रस्तार जांणियां बिनां कठण मत सूख्यम मति पहिलां कीयौ ... सेस मत री कीवी। सो छत्तीस पिंगळां रा कर्ता जो आचारिज हुता, सो आचारिज तिरस्कार कीवी। इण विध सगळा पिंगळ देख नैं हरराज बुधि थी विचार कीयौ। फेर विचार करै कि जेथ सेस-मत तेथ आचारिज मत थी मिळै नही। अर जेथ आचारिज मत तेथ सेस मत थी मिळै नही। हमैं हरराज तौ सेस मत थी गूथियौ थकौ आचारिज रौ हीज मत कहिसैं, क्यों ज सुगम सगळा कविसुर मारग समुझै।

अथ प्रस्तांन कथनं

★

भरह पिंगळ मतात यथा वरण प्रस्तार दरसयति

दोहा– ऊपर गुर ही अघकळा, सरसा पकति सार।
उण गुरु जब ही लहु हुवै, तेथ वरण प्रस्तार॥

एक वरण प्रस्तार	दोइ वरण प्रस्तार	तीन वरण प्रस्तार	च्यार वरण प्रस्तार	पांच वरण प्रस्तार	खट वरण प्रस्तार
S	SS	SSS	SSSS	SSSSS	SSSSSS
I	IS	ISS	ISSS	ISSSS	ISSSSS
	SI	SIS	SISS	SISSS	SISSSS
	II	IIS	IISS	IISSS	IISSSS
		SSI	SSIS	SSISS	SSISSS
		ISI	ISIS	ISISS	IS'SSS
		SII	SIIS	SIISS	SIISSS
		III	IIIS	IIISS	IIISSS
			SSSI	SSSIS	SSSISS
			ISSI	ISSIS	ISSISS
			SISI	SISIS	SISISS
			IISI	IISIS	IISISS
			आदि	आदि	आदि

---

[1]हमीर से तात्पर्य किसी प्राचीन कवि से है न कि हमीरदान रतनू से।

वारता टीका बालबोध यथा

ऊपर गुर कर नै वरण लिखणा, पहिलां गुर नीचै एक मात्रा देणी अर सरीखां सुं पंकति भरणी । उण रहे तेथ गुर दीजै । अर फेर सहि गुर हुवै तेथ प्रस्तार पूरण हुवी जांणीजै । अर हस्त क्रिया श्री गुर सांनिध्य सीखणी ।

इति प्रस्तार करण विधि

*

अथ उदिस्ट प्रस्न

दोहा– कित भेदां इण छंद कहि, वरण वृत्त प्रस्तार ।
लिख पूछै फिर लेखवै, कवि गण करौ विचार ।।

इति प्रस्न

*

अथ करण विध उत्तर

दोहा– व्रत्त लिखौ रूपक वरण, अंका दुव कर एक ।
गुर हीणे इक और दे, करौ उदिस्ट अनेक ।।

इति सेस मत कथनं

*

अथ आचारिज मत कथन

दोहा– व्रत्ति बिपरजय बोलियै, लघु अंका सिर लेख ।
लघु हीणै गुर लेखवौ, सास सिरोमणि सेख ।।

इति उदिस्ट

*

अथ नस्ट कथनं

दोहा– विण लिखियां भेदा वदै, प्रथम दूसरौ पाय ।
मत सेसां देसा मुणै, गण सम विसम उपाय ।।

उत्तर– वरण व्रत प्रस्तार वद, आध आध करि काय ।
विसम हीण इक और दे, नस्टां वस्ट वणाय ।।

इति सेस मत नस्ट कथन

*

अथ आचारिज मत कथ्यते

दोहा— आध ग्रंक समलहु लिखौ, ग्राधु ग्रंक कर काय ।
विसम एक जुत ग्राधु कर, नस्टा कस्ट वणाय ॥

इति ग्राचारिज मत नस्ट कथनं

*

ग्रथ वारता उदिस्ट री

एकण कवीसर किणी कवीसर नैं पूछियौ ज तूं कहि तौ जो तोनों उदिस्ट ग्रावै छै तो तीनू गण लिख देऊँ ग्रर गणा संजुत व्रत्त लिख देऊँ। इणरा कितरा भेद छै। वरण प्रस्तार रै मांहे तूं विचार कर मोनू कहि। इण भांति सूं कोई पूछै तरै उदिस्ट करीजे।

ग्रथ उदिस्ट करण री वारता

पहिला गणां सुं जुत व्रत्ति लिखियौ हुवै ग्रागले, तरै ग्राप उणां व्रत्तां रै ऊपर पहिला वरण हुवै। जिण ऊपर एको ग्रांक धरीजे नै वरण रै लहु गुरु री कारण कोई नही। तरै पछै तठा सु लगाय विवणां विवणी लिखीजे। नै पछै गुर वरण होई, जिण रा ग्रखरां रा ग्रांक टाळीजे नै पछै उणा मांहे एक ग्रोर भेळीजे। एक ग्रांक भेळ नै सरब ग्रांक एक कीजे नै पछै जोईजे—जितरा ग्रांक होय तितरमौ भेद जाणणौ।

इति उदिस्ट समझणौ

*

ग्रथ उदिस्ट रै माहे ग्राचारज री मत लिखीजै छै

वरण व्रत्ति विपरजय माडीजे। लघु ग्राक ऊपर एक थी लगाय विवणां-विवणा ग्राक लिखीजै। लहु ही गुर कीजै। एक ग्रोर माहे भेळीजै तरै उदिस्ट हुवै तरै कहियौ मन सू जाणीयौ न जाय तरै माहिलौ भाव इस्ट ग्रंग रंग थी समुझ्यो पड़ै कि प्रस्तार तौ विपरजय कह्यौ तरै कहियौ प्रस्तार विपरजय किण विध सौं कहै।[1]

---

[1] १.२.४.८.१६. ऽऽऽऽऽ पांच वरण उदिस्ट   १.२.४.८.१६ ।ऽ ऽ पांच वरण उदिस्ट

१.२.४.८.१६ ऽ।ऽ।ऽ पांच वरण उदिस्ट   १.२.४.८ ऽऽऽऽ च्यार वरण उदिस्ट

दोहा नाळिक

लहु ऊपर थी लेखवौ, सरभा पंकति सुद्ध ।
लहु तल गुर ऊंणे तरल, वरण महा मति वुद्ध ।।

भासा साची पिण मन माहे भ्रम ऊपनो । इण विध प्रस्तार हीज कहो छो । तरै फेर अनेक ग्रंथा सुं निस्चय कीवो । प्रस्तारादिक लहु थी पिण आचारजा रै मत थी नीसरै छै । क्यूं सरप री दोय गति कही । गिरवर पर श्रीं सेस भगवांन जद गरुड नै मिळिया तद केईक तौ कहै छै कि गरुड सेसजी री पूछ पकडियां था । तद प्रस्तार पिण सरप रै हीज आकर हुवै छै । तद तौ ऊपर लहु सो तौ पूछ रौ आकार नै नीचै गुर सौ मुख री आकार । तद तौ ऊपर लहु हीज हुवै नै लहु थी हीज प्रस्तार नीकळै, नै केहीक कहै कि मुख थी मुख जोडीया था नै यू हीज नीचा उतरता गया, नै पूंछ थी खीसता गया । सो तो पिंगळ जांणण वाळां चा मन मांहे भ्रम हीज रहियो । तद फेर सब आचारजां आदि दे नै अनेक प्रकार थी विचार करि नै दोऊं मारग सांच ठहराया तद दोनू ही साच जांणीया । तद लहु आदि देनै गुर आदि देनै दोनां विधा थी प्रस्तार जाणीया । विध दोनू साच । इण विध हीज नस्ट उदिस्ट आदि देनै और भी करम होय सो तौ दोना विधां थी सांच मानिया ।

अथ सख्या

दोहा– प्रस्तारादिक ऊपरै, एक अनूक्र अंक ।
अत हून विचणा वरण, संख्या होय निसंक ।।

वार्ता– प्रथम ही प्रस्तार एक सू लगाय नै छावीस पर्यंत मांडीजे । माहे विप्रति आणीजै नही, नै गुप्रति आणीजै । विप्रति वासूं कहिजे, फेर गुप्रति वा सू कहिजें । विप्रति रो तो लक्षण इंद्रवज्रा नै उपेंद्रवज्रा भेळो कहीजै सो तो विप्रत । पिण भेळो कीया थी छंदोभंग मालम न पड़ै तिण थी उदाहरण—

माहेसुरी देव करी नमीय, वंदे जेण आगम्म प्रयो करीयं ।

इण मांहे पहिलो छंद तो इंद्रवज्रा अंत । दूसरो उपेंद्रवज्रा अंत । आ तो देवळ भट्ट रै पिंगळ री साख सु इणां छंदां मांहे तो छंदोभंग दीसै नहीं, पिण श्रवण थी जाणजै । क्युं इंद्रवज्रा इग्यारै वर्ण प्रस्तार नै उपेंद्रवज्रा बारह वर्ण प्रस्तार तद भेद ठहरियो । सो आ ही विप्रति रो भेद जाणीयो । जिण थी विप्रति सम्यक कहीजै नै गुप्रति साम् कहीजै छै । एकण ग्रंथ माहे ऊगना नै छंद दोय सो गुप्रति कहीजै ।

उदाहरण

रावळ रांण नृपां वरीयं, कांति अदीत कथी कवियं।

ओ तौ कुंभवती छंद कहियौ। फेर रडा कहै।

पांणव इंद जिसौ कवि पढ़ै, रावां राव हरि हरां रटै।

ओ रडा छंद कहियौ। तौ रड्डा नै कुंभवती भेळी होय तौ सुक्रति भेद जांणणौ। क्यूज एकण व्रत्त थी ऊपना, नै दस वर्ण प्रस्तार मांहे जांणीया। तौ तिण सुक्रत भेद रा व्रत्त थी प्रस्तार लिखियां पछै एक आंक थी लगाय नै अनुक्र लिखणा, विवणां रै भाग नै अंतरौ आंक फेर विवणौ कीजै। आंक थाय तितरमी ही संख्या।

इति संख्या कर्म

*

अथ मेरु विधि कथनं

प्रस्न– सेस मत्त मांहे सरस, खड मेर किय रीत।
आचारज रै मत अधिक, करी सपूरण कीत॥

प्रस्न-अरहट्टा छंद

प्रस्तारां री पंकति मांहे, लहु गुरु किण किण ठाई।
एक घटै घण रूप भेद थी पूरण मेर वताई॥

अथ मेर निरूपण

अथ नारी छंद

कोठा अख्यर सख्या कर आद्रू अंतय एकू भर।
अस्वागतय बोले अहि, यो आचारिज भी सो कहि॥

इति मेर निरूपणं

*

वार्ता– किणै ही कविसर कोई कविसर नै पूछियौ के प्रस्तारां हूंदे वरण मांहे लहु गुर पकति किण विध थी जांणीजै, एक एक थी इण ही रीत थी मोनुं समभाय नै कहौ। जरै इण विध थी कहोजै—पहिलां पूछण री रीत कही, हमें केहण री रीत कहै छै। ज्यौं सगळा कविसर समझै जिण वरण थी जितरा वरण प्रस्तार पूछै, तितरां नुं अख्यरां री सख्या कर उतरा हीज कोठ करीजै, मेर रौ आकार हुवै। जिण रीत थी ऊपर एक कोठ करनै नीचै खण रासणा इण विध छाइसां पर्यंत तांई मांडीजै तद छाइस हीज खण रहै। इण विध थी

मेर री जंत्र[1] मांडीजै नै पछै आदी रै विखै नै अंत रै विखै एक-एक आंक दीजै। आदी अत एका आंक थी भरीजै। पछै अस्व गति कीजै। अस्व गति का सुं घोडा री चाल री गति मांडीजै तौ घोड़ौ किणै रीत मुं चालै जिका साख संख्या निरणै ग्रथ माहे कही छै· सख्या निरणै कवि चंद वरदाई रौ कहियौ छै।

दोहा– पंखी गति त्रिहुं पाइ पढि, चिहुं पग्गां चौडोळ।

पंखी इसौ नाम घोड़ां रौ कहियौ, सो रासा थी लहियौ।

साख रासा री, सजोगता रा समइया मांहे—

निसांणां निहस्सै किनां पंख नस्सा, उकस्सै जांणि काली उसस्सा।

आ साख रासा री। चौडोळ नाम हाथी रौ छै। जिका साख वारहट सुंदरसणउ डिंगळ थी कहै, सोरठा मांहे —

नेजा नीसांणांह, चौडोळा पर कसि चतुर।

---

[1] मेर री जत्र—

१

१ १

१ २ १

१ ३ ३ १

१ ४ ६ ४ १

१ ५ १० १० ५ १

१ ६ १५ २० १५ ६ १

१ ७ २१ ३५ ३५ २१ ७ १

१ ८ २८ ५६ ७० ५६ २८ ८ १

१ ९ ३६ ८४ १२६ १२६ ८४ ३६ ९ १

१ १० ४५ १२० २१० २५२ २१० १२० ४५ १० १

तो पछै ग्रस्व गति कीजै । ग्रादि ग्रंतरा लेय नै ग्रागला कोठा मांहें दीजै । इण विध कीजै, तरै मेर होय ।

ग्रथ कहण री रीत

पहिलां सहि गुर कहीजै नै पछै एक गुर घटीजै, ग्रनै ग्राचारज रै मत ग्रवर सु' जोईजै । पहिलां सरव लघु बताईजै, ग्रनुक्रम थी एक-एक घटीजै जरै मेर होय । सेस मत थी ग्रर्घ मेर पण होय सो इण ही ग्रनुक्रम थी ।

इति मेर

*

ग्रथ पताका

एक वर्ण पताका	
१	२

दोई वर्ण पताका		
१	२	४
	३	

तीन वर्ण पताका			
१	२	४	८
	३	६	
		७	

च्यार वर्ण पताका				
१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

पाच वर्ण पताका					
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	१२		
		१८	२३		
		१	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

खट वर्ण पताका

१	२	४	८	१६	३२	६४
	३	६	१२	२४	४८	
	५	७	१४	२८	५६	
	९	१०	१५	३०	६०	
	१७	११	२०	३१	६२	
	३३	१३	२२	४०	६३	
		१८	३२	४४		
		१९	२६	४६		
		२१	२७	४७		
		२५	२८	५२		
		३४	३६	५४		
		३५	३८	५५		
		३७	३९	५८		
		४१	४३	६१		
			४५			
			५०			
			५१			
			५३			
			५७			

दोहा– लघु गुर भेदा लाभिजै, मेर खंड ले माहि ।
थांनक किण ठहराइजै, सरस पताका साहि ॥

अथ पताका निरूपणं

दोहा– अख्यर दूणा एक थी, आख भेद लौ अंत ।
एक-एक थी जोड़ अध. लहु इध केन लहंत ॥
वेळा दुव आवै वरण, तजो जु संख्या तेम ।
तळ गुर तिण विण ओर तवि, जुज्जु पताका जेम ॥

इति श्री आचार्य मत पताका उदाहरण

*

अथ सेस मत कथ्यते

दोहा– अण आयोगण आंणिजै, अधक भेद नहि अंत ।
अनुक्रम भेदां आखियै, कविहु भुजंग कहत ॥

इति पताका कळा भेद गुरु लहु कथन

*

दोहा– कळा भेद गुर लहु कहूं, वरण चरण जुत व्रत्त ।
तव हरिराज विचार तवि, चतुर मरकटी चित्त ॥
चतुर मरकटो चित्त पंक्ति, वृत्त रस मु पठिज्जै ।
मुर द्वे थी क्रम मत्त कवि, दूव दुतीय वरिज्जै ॥
तिवणे तिग्र अक बोल वळे, दुव चौथी विवला ।
रस पाडु मुख पग्ठ धरो, करि तिसर सुकळा ॥

इनि मरकटी कथनं

*

गांठि पकति चौ जंत्र गिण, व्रत्त आदि दे वद ।
मात एक आदू मना, दुव थी दुसरे दुद ॥
व्रत्त भेद लहु अत थी, गुर व्रत करो प्रकास ।
पढ़ि कर लहु कळ प्यड की, वदो कवास विलास ॥

इति जत्र निरूपण

*

अथ लहु वत गुर वत कळा भेद व्रत्त लहु गुर कथन

अंत अक थी पूरव आक, नेम गुरु लहु लिखो निसांक ।
अद्धो अद्ध भेद यू असै, दद सूक सूचि क्रम दसै ॥

इति सूचि प्रस्तार

वृ	१	२	३	४	५	६	७	८
मे	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
क	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१३४४	३०७२
व	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६	२०४८
ल	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४
गु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४

वृ	१	२	३	४	५	६	७	८
मे	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
ल	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
गु	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
ल	१	४	१२	३२	८	२९२	४४८	१०२४
गु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४
क	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१३४४	३०७२
—	—	—	—	—	—	—	—	—

दोहा– प्रस्तारां वरणां परठि, लहु गुर भेद लखाइ ।
छंदोविद भेदां चवै, करो न कवि करवाई ॥

इति वरण प्रस्तार उदिस्ट नस्ट संख्या मेर पताका मरकट

*

आचारिज जंत्र सूची कथनं—अथ मात्रा कथनं भरह पिंगळ मतात

दोहा– मत्त सकळ गुर मेर सम, मत्त विसम घट मेल ।
कळ आदें गुर थी करो, भरह पिंगळ भेळ ॥

इति मात्रा प्रस्तार

*

अथ वार्ता– तद हरिराज विचार चित्त थी करै कि मात्रा प्रस्तार रौ कांम किण जायगा पडीयौ सु कारज कारण तौ क्यौं हो जांणीयौ नही । मात्रा छंद माहे तौ सम विसम रौ होज भेद छै । और तौ क्यौ होज जांणीयौ नही । तद तप्पागच्छाधिराज नायक कुसळलाभजी सू पूछियौ कि हे मुनिवर थे सर्व वर्ण माहे भेद काढ़ीया । मत पण दोय ठहराइया । एक तौ सेस मत, नै बीजो आचारिज मत, पिण मात्रा प्रस्तार किण मत माहे ठहराईजसी । एथ तौ भ्रम उपजै । मन माहे सदेह एक फेर छै । पहिला वरण छद किनां पहिलां मात्रा छंद ? नै आप तौ पहिलां वरण छंद फुरमाया नै पहिला अन्य पिंगळ माहे मात्रा छंद मे मात्रा प्रस्तार' पिण पहिल हीज छै । सु श्रीजी काईं साख किण ही ग्रंथ माहिली साख काढ नै फुरमावौ ज्यौ मन रौ सदेह दूर होई, जिणां री साख पिंगळ सेस सिरोमणी माहे कहै छै सो तूं सुणी ।

दूहा नाळिक

वन्न-छंद पहिला वरणि, आगळ मत अधिकार ।
सेस कयौ सुकदेव सू, साख सिरोमणी सार ॥

साख फुरमाई सो सही, पिण मत्त भेद पहिलां आप फुरमायौ हुतौ सो सेस सिरोमण री साख तौ मतातर माहे ठहरी । तद साख नरवरी माहे कहै जिण रौ कवि नरवर जात रौ खत्रेटो सर्व सासत्र रौ जाणणहार, नै सर्व आगम निगम रौ जांणणहार । माहालनी सो एक दिन आई ठानुं अस्थरा जुत्ता, साख कही सो सांच । पिण देसातर लोक ठहरी । जिण ऊपर सामंत कहै । वचन तिहारो होई थाणा रस, मिळन अस्यरां मत्ता । आही साच, जिण ऊपर आगम री साख आंणो मात्रिका न्याम माहे । 'एता वर्णस्य मात्रिका इति' । इण पद थी पिण समुझी पड़ै कि वर्ण री मात्रा कही । विण मात्रा हदा वर्ण नाही । इण विध

मात्रा लोका मांहे पिण प्रसिद्ध । फेर इणां साखां नूं निसेध करै । नागराज ग्रंथ सो सर्व देसां मांहे प्रमांण ।

प्रस्न— साख चौ मत्ता गण चरीयं, वन्ना गणाय ग्रघोविरथरीयं ।

इण थी तौ सर्व वार्ता निसेध जांणी, तरै कहीयौ—नागराज तौ सेस सिरोमणि ऊपर कीयौ छै। तद फेर कहीयौ—मात्रा छंदा रौ तौ मन मांहे सदेह छै सो फुरमावौ। तिकौ कहै—मात्रा जितरा कवि पहिलां करै सो मात्रा श्रा सावित्री रूप छै, जिण नूं उपासन होय सु पहिलां मात्रा छंद हीज करै नै आपे तौ ज्यौ ग्रंथ री रीत तिण ही विधि थी करां छां सो आपां नुं पिण दोस

---

[1]मात्रा प्रस्तार (पृष्ठ ११५ की टिप्पणी)

—एक मात्रा प्रस्तार—
I

—दोइ मात्रा प्रस्तार—
S
II

—तीन मात्रा प्रस्तार—
IS
SI
III

—च्यार मात्रा प्रस्तार—
SS
IIS
ISI
SII
IIII

—पाच वर्ण प्रस्तार—
ISS
SIS
IIIS
SSI
IISI
IISI
ISII
SIII
IIIII

—छः मात्रा प्रस्तार—
SSS
IISS
ISIS
IIIIS
ISSI
SISI
IIISI
SSII
IISII
ISIII
SIIII
IIIIII

—सप्त वर्ण प्रस्तार—
ISSS
SISS
IIISS
SSIS
IISIS
ISIIS
SIIIS
IIIIS
SSSI
IISSI
ISISI
SIISI
IIIISI
ISSII
SISII
IIISII
SSIII
IISIII
ISIIII
SIIIII
IIIIIII

कोई नहीं । फेर सम विसम रो पण सनेह छै । नै वरण मांहें तो आप ग्रंथां री द्रस्ट करनै गण बताया, जिके मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण नै नगण इण विध आठ गण कहीया नै इणां माहे गणां हुंदी संख्या क्योंकर जांणी पड़ै ।

दोहा– सर्व अंत मधि आदि गुर, विध चौकळा वखांण ।
कगू मग आदेस कहि, जण दुव जण घण जाण ।।

इण विध पांच गण नै पांच गणां रा नांम कहीया सो छंदमंजरी थी लहीया अनै विसमादिक तो भेद सम विसम वर्णां माहे पिण कहै छै सो सम विसम चौ कारण वरणां मत्तां रां छंदां में क्युं नही ।

अथ सख्या कथन

पूछत मत्त प्रस्तार पर, एक दोय दे अंक ।
जोड़ अधोगति इण जुगति, सख्या होइ निसक ।।

इति सख्या

★

अथ मात्रा उदिस्ट कथनं, सेस मतात

दोहा– सीह गती करि अंक धरि, गुर तिर जग गति गाइ ।
कळा मध्य पर हो कहो, उदिस्टा अधिकाइ ।।

इति उदिस्ट उदाहरणं

★

अथ नस्ट कथन

दोहा– पूछत हो मत्ता पकड़ि, एक आदि दे अंक ।
मत्ता अत घटाय मिळि, नस्ट होय निरसंक ।।

इति नस्ट कथनं

★

अथ मेर कथनं

सुत्राचारिज मतात्, सिव सेखर ग्रंथ मतात्, सेस मत्त खंड मेर होय जिण थी भाचारिज मत सुगम ।

दोहा– एक आदि रच्चहु अदिल, चक्रित गण करि चंद ।
पुरण मेर मत्तां प्रगट, कळा होय सहि छंद ।।

पुन. दोहा गरुड़ धुर पिंगळ मतात्

पंखी गति पहिलां परठि, हंस गमन फिर हेर ।
दुव खंडी दुव हंस दळ, जालिम मेर दुजेर ।।

इति मेर कर्त्तव्यता

*

अथ चौकोण यंत्र

(केई एक सर्वतोभद्र कहै छै)

लहु थी गुरु गुर थी लहु, सेस मेर थी भरिजै सहु ।
कूण तीन कीजै चौकोर, इक दुव गुर दीजै सहि ओर ।।

दोहा– छंद विपरजय छाडिजै, लहु गुर लीजै नेम ।
मेर पताका मरकटी, कहै सुतर निध तेम ।।

वार्ता– छंद रा विपर्जय छोड देणा । समादिक लेणा । विममादिक छोडणा । गुर थी लहु, लहु थी गुर इण भांत थी नीकळै । जिण विध मेर पताका मरकटी माहे कहै, तिण विध सर्व कहि देई । जिण विध द्रष्टात कहि देई—

दोहा– सुतरु कहीजै कल्प सो, मन वांछित फळ मेल ।
मेर पताका मरकटी, जन्न छद सोह जेल ।।
लहु गुर माहे लाभिजे, रचौ छंद सरमाइ ।
सर्व भद्र चौकी सरस, चतुर सेस चित चाइ ।।

अथ प्रश्न, पताका

गुरु लहू किण थी गिरथ, थांनक विण ठहराय ।
कळा गिणै पूछै करै, तेथ पताका ताय ।।

अथ धजा पताका भेद

अद्ध उरध तिय यग अधिक, एक आदि रचि अंक ।
गही गमन सामद थी, सेसै वह्यौ निसंक ।।

इति धजा यंत्र उदाहरणं

*

अथ मरकटी

रस पमती पहु रटहु, कवि गग आगु कीजै ।
दूर कळ दुनोय दलेग, इग विध दोय भरिजै ।।

पताका यंत्र

एक कळ पताका
१

दोई कळ पताका	
१	२

तीन कळ पताका		
१	२	३
३		

च्यार कळ पताका			
१	२	३	५
	३		
	४		

पंच कळ पताका				
१	२	३	५	८
२		५		
४		६		
		७		

१						
१	१					
२	१					
१	३	१				
३	४	१				
१	६	५	१			
४	१०	६	१			
१	१०	१५	७	१		
५	२०	२१	८	१		
१	१५	३५	२८	९	१	
६	३५	५६	३६	१०	१	
१	२१	७०	८४	४५	११	१
७	५६	१२६	१२०	५५	१२	१

आदि दूसरो अस्थ अंक, ले तृतीय बुलावै ।
पंच च्यार रस परठ, जेन मरकटी मिलावै ।।

इति मरकटी

★

(पृष्ठ ११६ का शेष)

सर्वं तोभ

	१		२		३	
३	४	३	५	७	१०	३
	७	५	८	१०	१३	
२	६	१०	१०	२०	१५	२
	११	१६	२८	३०	२८	
१	१४	१६	२७	३	२६	१
	३		२		१	

अस्ट कळ यत्र

१	२	३	५	८	१३	२१	३४
	३		८		२१		
	४		१०		२६		
	६		१२		२६		
	७		१६		३१		
	९		१८		३२		
	१४		१९		३३		
	१५		२०				
	१७		२३				
	२२		२४				
			२५				
			२९				
			२८				
			३०				
			३८				

माघ्र का धजा यंत्र —

गु	ल	क	ग	मे	गु	ल
२	७	६	३	८	१	४
१	५	१२	१	१६	३	२
४	७	२८	२८	१५	५	४
१	१२	५६	३६	११	८	७

३ ५ ८	४ ७ १	५ २ ४
४ १ २	१८ १७ २१	६ ८ १०
५ ३ ८	२३ २५ २७	१२ १४ १६
११ १४ १८	२१ ३१ ३३	१८ २० २२
११ ११ २० २३ २४ २६	३५ ३७ १ ३ ५ ७	२४ २६ २८ ३० ४० ५० १००

१ | ५७ | ८	| ११ १८
२२ | २५ | २७	३१ | ५४ | ४५
७२ | १३६ | २६१	२७१ | ७८५ | १११
८७२ ५८५ १००	११११ १११ ०० ०
७५ १११ ८	३।४ ५५ ७
८।१७ ११८ ८८३	११११ ५५१ ११११०
९५४ ७।७२ ८८४	५८५ ४५१ ७७७१
५ | १५ | २५ | १११५	५२ | २३ | १४५ | ८५

ग	१	२	३	४	५	६	७	८
मे	१	२	३	५	८	१३	२१	३४
क	१	४	८	२०	४०	७८	१४६	२६२
व	१	३	७	१५	३०	५८	१०१	२०१
ल	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०
गु		१	२	५	१०	२०	३८	७१

अथ सूची

अख्यर उत्तम अर्थ गति, रावळ किय हरराज ।
हंस कवी इण हेरवै, हुय पिंगळ ची पाज ।।

इति श्री रावळ माल पाटपति तास कुंवर सिरोमण
हरराज विरचिताय पंचम प्रकासः

**

अथ अलंकार वर्णनं

अथ काव्यलिंग

काव्य लिंग जिय जुगति सौ, अर्थ समर्थ अहोय ।
मैं जीत्यौ तोनौ मदन, सिव मो हिय में सोय ।।

इति काव्यलिंग

*

अथ हेतु

हेत अलंकृत जब हुवै, कारज कारण संग ।
जो कारज कारण जवै, वसत एक ही अंग ।।

इति हेता

*

अथ काव्यपति

काव्या थी पति थी कहै, जो विध बरनत जात ।
मुख थी जीत्यौ चद्रमुख, कासौं कंवळ कहात ।।

इति काव्यपति

*

अथ विध अलंकार

अलंकार विध सिध अखी, पहिल साधना फेर ।
कोकिल है कोकिल कळा, जो रटि करै दुजैर ।।

इति विध अलकार

*

अथ समाधि

सो समाध कारज सुगम, हेत और मिळ होत ।
उतकठा तिय हिय अधिक, अथ यौं दिन उद्योत ।।

इति समाधि

*

अथ प्रतिखेध

सो प्रतिखेध प्रसिद्ध थी, अर्थ निखेधे आइ।
मोहन कर नहिं मुरलिका, वळ इक वड़ी वलाइ॥

इति प्रतिखेध

*

अथ कारक दीपक

क्रम थी भाव अनेक थी, कारक दीपक एक।
ह्ळ वळ आवति चिन हँसति, कांता पूछि विवेक॥

इति कारक दीपक

*

अथ निरुकति

जो निरुक्ति जब जोग थी, अर्थ करै जिय आंन।
ऊधौ कुबजा वस अधिक, निरगुण वाहि निदांन॥

इति निरुकति

*

अथ समुच्चय

वहौ समुच्चय भाव वहु, इक दुव उपजै अग।
काज एक चाहौ कियौ, इक अनेक हुइ अंग॥

इति समुच्चय

*

अथ अत्युक्ति

अलकार अत्युक्ति अखि, रटि अतिसय थी रूप।
जाचक धारा दांन जय, भयौ कल्पतर भूप॥

इति अत्युक्ति

*

अथ परसख्या

परसंख्या इक थळ परठि, थळ दूजौ ठहराइ।
नेह हानि जिय में नहौ, जजौ दीप में जाइ॥

इति परसख्या

*

अथ भाव

भाविक भूत भविस्य भण, वरणत होइ वणाइ ।
व्रदावन थी आज उण, लाला देख लुभाइ ॥

इति भाव

*

अथ परिव्रत

परिव्रत वित लीजै पढ़ै, दोरा हंदी देय ।
इंदरा हंदा नयण अलि, लेरा रांण करि लेय ॥

इति परिव्रत

*

अथ स्वभाव

भाव उवत इण जाण भण, भणियौ जाइ सुभाइ ।
हँसि हँसि देखै फिर हँसै, इम मुग्ध थी इतराइ ॥

इति स्वभाव

*

अथ परजायोक्ति

इण परजाय अनेक पढि, क्रम थी आवै एक ।
क्रम थी फिर जव एक थी, किय धर भाव अनेक ॥

इति परजायोक्ति

*

अथ वक्रोक्ति

वक्र उकत जब एक थी, अर्थ फेर जो होइ ।
रसिक मनूरथ हो रह्यौ, यहै बुरो नहि कोइ ॥

इति वक्रोक्ति

*

अथ यथा संख्या

यथा संख्य इम वरनियै, क्रम अनुक्रम थाग ।
कर धरि मिण रिपनि को, भजन रजन भंग ॥

इति यथा संख्या

*

अथ लोकोकति

लोकोकति हो अर्थ कहि, मदन कोक तिण मांण ।
फिरि गोधण जो फेर ही, जेय धनंजय जांण ॥

इति लोकोक्ति

*

अथ सार

एक एक थी अर्थ अखि, सोय अलंक्रित सार ।
सुधा सु मधु थी मधुर सुण, अख्यर मधुर अपार ॥

इति सार

*

अथ जुक्त

जुक्ति क्रिया थी जोडिजे, जेय कर्म नहिं जाइ ।
पीय चलत आंसू चले, जिण थी नैण जंभाइ ॥

इति जुक्त

*

अथ दीपकालंकार

दीपक एका वळि दखें, माळा दीपक नांम ।
कांम धाम तिय हिय कहिय, धार हियै तुव धांम ॥

इति दीपक

*

अथ अन्योन्यालंकार

अन्योन्यालंकार अख, अनौ अन्न उपकार ।
सस थी निस निस थी ससी, सस निस ही ततसार ॥

इति अन्योन्यालंकार

*

अथ अधिक

अधिकाई आधेय थी, जत अधार थी जोय ।
जो अधार आधेय थी, अधिक अधिक कहि दोय ॥

इति अधिक

*

अथ चित्र

बोलै वचन विचित्र, इच्छा फळ विपरीत उर ।
पुरखां माहि पवित्र, उच्चत तन लहि व्रण अधिक ।।

इति चित्र.

★

अथ सम

सम विण कारिज सिद्ध नहिं, उद्यम करत अहोय ।
हार वास तिय हिय हरख, जालिम लायक जोय ।।

इति सम

★

अथ विसम

विसम अलक्ति विध वळे, सो कहि कारण संग ।
कारण और हि रंग कहि, कारज और हि रग ।।

इति विसम

★

अथ असगति

असगती कारज अधिक, ठवि कारण किंहि ठांम ।
और नांम ही आखियै, और नांम चौ कांम ।।

इति असगति

★

अथ असंभव

किण सभावन काज, जावक विण दीन्हां चरण ।
जांणै किण इण आज, गिरवर धरियौ गोप सुत ।।

इति असभव

★

अथ विभावना

अद्भुत होइ विभावना, कारण विन ही काज ।
जावक विण दीन्हा चरण, अरुण वरुण है आज ।।

इति विभावना

★

अथ विरोधाभास

भाखैं वचन विरोध थी, भणो विरोधाभास ।
उत्तर तो उतरै नही, मन थी प्रांण विनास ।।

इति विरोधाभास

★

आख्येप पिण इणरो ही भेद जांणणो, नही तो विरोधाभास ने आख्येप एक हीज छै ।

अथ व्याजनिंदा अलंकार

व्याज निंदा……विसे, निंदा और हि नेट ।
सदा खीण कीनो सही, चद मंद चित चेट ।।

इति व्याजनिंदा अलंकार

★

अथ विव्रत्तोक्ति

स्लेख छिप्यो परगट सरस, विव्रतोक्ति कहि वेंण ।
पूजत देव महेस पुण, सो कहि देखो सेंण ।।

इति विव्रतोक्ति

★

अथ गूढोकति

गूढोक्ति मिस और गहि, आख परहि उपदेस ।
काल्हे जाऊँ कालिका, दिस पूजो सिव सेस ।।

इति गूढोकति

★

अथ व्याजोकति

व्याजोकति थी और विध, करै गुप्त आकार ।
कीन्हा सुक वलि कर्म ए, आनारा उणहार ।।

इति व्याजोकति
इति उक्त युक्त अलंकार

★

अथ संकर तत्र प्रथम पिहित लख्यणं

पिहित छिपी वातां प्रगट, भेद बतावै भाव ।
प्रातें आयो सेझ पिव, पेम धि दाबत पांव ।।

इति पिहित

★

अथ सूखम अलंकार

सूखम पर आसय लखै, भुव सैनन किण भाव ।
मैं देखी उण सीस महि, सु केसां महि लुकाइ ।।

इति सूखम अलंकार

*

वार्ता– सूख्यम आसय थी पर आसय लख्यौ जाय । मुंहांरा सेन अथवा भूखणादिक री चेस्टा थी लखीजै सो सूखम अलंकार। अर्थ अंतरंग जांणणौ, वहिरग नही । अनै केई कहै सु वहिरंग हीज छै, अंतरग न छै, कि भ्रु वादिक वहिरंग मांहे जांणीया तिण थी ।

अथ विसेस अलकार

पदहुं विसेस विसेस पुणि, मिळै जु समता मभ्भ ।
तिय मुख फिर पंकज तवां, ससि दरसण था सुभभ ।।

इति विसेस

*

अथ उन्मीलित

उन्मीलित सादर सहित, मांहि भिदै जव मांनि ।
की रति आगळ तुहि न कहि, जो परसो फिर जाइ ।।

इति उन्मीलित

*

अथ अगुण

अण गुण सगत थी अधिक, संपूरण गुण सोइ ।
मुक्त माळ हिय हास मभि, जो अधिका अधिकाइ ।।

इति अगुण

*

अथ अतद्‌गुण

सोय अतद्‌गुण सगति, गुण जो लागत नाहि ।
प्रिय प्रीत विण ही परठि, मन वस रागी माहि ।।

इति अतद्‌गुण

*

अथ पूर्व रूप

पूरव रूपक गुण परठ, तजि फिर अपणो लेत ।
दूजे जिह गुण ना दरस, होय मेटणे हेत ॥

इति पूर्व रूप

★

अथ रत्नावळी

तद गुण तजि गुण आप तद, लखि सगत गुण लेय ।
मोती वेसर अधर मिळ, पदम राग परठेय ॥

इति रत्नावळी

★

अथ मुद्रा

पढ़ियहु अर्थ प्रकास, मुद्रा प्रस्वत पद मिळै ।
वर्स रसीली वात, असोकि जिण दिस पिय अहि ॥

इति मुद्रा

★

इण माहे प्रस्वतत पद सोरवतति अंतरंग ।

अथ लेखा अनग्या, अवग्या अलकार

केई तो कवि लेखा अवग्या अनुग्या कहै छै सु नांम भेद छै नै अलंकार तो एक हीज छै। नै कितरा रो मत देखी सु कह्यो। ए चिन्ह जूवा जूवा छै। सु कवि हरराज विचारियो ज अलकार तो त्रिन्ह जुदा-जुदा खरा, सु देसांतर पिण एहवा नाम सुणीया नहीं। तद जाणियो कि जुदा खरा, तरै गुरूजी श्री कुसळलाभ या प्रस्न--कि महाराज आप फुरमावो--एणां तीनां अलकारा रा नाम तोन जुदा-जुदा सुणिया, नै लखण एकसा हीज मालूम पड़िया सो कहीजे, नै अलंकारा रा ग्रन्थ री उयांन का फुरमावो। उत्तर--श्री कुसळ-लाभ जी रौ कहियो--अलकार तो आभूसण कहिया। सर्व सासत्र रो ग्रहणो छै। जिण विध थी ग्रहणो पहिरि स्त्री पुरस सुदर दीसे, तिण विध थी गीत, कवित्त, दूहो, छद गाथा फूटरो दीसै। महाराज आप फुरमायो सो अलंकार ग्रथ आचरज कत छै, किनां सेस अन छै, सो कहो ।

उत्तर, दोहा--सेन पिंगळ रचियो सरस, अलंकार फन ग्रौर ।
सुकाचारिज गुर गरस, तए ठौर ही ठौर ॥

वाळमीक सुक व्यास विध, सौनिक रिख केइ संत।
अलंकार करता अवर, तवि तवि कथियौ तंत॥

वार्ता– इण माहे छै तै संसक्त छै सु रसक ग्रंथां रा अंग वांधे। तठा सुं अंग बांधण रौ विचार वर्णन ग्रंथ छै, सु तौ सरीर छै, नै मांहें नांम माळा सु अस्थि छै, नै रचना ग्रंथां री सो त्वचा नेंम जानै पिंग सौ जीव छै। नै अंग-अुपंग तौ बीजा घणा छै, नै अलंकार आभूसण छै। इण विध थी सर्व जांणणा।

अथ उलासा अलकार

ओर धार उल्लास, गुण एकठ कर ओगुणा।
गगा मांहे गास, कमळ न्हाइ पावन करै॥

इति उलासा

★

अथ विसाद

उळटौ ही अधिकार, सो विसाद चित्त हित वधै।

इति विसाद

★

अथ ललित

कहियौ ललित कवीसरे, वोढा कौ प्रतिविंव।
कासु सेत वाधे करिस, अब ही उतरे अंब॥

इति ललित

★

अथ संभावना

जो यौं हो तौ जो कहै, संभावना सरस्स।
वकता हो तौ सेस वह, दखिले तौ गुण दुरस॥

इति सभावना

★

अथ स्लेस

अलकार स्लेसा अखय, एक सब्द उद्योत।
होय न पूरण नेह हणु, वदन वार वहु होत॥

इति स्लेस

★

अथ परकर

परकर ले भावां परठ, वीसेसण वरणाय ।
चंद्र वदन चंद्रावती, ताप हरण ता ताय ।।

इति परिकर

*

अथ समासोक्ति

प्रक्तत वर्ण मांझ पद, प्रक्तत करहु प्रमांण ।
कमला फूल कमोदणी, अखौ चंद्र चित आंण ।।

इति समासोक्ति

*

अथ विनयोक्ति

विनय उक्ति वाखांणियै, पद मझझे प्रक्तत ।
सोभा थी अधिकाय सो, हीन प्रक्तता हृथ्य ।।

इति विनयोक्ति

*

अथ सहोक्ति

सारा रस सरसाइ, सहा उक्ति कवि सो कथै ।
जो निधि सगति जाइ, कीरत थी केसौ कथै ।।

इति सहोक्ति

*

अथ व्यतिरेक

उपमेया ही आख, व्यतिरेका वाखांणियै ।
दिल थी अंबुज दाख, वातां मधुर विसेसणां ।।

इति व्यतिरेक

*

अथ निरदरसन

कारज थी कारण कहै, कारण कारज काय ।
पूरण चंद बताय कर, अलंकार दरसाय ।।

इति निरदरसन

*

अथ द्रस्टात

परलच्छणा प्रमाण, अलकार द्रस्टात अख ।
मोटी सोभा मांन, काति मांन चदा कह्यौ ॥

इति द्रस्टात

*

अथ दीपक

दीपक सो दीपाय, सोभा अधिक अनूप सो ।
गज थी सरिखौ गाय, रावळ कवि हरिराज नू ॥

इति दीपक

*

अथ तुल्यजोगता

क्रम नम ही थी काय, तुल्य जोगता इम तवां ।
गुणनिधि ही कवि गाय, रावळ इण हरिराज नूं ॥

इति तुल्यजोगता

*

अथ उलेख

कवित्त– घण समझै घण रीत थी सो उलेख अलंकार ।

यथा– को मण कहियौ काम धाम सुरतर कवि धरियौ ।
अरियण काळ सु अरुय रिणा अर्जुन हुइ रहियौ ॥
सूरज तेज सराह वचन थी सुर गुर वरणां ।
सीतळ चद्र सरम्स दान थी दाखू करणां ॥
माल रै पाद मुसताक दिल, कुवरां गुरहर अडिल ध्रुव ।
रावळा राज पाता पजर, सरणाई चिरंजीव तुव ॥

इति उल्लेख

*

अथ विरहा अलंकार

वधै सास चिंता वधै, विरह परीख्या वात ।
काळा पीळा होत अग, गरम सु ठंढ़ौ गात ॥

इति विरहा

*

अथ जाति सुभाव

जिण रौ जैसौ रूप जो, वरणे वात वणाय।
तिण नौ जात सुभाव तवि, कथै महाकवि राय ।।

इति जात सुभाव

*

अथ विभावना अलकार

जो कारज विन कारणै, प्रगट होत परमांण।
वरणै कवि सु विभावना, जे पिंगळ मत जांण ।।

इति विभावना

*

अथ विसेसा

कारज कारण विकळ कहि, होइ साध जो सिद्ध।
कहै कवीस विसेस जो, अलकार नवनिद्ध ।।

इति विसेस

*

अथ उत्प्रेक्षादि

आदि वस्त में और ही, औरौं कीजै कांम।
उत्प्रेक्षा तिण नांम अखि, कवै कवीसर तांम ।।

इति उत्प्रेक्षा

*

अथ रूपक अलकार

मुख सस वासर थी मुणे, दिन रातां उद्दात।
रतनाकर थी नाहि रट, कवी अम्र कमलात ।।

इति रूपक

*

अथ प्रतीप अलकार

उपमेया उपमांन थी, भास अत सरसाइ।
मुख थी गरव न माणिजै, चवै अच्छ चंदाय ।।

इति प्रतीप

*

अथ अनन्वय

उपमांना उपमेय ही, अनन्वय अलंकार ।
राजा इण हरि राज सौं, हरराज ही उदार ।।

इति अनन्वय

★

अथ उपमा अलंकार

कारण साधारण कथौ, वाचक धर्म वखांण ।
इण विधि सहि एकत्र अखि, जिण न् उपमा जांण ।।

इति उपमा अलंकार

★

तवि कीरति हरिराज तुव, मांनुं हंस मुणाह ।
सजळ सरोजां सळहळै, महि जिण घेर घणांह ।।

इति उपमा

★

अथ लुप्तोपमा

इक दुय त्रय हीणा अखै, कारण आदि कहाइ ।
लुप्तोपम कवियां लख्यौ, वरणण सुद्ध वणाइ ।।

यथा– राज रांण हरराज सौं, दुव नंहि देसां देख ।
जोधै अण तुव जुद्ध ची, लुप्तोपम हुइ लेख ।।

इति लुप्तोपमा अलंकार

★

अथ अभूतोपमा

कहै न उपमा कोइ, तिण री रूप निहारजौ ।
सेस अभूतां सोइ, कवि सो कहै विचार करि ।।

इति अभूतोपमा

★

अथ अद्‌भुतोपमा

जंसी हुई न होत जो, रहै न आगै कोइ ।
कवि सौ इण विध वरण कहि, अदभुत उपमा होइ ।।

इति अद्‌भुतोपमा

★

अथ दूसणोपमा

जठै दूसण गण वरण जो, भूखण सकळ भुलाइ ।
तद दूसण उपमा तवै, पिंगळ मत यहु पाइ ॥

इति दूसणोपमा

*

अथ भूसणोपमा

दूसण सकळ दुराइ दे, भूसण कथि कवि भेद ।
भूसण उपमा सो भणै, वदि पिंगळ मति वेद ॥

इति भूसणोपमा

*

अथ दोसोपमा

वां इस दीपक सुत वदै, करणी मुत अग काळ ।
रिण सूरौ सगरां रवद, जळमळि जळ जमजाळ ॥

इति दोसोपमा अलंकार

इति श्री पिंगळ सिरोमणि रावळ श्री माल पाटपति तस्यात्म कुंवर सिरोमणि
कवि सेखर महाराज कुमार श्री हरिराज विरचित अलंकार वर्णन

**

मगन होत चित्रांण मझि, हरिया चित्र विचित्र ।
आचारज अघको उगति, मझे मिश्रा मित्र ॥

अथ चित्र वर्णनं

प्रथम तत्र कामधेनका, तत्र आदौ प्रथम वार्ता– वार्ता विण समझ न जाई, तिण वासतै प्रथम वार्ता प्रथम ही इकतीसो कवित्त वणाइजै । सौ च्यारूं पद सरीखा कीजै । तिण मांहि वठ राखीजै, नै च्यारा ही चरणां आदि रौ वर्ण गुर कीजै । नै दूजो वर्ण गुर कर नै उणरै तीन थकां वठ राखीजै । नै च्यारां ही तुकां विश्राम रा, विश्राम कीजै, चूकीजै नही । नै अर थारी उकति अनेक उपाईजै । नै जुक्त पिण अनेक लीजै । नै वय रीत आद्री लीजै । सु कठा री रीत इण विध लीजै । सु कहै छै दोयां वर्णा एक वठ । १ । नै च्यारां वर्णां दूजो वठ । २ । नै छटां वर्णां तीजो वठ । ३ । नै आठां वर्णां चोथो वठ । ४ । नै पाचवों वठ च्यारां वर्णां रो कीजै–सु पांचमौं वठ । ५ । नै छठो वठ दोयां वर्णां रो । ६ । नै सातमौं वर्ण दोया रो वठ । ७ । नै आठमौं तीनां वर्णां रो । ८ । नै नवमौं वठ पांचा वर्णां रो । ९ । नै दसमौं वठ दोयां वर्णां

रौ। १०। नै इग्यारमौं कठ दोय वर्णा रौ। ११। नै बारमौं कठ दोयां वर्णां रौ। १२। नै तेरमौं कठ एक ही वर्ण रौ। १३। इण विध थी च्यारे चरण अनुक्रम मेल नै अरथ री इच्छा जुगति देख नै कीजे। नै च्यारौं पद सरीखा राखीजै तरै कांमधेनका सिध होय, नै मनोवांछित प्रस्तारादिक छद मांहै सोह पाईजै। तरै प्रस्न—हरराजजी रौ कहीयौ—कि महाराज प्रस्तार वर्णां रा छंद पाईजै किनां मात्रिकांरा सु समझण रै वास्तै फुरमावौ।

> वर्ण छंद सहि मांहि वद, प्रस्तारादि प्रजंत।
> मत्ता· सम छंदां मुणे, केई विसम कहंत॥

तौ इण दूहै थी सर्व बात सपुस्ट छै, कि वरण छंद सहि माहे थी नीकळै सम ही नै विसम ही नै मत्ता छद सम मत्ता हीज नीकळै, नै विसम न नीकळै, नै केई इक विसम ही नीकळै। प्रस्तार विसम थी चलाईजै। तरै सरब मतां रा छद नीकळै नही, आ वार्ता पूछण जोग्य छै। नै श्री गुरां री कहीयौ दूहौ तिणरी साख छै।

पुनः प्रस्न

कुसळलाभजी सो कहै कि महाराज आप सर्व पिंगळ ग्रंथां रा करता रा नांम, सख्या नै जाति देस जांणो छो कि कांमधेनका किणरी कह्योड़ी छै, सु फुरमावो। नै इण चित्र सरीखो बीजो चित्र कोई नही, नै निजर माहे आयो नही। इण कामधेनका माहे सरब छंद री उतपत्ति छै। अजांण हुवै नै पिंगळ प्रस्तारादिक थी न भणै तिको पिण छंदां री अत माहे समझै। नै प्रस्तारादिक माहे मोटौ कस्ट। सूछम मारग थी भलो चित्रक बणावै। सो इण रीत उतपत्ती बनायो।

उत्तर, दोहा सदोत्तरा

> सुक्र आचारज दम्पयें, गुरु ब्रहस्पति गोय।
> सेस इन्द्र मौ नियम रस, हित गुन चित्रक होय॥

वार्ता– श्री ब्रहस्पति, सुक्राचारिज, सेस इणां भेळा होय नै श्री इन्द्र महाराज रै समझण रै वास्तै आ कामधेनका कर दीवी। जिनां कस्ट छंद सरब नीसरै– इन्द्र एक समै कैलास श्री सिव रै दरसण आया, तरै सिव नै कयो। सिव श्री गणेसजी नै सीखाई। गणेस रिख सोनक नै दीवी। इम हीज पछै प्रथ्वी माहे सिस्य पर सिस्य चली।

अथ श्री व्रहस्पति सुक नक्त कांमधेनका कवित्त ।

दाखै वंसज दूजिणां, वरण चौसूरां वदै ।
दान रौ परम कीत, जित्ती सव देस चौ ।।
भाखै हसण दूतिणां, सरण चौ नूरां सदै ।
मांन रौ धरम मीत, कित्ती ध्रम वेस चौ ।।
रावां राव कही सही, विवुध सौ वाचा वरै ।
भीम ज्यौ सुजस भूर, सोभ सम सेस चौ ।।
भावा भाव गही मही, सु वुध सौ वाचा सिरै ।
खीम ज्यौं कुजस दूर, खित्री सु हरेस चौ ।।

इति कामधेनका

★

														कामधेनका छद रावं ३६ कोड़ नीकळै ३६०००००००																
दा	खै	वं	स	ज	दू	जि	णां	व	र	ण	चौ	सू	रां	व	दं	दां	न	रौ	प	र	म	की	त	जि	त्ती	स	व	दे	स	चौ
भा	खैं	हं	स	ण	दू	ति	णां	स	र	ण	चौ	नू	रा	स	दं	मा	न	रौ	ध	र	म	मी	त	कि	त्ती	ध्र	म	वे	स	चौ
रा	वा	रा	व	क	ही	स	ही	वि	वु	ध	सौ	वा	चा	व	रैं	भी	म	ज्यौ	सु	ज	स	भू	र	सो	भ	स	म	से	स	चौ
भा	वा	भा	व	ग	ही	म	ही	सु	वु	ध	सौ	वा	चा	सि	रैं	खी	म	ज्यौ	कु	ज	स	दू	र	खि	त्री	सु	ह	रे	स	चौ

अथ अस्व गत, अथ कपाटबद्ध

त्रिपदीबंध

ग्या	व	दा	गु	र	रा	ह	रा
न	त	तां	णी	टा	ण	र	ज
दा	व	धा	ध	भ	भा	क	का

कपाटबंध

ग्या	न	न	दा
वं	त	त	व
दा	तां	तां	धा
गु	णी	णी	ध
र	टा	टा	भ
रा	ण	ण	भां
ह	र	र	क
रा	ज	ज	का

गतागत यंत्र

हा	री	रा	ज
दा	न	दा	न
भ	टा	णी	त
दे	ग	ते	ग

अस्व गत

ग्यां	न	व	त	दा	ता	गु	णी
र	टा	रा	ण	हं	र	रा	ज
दा	न	व	त	धा	ता	ध	णी
भ	टां	भा	ण	क	र	धा	ज

अथ नस्टोस्टक

पटत न आवै जास पद, प फ व भ मां ए पांच ।
नस्टोस्टक यहि नेम पी, गुरुवी वरणां सांच ।।
यथा– तीव लाज लीला सु नगर, लहि महि यवियण तोक ।
हरिया हरि विण हारिजै, सिधु संसार असोक ।।

इति नस्टोस्टक

*

अथ मत्ता रहित

एक सुरां थी आखिजै, अदभुत रूपां वरण।
मत्त रहित कवियण मुणं, चित्र मित्र आभरण ।।

यथा– अजर अमर धर विरद अज, परम धरम चव पयज ।
अमळ कमळ दळ वदन अख, सदन मदन जस सहज ।।

इण नुं केई एक सरप गति पिण कहै छै ।

इति मत्ता रहित

*

अथ एक अखरा कथनं

दोहा– एक अखर रूपक अखै, सो एकाखरा सराह ।
बुधवळा वरणौ वरण, हेतां मांनह राह ।।

यथा– कोका कोका कोक की, कूक कूक कुक कूक ।
ककि कका कूका ककै, कोका काक क कूक ।।
रोरा रारा रं ररा, ररि रारा रंग रोर।
रूरू ररि ररि रं ररौ, रोरं रा ररि रोर ।।

इति एकाखरा

*

अथ वार्ता

इण विध एकास्यर सो कवित, गीत, दूहा, छंद ही एकास्यर कहीजै । नै दोय वर्ण सो दोय अखरा, नै तीन वर्ण सो भी अखरा । इण ही प्रकार छावीस वरण प्रजत, ग्रंथ अधिकार भय थी आगला नही कहीया छै ।

पुनः द्वीतीय वार्ता

एक थी लगाय नै पचतीसा परजत तक तरां करै । मत्त वरणां थी ही छंद कहै, सो पूरव माहे परसिध छै ।

यथा– इकतीसौ कवित्त, पचीसौ दूहो, बत्तीसौ तेतीसौ रणा आदि दे और पिण पहिला गिणनी वरण कहिया नै पछै पिंड बाधीया । इण विध थी पचतीस चित्रक वणीया ।

इति

*

अथ बहिर्लापिका, अंतर्लापिका

अंतर उत्तर अंतरलापिका, वाहिर उत्तर सो बहिरलापिका ।
बाहिर उत्तर बहिरलापिका, पलोलौ मांहे नांहि नांहि ।
अंतर उत्तर अंतरलापिका, सोय कहूं सर सांहि ।।
यथा– किण थी सोभा पद कहै, अन्न वृंद किण मान ।
गेह थित्त किण थी गही, जो सब देस जहान ।।

इति बहिर्लापिका

★

अथ अंतर्लापिका

कुंजर किण थी उद्धरचौ, अख फिर तारा ईस ।
कहि भाटी कविता कवण, रटि हरिइंद राजीस ।।

इति अंतर्लापिका

★

अथ गूढोत्तरा कथनं

उत्तर छळ थी आखियै, सो गुप्तोत्तर गाइ ।
कवि सगळां मत एक कथ, तवि गोविंद गुण ताइ ।।
यथा– मुख्य प्रधानां मन्नवी, पुणै नांम फतचंद ।
कैद हूत काठो ठियौ, अधिकौ होय अणद ।।

इति गूढोत्तरा

★

अथ एक अनेकोत्तरा

उत्तर एकां थी अधिक, आखै भाव अनेक ।
एकानेका सो अख, हठि थी हरियद हेक ।।
काई भावत ससार का तर किण देखे डरप्यौ ।
मखा केण सुं कहहि, ग्रथ नुं किण विध थरप्यौ ।।
प्यारौ कुण जग मझ्झ, तेग लागै कुण तुट्टहि ।
दीहाडं कुण उदति, लोभ मंत्री कुण तुट्टहि ।।
आदि अंत थी दाख दुव, सिंघ अवलोकन कर फुसहि ।
तद उत्तर हरियद तवि, घर जगत्त सो भांण कहि ।।

इति अनेकोत्तरा

★

अथ सासोत्तरा कथन

दोहा– तीन तीन सांसण तवें, उत्तर एकें आख।
सांसण उत्तर कहत सहि, बुधजण ग्रथां भाख ॥

यथा– नीचौ लो नीचोय कर, खग्ग खोल मन भाइ।
मुत्तिय मोलां नहि वणे, तद हरियद वताइ ॥

वार्ता– इण ही री कथां कवि भूगर प्रथ्वी मांहे हुवो, जिणनें देवता रो वर हुतो, तिणरी कहियो पिंगळ, तिण मांहिलौ दूहौ—

दूहौ सासोत्तर, जाति खोड़ौ

खदबद हांडी खीच, जीमण बैठौ इक जणौ।
मजं न जीम्यौ भीच। तौ उन्हौ ॥

पुनः वार्ता

आगे पिण गुर सिख रो संवाद तिणरा दूहा साढ़ा तीनसें सो दूहा सर्व सासोत्तरा, तिण री साख—

मोटौ मोती ढळहळौ, तुरी मोल न लहाय।
जोधौ भागौ राड सूं, कहि चेला किण भाय ॥
गुरुजो पांणी नहीं।

पुनः

पांन सड़ै घोडौ अड़ै, विद्या वीसर जाय।
चूल्है रोटी लग रहै, कहौ चेला किण भाय ॥
गुरुजी फेरो नहीं।

इति सासोत्तरा चित्र

★

(चरण गूढ चित्र)

रा	ज त इ	म	ह र इ	द
गु	व दू र	स	दू र म	ज
स	भे व त	र	प्र ति क	नि
द	त व धी	ह	थ य ण	व
य	ण लि व	दे	य क हे	मो

(गोमूत्रका)

ग्या	न	वं	त	दा	ता	गु	णी	र	टां	रां	ण	ह	र	रा	ज
दा	न	व	त	धा	ता	ध	णी	भ	टां	भा	ण	क	र	का	ज

ग्यांनवत दाता गुणी, रटां रांण हरराज ।
दांनवत धाता धणी, भटां भाण कर काज ॥

इति गोमूत्रका चित्र

(पर्वतबंध)

*

दा
नं
सु
दा य प
ला भ य धा य
क ना म म नो ह र
ह्री क ही य मि त्र स हा य
अ रा दु ख दा य क ना य क रा
व मु रां म हि य गु नी त जु तं वि ण
नी त ग त ह र अ ह्या रू वि स्नु ग णं स क्ती
सु

(चोकीबंध चित्र)

सा	र	भा	ण
व	रा	रो	हा
न	गे	भा	ग
म	ना	हि	जा

(म्रदगबंध)

म	रा	म
रा	भ	ना
म	ना	रा

(चक्र वंध)
कमल बन्ध
(अंकुश वंध)

दान सुदाय रव लामय धायक नाम म

हर बंद य ते स

बिस्तु गणंसकती

अथउ डिंगल् नाम - माला लिख्यते

राजा नांम

पार्थिव स्योणीपति राज भूपांण रायहर,
नरवर ईस नरेंद भांणकुळजा महिराणवर।
प्रजापाळगर (नांम)[1] जगतमावीत्र अजादे,
घणीमाळ चोधार[2] भारभुज सिंह (मुनादे)।
अणवीहू (काज) गांजागिरै सूरपति नरसिंह (कहि),
(कर जोड़ राव हरियद लहि) राण राव (चे नाम सहि)।।—१

मंत्रवी नांम

मत्री गूटा-वाच बुधिबळ लायक (दखे),
सचिवा (फिर) सचिवाळ राजअगधार (सु अरवे)।
प्राभ्रोपुरस प्रधान दाणपुरधाण पुरोहित.
विरतीचख वरियाम फोजआभरण जाण-मित।
अंकहूं तलेखाळ (कहि) मरद वजीरां जोधगुर,
(कर जोड एम पिंगळ कह्यो तिम रूपक हरियद कर)।।—२

जोधा नाम

सिंह सूर सामत जोध भुजपाळ घडाभिड।
(भिड़ै) फौजगाहणा (वेढ़) भीचा जोधार गिड।
अणीभमर वधिममर अछरवर हमा[3] (अखा),
मबळ दळां-गाहणा मूरमडळ-भिद (मखा)।
रूपफौज (भूर आगळ रहै कवि पिंगळ अे नाम दहि),
जोधार (जिमा भोमेण जरो) महाअडिग कमधांण[4] (महि)।। -३

---

[1] इन कोष्ठकों वाले शब्द छन्द-पूर्ति आदि के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

[2] घणीमाळ चोधार = घणी-माळ, घणी-चोधार।

[3] 'हमा' शब्द अधिकतर अप्सरा के लिए प्रयुक्त होता है, पर शास्त्रों में योद्धा को विदेह कहा गया है। अतः 'हमा' का अर्थ योद्धा भी हो सकता है।

[4] कबन्ध—जो बिना सिर युद्ध करे।

हाथी नांम

दंती (कहि) दंताळ श्रेक्डसण लंबोदर,
द्विरद गैवरौ द्विप्प[१] गंधमद (जाण) गल्लवर।
सुडाडंड सुंडाळ मत्त मातंग गजोवर,
नाग कुंजर भ्रंग करी वारणां करीवर।
दतुर दंतुल (फेर दख चवि) चोडोळौ चरणचतु,
(पिंगळ प्रमाण कवि पेखियं) गात्रसैल नागांण (गति) ॥—४

घोड़ा नांम

वाजि वाह् वाजाळ पंख पंखाळ विपख्खी,
अर्वा (कहि) अर्वन हय गंधर्व बलख्खी।
त्रिपद[२] सैंधव तेज ताज तेजी वानायुज[३],
कांबोजौ हंसाळ जवण पुंछाळ जटायुज।
हैवर मनउपयग (मुणि) रेवंत खंग[४] खुरताळरौ,
सावकर्ण चलकर्ण (सहि) पवणवेग पथाळरौ ॥—५

रथ नांम

वाहण सकट वडाळ अणे गाडो गाडोलौ,
सतअंगौ (कहि) सस्म (फेर) स्यंदन सादाळौ।
चक्रणधुर चक्राळ भारवह-गात्र (भणिज्जै),
वाहल (कहि फिर) वहल मांझवत रथ (सु मुणिज्जै)।
अस्वरूढ व्रखरूढ 'कहि' अकुसमुख गजरूढ़ (गिण),
(कहि हरियद) वाणावळी दसचरण दुधार[५] (भण) ॥—६

व्रखभ नाम

सौरभेय मीगाळ (कहि) व्रखभ अनडुहो (गाइ),
धरिधारण कधाळधुर वाहण-सभु (कहाइ) ॥—७

---

[१] द्वाम्याम सुण्डतुण्डाभ्याम् पिवतीति द्विपः।
[२] अच्छा घोडा प्राय तीन पैरों पर ही खडा रहता है।
[३] स०—वनायुज। वनायुज देश के घोडे प्रसिद्ध माने गये हैं।
[४] फारसी 'खिंग' से बना है।
[५] रथ के चलने से दो लीकें खिचती हैं इसीलिए दुधार कहा है।

तरवार नांम

असि करवांणा खग (भटां) करवाळां तरवार,
बीजळ सार दुधार (वदि) लोहसार भटसार ॥—८

कटारी नांम[1]

सर्पजीह दुवजीह (दख) कोरट सार कटार।
महिखजीह कुंतळमुखी हथ्थहेक (अणहार) ॥—९

फरी नांम

फरी चर्मफालिक (कहौ) रख्यातण अणुभांण,
सहण सुखण गज-सहम (कहि भळें) गोळ-जिम-भांण ॥—१०

बुरछी नांम

सकू कुंतळ बुरछ (कहि) डागाळां बुरछाळ,
नेजरूप धजरूप (कहि) घमीड़ां-मुख-काळ ॥—११

तीर नांम

पंखी (कहि) पखाळ विसिख बाणाळ सुवद्द,
अजिह्मग[2] (कहि) अलख खग्ग (कहि) खुहम[3] निरद्द।
कलंबा करडंड (कहौ) मारगण अगणाळ,
पत्री (कहि) विणपख्ख रोप इखां[4] इखधाळा।
खेड मेड खगाळ (कहि) नाराचां निरबांण (रौ),
नीरस्ता नाराट नख खुरसांणज खुरसाण (रौ) ॥—१२

धरती नांम

धरा धरत्री धार धरणि ख्योणी धूतारी,
कु प्रभु प्रथ्वी कांम सर्व-सह वसुमति (सारी)।
वसुधा उरवी वाम खमा वसुधर ज्या (दख्य),
गोत्रा अवनी गाइ-रूप मेदनी (सुलख्यं)।

---

[1] यहाँ विभिन्न तरह की कटारियों के नाम गिनाये गये हैं।
[2] सर्प (जिह्मग) की तरह टेढा न चल कर सीधा जाने वाला।
[3] एक विशेष प्रकार का तीर।
[4] संस्कृत 'इसुग' से बना है।

विपुळा सागर-अबेरा[1] खुरस् (दीखै गाळरा),
(राजा प्रथू ची परठि रटि वरियण आग-वज्रागरां) ॥—१३

पुनः धरती नांम

तुंगा वसुधा इळा भूम भरथरी भंडारी,
जमी खाक दरदरी धरा धरणी धूतारी।
मूळा महि रणमंडप मुक्तवेणी सुरबाळी,
अमर आदि गिरधरणि सुथिर सुंदर सुहलाली।
भूला छिकमल गो रभ गरद (घासिविया भूपति घणा),
(कर जोड कवित पिंगळ कहै तीस नाम धरती तणा) ॥—१४

अकास नांम

दिवारूप दिव (दख्य) अभ्रमारग आकासं,
व्योम (कहि) व्योमाळ ग्रहांचोरहण आवासं[2]।
पुहकर अबर (परठ) अंतरिख नभ (फिर अख्य),
गगन (नाम) गण-ग्रभ अनंत सुरमारग (सख्यं)।
अंतराळ अंबराळ (कहि) अच्छर-ऊपर-गायरा,
(कर जोड अेम हरियद कहि नमौ तेथ) घर-नायरा ॥—१५

पाताळ नाम

आधो-भुवन पाताळ (अहा कहीजै जिण बळि रौ),
नागलोक निरबाण कुहर (कहि तिण) रसतळ (रौ)।
(सुख रा मारग सरस) विवर (जिण थी वाखाण),
गरता अवटा गरट (जेथ फिर) जळनीवांण।
अधकार-आकार (कहि तामिश्रां चै तोलियं),
(कर जोड अेम हरियद कहि अे पाताळां बोलिय) ॥—१६

अपसरा नाम

सुरवेस्या (कहि) अच्छरा उरव्वसी (अभिराम),
मेनक रभ घ्रतायची सुकेसी तिलताम ॥—१७

---

[1] सागर ही है अम्बर जिसका।
[2] ग्रहा चो रहण, ग्रहा चो आवास।

किन्नर नाम

अस्वमुग्वा किन्नर (कहो जे घोहड हुंदे नांम),
(ते मुख हू ती जोड़िजें मयु किन्नर अभिरांम)[1] ॥—१७

समुद्र नांम

समुद्रा कूपार अंबधि सरितांपति (अख्यं),
पारावारा (परठि) उदधि (फिर) जळनिधि (दख्यं)।
सिंधू सागर (नांम) जादपति जळपति (जप्प),
रतनाकर (फिर रटट्ट) खीरदधि[2] लवण (सुथप्पं)।
(जिण धाम नाम जजाळ जे सट मिट जाय समाग रा,
तिण पर पाजां बधियां अे तिण नामा तार रा) ॥—१६

परबत नांम

महीधरा कूधर (मुणो) सिखिर दृखत-चय (सोय),
(धर) पर्वत धारीधरा अग्रग्राव गिर (जोय) ॥—२०

ब्रह्मा नांम

धाता ब्रह्मा (धार) जेस्ठसुर अतम-भवनं,
परमाइस्ट (परठ) पितामह हिरण-उपवन।
लोकईस ब्रह्मज कज्ज देवाण (सुकरियं),
(धराहेन किह धुनि) चतर चतारण (चवियं)।
विरंच (नाम वाखांणिय) वद्धचोर साहोगमन,
(कर जोड अेम हरियद कहि जे मतां वासिट चवन) ॥—२१

विस्णु नाम

नारायण निरलेप निगुण नामी नरयदं,
किसन रकमणिहार देवगण अहिगण वद[3]।

---

[1] घोड़े के सभी पर्यायवाची शब्दों के आगे मुख शब्द जोड़ देने से किन्नर के पर्यायवाची शब्द बनते हैं; जैसे—रैवतमुखा, तुरगमुखा आदि-आदि।

[2] खीरदधि लवण—खीर-दधि, दधि-लवण।

[3] देवगण अहिगण वंदं—देवगण वंद, अहिगण-वंदं।

बैंकुंठां-ग्रह-विमळ दैत-ग्ररि (कहो) दमोदर,
केसव माधव चक्रपांणि गोविंद लाछवर।
पीतांबर प्रहलाद-गुर कछ-मछ-ग्रवतार[1] (किय),
(कर जोड़ ग्रेम हरियंद कहि नमो नमो जिण वेद गिय) ॥—२२

सिव नांम

पसुपति संभू परब्रह्म जोगांण गांणवर[2],
माहेसुर ईसांण सिवं संकरं त्रिसूळधर।
नागाणंद नरयंद जोगवासिद्द सारविद,
त्रिह्नलोचन (रत तास ग्रंग भभूत सुघसत)।
पारबतीपति जख्यपति[3] भूतांपति प्रमथांपति,
(कर जोड़ ग्रेम हरियंद कहि नमो नमो) नागांपति ॥—२३

देव नांम

जरारहित (जिण ग्रंग सोभा ग्राकासं),
ग्रदितपुत्र[4] (ग्रहिनाण ग्रखिल सुरलोक ग्रवासं)।
ग्रमृत-पांन-ग्राधार विबुध (कहि) दांनव-गज्जं,
(ग्रंगां ग्राभा ग्रमळ रोम तारागण सझं)।
(तेतीस कोड़ संख्या तवी सेससिरोमण माहि सहि,
कर जोड़ ग्रेम हरियंद कहि कुसळलाभ देवांण मयि) ॥—२४

दूहा

सोइ ग्रथां थी सुण्यो, जोई वणिय जांण।
सोइ जोई धर सुकवि, ग्रादि ग्रंत ग्रहिनांण ॥—२५
घू ग्रंबर जा लग धरा, रिघू रांम ज्यां राज।
ता पिंगळ ग्राखो तवां, सकळ सिरोमणि साज ॥—२६

इति श्री महाराजाधिराज महारावल श्रीमाल पाटपति तस्यात्मज
कुंवर सिरोमणि हरिराज विरचितायां पिंगळ सिरोमणे
उडिंगळ नाममाळा चित्रक कथनं नाम सप्तमोध्याय।

---

[1] कच्छ-मच्छ ग्रवतार—कच्छ-ग्रवतार, मच्छ-ग्रवतार।
[2] सभी गणों मे श्रेष्ठ।
[3] यक्षपति।
[4] ग्रदिति के पुत्र।

अथ गीत प्रकरण

गणपति सरसति देह गुण, सकर सदा सहाइ।
कर जोड़े विनती करां, गूढ़ गीत प्रगटाइ ॥ १
सत, त्रेता, द्वापुर सकळ, सेस आदि कवि सत।
गीत सकळ गाऊं सरस, तवि कळि मधि सु तंत ॥ २

तत्र प्रथम मात्रिका झमाळ गीत, तत्रा दो दूहा—

केइ अखर केइ मात्रिका, माहो माह समुच्च।
तद हरयद विचार तवि, ... ॥ १
आप उकति किय आमले, हामिल विण किय हेर।
तद हरयंद विचार तवि, अन्न उकति अधिकेर ॥ २

वार्ता—दो कवि जाति रा सीधु नै पातिसाहां रा भट्ट हुवा। जिणां गीतां री प्रबंध बांधीयो। दोनां भायां दोय ग्रंथ कीधा। सो उक्त मांहे आपरी ही ल्याया। तद प्रथी रा कविसरां प्रमांण ग्रथां नु कीधा नही। गीत जाति अनेक कीधी। तद हरराज जूनां पिंगळ कविसरां रा कीधा देख नै गीतां री संकळता कीधी।

तत्र प्रथम झमाळ[1] नांम गीत कथन—मात्रका छंद

अरुण इक्क जुत आदरी, ईसर जुध घर अग्ग।
अरुणां ईसर फिर भरो, आखं इम पति खग्ग ॥
आखं इम पति खग्ग, उलालो पुन्न रो।
रुचि थी च्यारे रविर टाळ दधि अखरो ॥
दिव पति नख मित दख्य, बुधिवंतां धरो।
इण पर गीत झमाळ मत्त वतां करो ॥ १

यथा—परिपालण हणवत पर, वड हय अंकण वार।
दातारे दातार गुर, भूझारे भूंझार।
झूझारे झूझार वसू लख्द वांटणो।
खत्रां चो खत्रवाट, सु कीरत खाटणो।

---

[1] झमाळ का लक्षण—प्रथम दोहा, फिर एक चद्रायण (चांद्रायण) दोहे की चौथो तुक चद्रायण के प्रारंभ में दोहराई जाती है।

सूर सुभट सामंत, सुणो रावत सही।
रावळ वटकां रूप, महा भाटी महो॥
रिध वांटण निध राव वड, मेर समी वड मन्न।
लहर वरीसण जस लियण, दियण सु पातां दन्न॥
दियण सु पातां दन्न, दळां धण माल रो।
नरहरि सो नेठाह, अरधं आम्बरो।
धणी भ्रम माहेम, पचाइण सारिखो।
सांवत भीम समान स पूगो पारिखो॥
मारण अघ अरियां मलण, भारथ भ्रम्म भुजाळ।
जादम लाजां वंस चो, भांण जिसो तप भाळ॥
भांण जिसो तप भाळ प्रतपं भूपति।
वळिराजा रा विरद उधारै अधिपति।
जुजिठिळ सो जोधार, संभावण सांच रो।
वां हालो विरदैत, रिघु रैताहगो॥
दांन करन हर देव सो, अरजण जेम अभंग।
सो हरियद जिहांन सिर, जीपण जुड जुड़ जग॥
जीपण जुड़ जुड़ जग अखाड़े नद्दरो।
हणवंत सो हायाळ खत्री नव खड रो।
वीर हरै वर वीर, सदा कवि सारणो।
भोजां इंद्र समंद्र दळिद्रह मारणो॥ ४

इति भमाळ उदाहरण

*

अथ सावभड़ो[1]

आस आद तुक आंचली, तीन वीस कळ ताग।
चव तुक दूजी श्रो चतुर, जोड़ वीस कळ जाग॥

यथा– तू अफेर आ करीठ, पीठ घरहै थट्टा।
घोर निम्रोठ तू रोट पडनां घट्टा॥

---

[1] सावभड़ो का लक्षण—प्रथम पंक्ति में २३ मात्रायें और फिर प्रत्येक पंक्ति में २० मात्रायें।

यथा-तू गरीठ गाहणौ, भीठ भर खग झटां ।
भार भर भांजणौ देख अरियण भटां ॥ १
धार सरसी धरी जू सहरां धवळ तूं ।
अगम भारावीयां, दुगम भुज अवल तू ॥
पार कर विकट धर, जिसौ पांण धार तूं ।
महा अनमंध कर अभिनमां माल तू ॥ २
मेर जिम भार वर धारीयां मरद तू ।
भुजवरां भार धारी ब्रहमंड तूं ॥
वाधण ची अगड बांधणै बंध तूं ।
अवतारी पुरख नमौ अनमंघ तू ॥ ३
गुमर धारीया विरद धर अध चौ ।
नमौ जिण सिद्ध नुं विभोकर निध चौ ॥
अमळ जस धारीयां धमळ अण मिध चौ ।
ध्रुवां जिम छत्र रहि, देवरा सिध चौ ॥

इति सावझड़ो

*

अथ जंघखोड़ो[1]

जे सावझड़ जोड़िजै, जघखोड तेइ जोड ।
पाडव कळ अनुप्रास पढि, करि चोथी तुक कोड ॥

वार्ता- जितरी कळ सावझड़ा माहे कही, तितरी कळ जघखोडा मांहे कहीजै । चोथी तुक माहे भेद छै । पाच-पाच कळा का च्यार अनुप्रास कीजै, तद जंघखोडौ गीत कहीजै ।

यथा-नरां नाह रिमराह गजगाह करणौ निभर ।
वाहणौ वार आचार धन वोर वर ॥
करा मतो खत्री वंस तणी धारी कहर ।
तो खेतहर खेतहर खेतहर खेतहर ॥ १
घणा दळ हेडवण जेम राजा मघण ।
वस खटनीस जस पाळिवा खट वरण ॥

---

[1] समस्त वार्ता में स्पष्ट कर दिया गया है । कळा = मात्रा ।

रैण वानि वाजण सदा हेकण रहण ।
तो हरीयण हरीयण हरीयण हरीयण ।। २
कमध श्रोनाड़ भुज वसै दुजड़ै सकति ।
दास हरदास श्रो माधा पांचा सुदत ।।
पिसुण पड़ताळ कुळ भाटी चाढी प्रभत ।
तो धनौछति धनौछति धनौछति धनौछति ।। ३
करण पथ समीवड मोज भारथ करण ।
सांम सन्नाह रिछपाळ श्राया सरण ।।
तेज परताप परताप जेहौ तरण ।
तो वीरव्रण वीरव्रण वीरव्रण वीरव्रण ।। ४

इति जंगखोडो

*

अथ गीत जात पंखाळो[1]

दोहा— सोळ कळा श्रांणो सरस, जो पाखाळौ जोइ ।
सम व्रत्तां प्रसतार महि, हर नयणां पिंड होइ ।।

गीत माला रो कहीयो, रावळ मालदेवजी रै कुंवर सहमाल रो गीत—

यथा— परठवजे श्रस भड़ पै सारै, कोटा लेवण ची तकरारै ।
महि मालउत मरै काइ मारै, सह सो बुळ गावडै न सारै ।। १
खाग तियाग उनगियौ खडै, रिम त्रिय काइ श्रापणी रंडै ।
मालडे चौ महले चित मडै, छोगाळो श्राटीहर छंडै ।। २
वाका जडजे जीण ग्रहासै, पसरां द्यै देरावर पासै ।
ऊचा चित रासै श्रावासै, वसै न जादम पाधर वासै ।। ३

इति पांखाळो

*

[1] रघुनाथरूपक में छोटे सांणोर के समान ही इसे माना गया है जिसमें लघु गुरु का भेद नहीं और प्रत्येक गीत में केवल तीन द्वाले होते हैं पर यहां कवि ने १६ मात्राओं का सम छंद माना है।

अथ गीत सांणोर[1] जाति वरणणं—तत्रा दो लघु

दोहा– आंचळ नख मित मत अखै, दू चौथी कळ ताय ।
आद त्रितीय कळ आठदस, लघु सांणोर वणाय ॥

वार्त्ता– आदि तुक मात्रा २० कीजै । दूजी चोथी माहे सोळै मात्रा कीजै । पहिली तीजी मांहे मात्रा १८ कीजै । विसम व्रत्त प्रस्तार माहे—

गीत माधवदास रौ कहीयौ—

अकळ अणथाह अभंग जंग अरजण, स्वामि धरम हणवंत सारीख ।
दांन करण वीकम जिम पर दाव, अंग रघुवर इतरा सारीख ॥ १
मति सागर पथ वीरति मिळियां, सुतन पवन जिम स्वांम सनेह ।
अंग पति दत पर कज विकमायत, रावळ माल इमौ अणरेह ॥ २
बुधि रौ उदधि विजय जिम बांणै, प्रभू भगति अजनी सुत पेख ।
मोजा रवि ज वीकम दुख मेटण, मांढाहरौ इतां सम देख ॥ ३
सुमते समदक विधुज संग्रम, पसि व्रत पणै तिसौ पिंगाख ।
आचा कानी कविक उपगारी, भाटी भीम समी वड भाख ॥ ४

इति लघु साणोर रौ उदाहरण

*

अथ मध्य सांणोर[2] गीत कथनं

दोहा– कळा चंद कळ मित करौ, धरौ प्रथम मति धीर ।
तिथ मित दूजी चतुर तवि, वदि तीजी धुर वीर ॥

यथा–आणद घण किसन अहौ निम ओळगि, आणि मां वदे रिदा मड्डिणि ।
चित पखी कायम करि सचिता, चच दीघ सुज देसी चूणि ॥ १
सुख दातार भुवण त्रिहु स्वांमी, ताय भजौ निस दिन जग तात ।
तू मन मत कळपै जिन तोनू, मुग दीधौ मख कितौ इक मात ॥ २

---

[1] रघुनाथरूपक के अनुसार यह बड़े सांणोर के लक्षण से और छोटे साणोर के लक्षण से भी मेल नहीं खाता ।

[2] मध्य सांणोर का लक्षण—प्रथम तथा तीसरी पंक्ति में १६ मात्रा और दूसरी तथा चौथी पंक्ति में १५ मात्रा । उदाहरण में प्रथम द्वाले की प्रथम पंक्ति में १८ मात्रायें हैं, अतः इसे 'वंकिया सांणोर' कहा जा सकता है ।

जीव विचारे किम मत जोवं, जड़ हूं चेतन कीयो जेणि ।
करी सम सोच समथ हरि करसी, पोखण दीध सू भरण पेणि ।। ३
प्रभु जिण कीध सोच किण प्रभणो, प्रांणीयां नदरथ को प्रतिपाळ ।
गळो जेण दीन्हो गोपाळा, गाळो सो देसी गोपाळ ।। ४

इति मध्य सांणोर गीत उदाहरणं

★

अथ व्रहत सांणोर[1] गीत

दोहा– नरा मित पहिली न्हाल, दूजे पद मुनि भू दियो ।
सो सांणोर सचाळ, दीरघ जिण नुं दाखजे ।।

यथा– मधा मात तू तात तू प्रांण दीवांण, तूं सजण सहोदर तू सखाई ।
सगो साजण सयण तू सावळा करम, तू कुटब तू कत्त कमाई ।। १
गढ तू ग्राह गुर ग्यांन तू गोवीदा, गीत तू गूझ तू गुरड गामी ।
नाद तू वेद तू भेद तू नारायण, नेह तू निध तू सहस नामी ।। २
रग तू रळी तू रीझ तू रांमचद, रिध तू सिध तू रघुवंसराया ।
वाम तू सांस विश्रांम तूं वीठळा, मोह तू मुकंद तूं परम्म माया ।। ३
दांन भगतां किसन दुस्ट दांनव दळण, सजा भागे नही पिता खोलै ।
आवीयो हवे उवार तो ऊबरे, ईस रो भवा भव तूझ ओलै ।। ४

इति व्रहत साणोर

★

अथ हंसावळो[2] गीत

दोहा–सीह धरम सावत रो, सत्वा रोपण सोय ।
सो कहिजे हंसावळो, पिंड साणोरां पोय ।।

वार्ता– सिंहादिक धर्मादिक सामतादिक थी वखांणीजे, सो किण विध सो कहै, कि तू निडर रो नाहर, दान रो धर्म, अथवा धर्म रो अवतार, सेन रो

---

[1] 'व्रहत साणोर' का लक्षण २० तथा १७ मात्राओं के क्रम से प्रत्येक पंक्ति। रघुनाथरूपक मे इसे 'प्रहास सांणोर' कहा है।

[2] 'हंसावळो गीत 'साणोर गीत' का ही भेद माना गया है। रघुनाथरूपक के अनुसार इस गीत मे उल्लेखा अलकार आना आवश्यक है। उपरोक्त गीत मे भी 'उल्लेखा' अलकार का प्रयोग किया गया है।

सांमंत इण विध थी सत रौ रोपण कहतां थापणौ जठै होय सो हंसावळी गीत कहीजै ।

पिंड सांणोर–

यथा– कर्म रा कहर निडर रा नाहर, भड़रा भीम सतप रा भाण ।
तर रा कळप अतर रा तारग, कर रा करण सिरै कलियांण ।। १
चित रा भोज सु कितरा चाही, वित रा वीद्रवण सु वर ।
मति रा महण अछत रा मेटण, हित रा पाळण लाडहर ।। २.
वळ रा हणू निवळ रा वेलो, छळ रा जाग्रत विरद छत्राळ ।
दळ रा सवळ फता रा दोयज, खळ रा करण खगे खंगाळ ।। ३
अज रा अगज सुलज रा अधिपति, कज रा दूरज कार कहाव ।
धर रा वंसज धीरज धारण, रज रा सक जन रूका राव ।। ४

इति हंसावळी

*

अथ चोसर[1]

दोहा– देव मनुस अर दस्य दण, चहुं चहु च्यारे चरण ।
चोसर मझोर रच्चिजै, पिंड सांणोरा वरण ।।

यथा– सकत विसन सदा सिव सूरज, ब्रह्माणी हरि हर रवि रांण ।
देवी देव महादेव दिनकर, भगवती भगवत भव भांण ।। १
सितदा स्याम व्रसभपति हरि हस, पदमा अज नील सु नल कर प्रीत ।
मंगळा मुकद महादेव दिनमणि, आई अप्रभा रू हर आदीत ।। २
ककाळी किसन कमाळी दिनकर, नारी नृसिंघ त्रिचख ग्रहनूर ।
चत्रभुज चत्रकर उमावर जगचख, सिवदूती साईं जट सूर ।। ३
वाराही गिरधर सकर रातवर, लिछमीनाह ईस कमळ प्रजपाळ ।
भैरव जगदीस महेस प्रभाकर, कुमरी हरी गगधर किरणाळ ।। ४

इति गीत चोसर

*

---

[1] रघुनाथरूपक तथा रघुवरजस प्रकास मे 'गाहा चोसर गीत' वर्णित है पर यह 'चोसर' भिन्न प्रकार का है। इसकी प्रत्येक पंक्ति मे चार अनुप्रास (कठ) का प्रयोग आवश्यक माना गया है।

वार्ता— एक-एक तुक मांहे च्यार कंठसर सो चोसर, पांच सो पंचसर, खट् सो छसर, सात कंठ सो सतसर, आठ कंठ सो अठसर, नव कंठ सो नवसर। आगै सेख री आग्या नही। कोई कहिसी'क पंचसर आदि दे नवसर परजंत इणां रौ पिंड क्योंज व्यांध्या नही, सो ग्रंथकर्ता गीतां रौ नांम मांहे चोसर नाम लिख्यौ जिणसू चोसर हीज कीयौ। पंचसर आदि दे नैं नव सर परजंत विप्रौढोकति कहीजै।

अथ विधांनीक[1] कथन

दोहा- दोना तुक कंठ दाखिजै, आदि तीन अंत सात।
विधानीक इम कवि वदै, गाय सांणोरां गात॥ १

गीत ढाढ़ी गोयंद रौ कहीयौ—

यथा—पंच मुख गज पनग दांमणी पावक, गिड़ जहणू सायर गिर मेर।
इता पराक्रम रहे एकठा, साप्रत किसन तणी समसेर॥ १
सिंघ दुरसर पसबर विसहर भुख, सूर भीछक लियळ मिखराळ।
सगळा रा बळ रहै समंठा, केहर तूझ तणी किरमाळ॥ २
वाघ हसत पग विज वासदे, वाराह कपि दधि अनड़ विचार।
वळ सगळा छळ रहैं घणं वळ, तितरा तूझ तणी तरवार॥ ३
अग नद चील वीजळी आतस, कवळ वदर सर गिरद कहांण।
इतरा मिळ सहु दियै आसिका, कायम कमंध तणौ केवाण॥ ४

इति विधानीक गीत उदाहरण

★

गीत पुनः विधांनीक—

वार्त्ता- एक तुक माहे कीजै सो आगली तीनां तुकां माहे कीजै सो तौ सर कहीजै। दोया दोया तुकां कठ पडै सो विधांनीक, घणा कठ सो घणकंठ कहीजै।

[1] जिस 'साणोर' मे 'विधानीक जथा' (रीति विशेष) का निर्वाह किया जाय उसे 'विधानीक गीत' कहा है। रघुनाथरूपक मे 'विधानीक जथा' का प्रयोग भिन्न प्रकार से किया गया है।

अथ घणकठ[1] वर्णन

दोहा– अन्योकत घण कंठ अखै, सो घणकंठौ होय।
मत्त छंद प्रस्तार महि, पिंड साणोरां पोय ॥
गीत रावत श्री राघोदासजी रौ हमीरोक्त—

यथा– रेणू व्रन विहंग प्राग वड राघव, राघव सघण तसल जण मोर।
चील्ह सु कवि तौ राघव चंदण, राघव चन्द्र त पात्र चकोर ॥ १
पात्र हसत रेवा नद रघुपति, रुंख सु कवि राघवरतिराव।
सु कवि माछ तौ राघव सायर, रवि राघव चकवा कविराव ॥ २
राघव कुसुम भ्रमर जग रेणू, मागण पुत्त राघव पित मात।
सु कवि हंस सायर तू राघव, तू परमेस भगत कविपात ॥ ३
सायर सघण प्राग वड ससिहर, सुसर कुसम वीझ नद राव।
भक्ति मीत मलैतर माहव, जग एतां वड सिध सुजाव ॥ ४

इति घणकठ

*

अथ सींहचलौ[2]

दोहा– सीहचलौ सैसो कहै, धुनि सांणोरां धार।
सिंघालोका करि सरस, सैस सिरोमण सार ॥

गीत रावळ श्री मनोहरदासजी रौ रतनू जागै सूरावत रौ कहीयौ—

यथा– आगै सूर चो नूर नें वळे जळ ओहडे, पिंड सुत अनें नंद गंग पैठौ।
पंचमुख अनें ग्रह पूठ पाखर पडी, बिरदपति मांन नें पाट बैठौ ॥ १
भीम बळवत नें गदा झाली भुजे, दीघ दळ कैरवां सीस दूवौ।
कलावत मान नें तिलक कीधौ कमळ, हरि अनें गुरुड असवार हूवौ ॥ २
करण नें देण कज भडारा सिर कियौ, लक नें लेण हणवत लायौ।
महीपति मान नें छत्र सिर मढीयौ, अनत नें पाडवा माहि आयौ ॥ ३

---

[1] 'घणकठ' से तात्पर्य रघुवरजस प्रकास मे अनुप्रास है, पर यहां उक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है तथा इसमे 'सर जथा' का निर्वाह किया गया है। यहां दो वस्तुओं के वर्णन का क्रम अंत तक निभाया गया है।

[2] यहां 'सिंहचलौ' को 'सांणोर' का ही भेद माना गया है तथा इसमें वर्णित प्रत्येक पंक्ति मे सिंहावलोकन की रीति अपनाई गई है। रघुवरजस-प्रकास तथा रघुनाथरूपक में यह सांणोर से भिन्न तरह का छंद है।

वांण सारंग नें लखण पाणे वखे, प्रघळ दळ ग्रनें जळ बंध पाजा ।
कांन्ह अवतार नें साम्भीयो जांणि कंस, राव जदुवस नें हुवो राजा ॥ ४

इति सिंहचलो गीत

*

अथ तिजड़ों[1] तथा दो प्रश्न

वार्ता– हे गुरां पंखाळा मांहे नै त्रिजड़ा मांहे भेद कामु ? त्रिजड़ा मांहे तीन द्वाळा नै पंखाळा मांहे तीन द्वाळा सो कहो । झमाळादिक सर्व गीत तीनां द्वाळां, गो पंखाळो कहीजै । मात्रा पाछै कही सो मतांतर ।

दोहा– मळ मित मत्ता प्रथम कहि, सूरज मत फिर सोइ ।
तिजड़ो तिण नूं ही तवो, हर नयणा पिड होइ ॥

गीत भाटी रांमदास वैरावत नूं हमीर बारहट री कहियो—
यथा– रडी रानड़ि चढ़ु देस चरति, दुरजण भूमि डरती ।
वट हय याय वेग वैरावत, माड़ लद मल्हपंतो ॥ १
मारंभ रांम पवंग मफाळे, वैर सनेहां वाळे ।
रिमा गरम समघज रळियाळी, कां वोटी उगमाळे ॥ २
पाट रटं घोड़े भस होड़े, गुजड़े हाथ सजोड़े ।
योरा चाल्ने गांढ़ महा बळ, सोधी रांमें लोडे ॥ ३

इति तिजड़ो

*

अथ गीत चितइलोळ[2]

दोहा– मनु विगु करि मनु योग पर, पढ़िजै मंत पगाण ।
उथाळै अठ योग अग, चितइलोळ कहि जाग ॥
यथा– जशो रघुपति देव मुनि जग गुरां नर नर गेव ।
योदगू इत्यादि समरा देव हुवो देव, सो रघुदेव रे रघुदेव नित प्रति
उमापति नर सेव ॥ १

[1] तीन द्वालों वाला गीत, जिसकी पंक्तियों में क्रम से १६ और १८ मात्राएँ होती हैं ।
[2] रघुनाथरूपक तथा रघुवरजस प्रकास में दिए गए 'चितइलोळ' के उदाहरण तथा लक्षण में [illegible] मिलता है, पर प्रकार किस का लक्षण स्पष्ट नहीं है ।

वसिट अंगिरा चवन मुनिवर, अगसि कहि फिर अत्री।
नेट ध्यान लगाई नितही, गहन तुव निज गत्ती।
तो अवगत्ति रे अवगत्ति, सदगति देख देवा पत्ति ॥ २
करै ढाहे देह करमां, घड़ै भांजै घाट।
जेथ नहिं खिण काळ जाणै, नटवरां किय नाट।
तो ओ नाट रे ओ नाट, घट घट रूप हुई जिण घाट ॥ ३
ब्रह्मंड पिंड लगाय बालिम, गीत गावै गाथ।
जोतिमय उदयोत जिण रौ, नमौ देवा नाथ।
तो सस माथ रे सस माथ, भगतां अभय देणौ नाथ ॥ ४

इति चितउमग

*

अथ सोरठियौ गीत[1]

दोहा– चित उमंग उलाल विण, अगा जुत्त उपग।
सो सोरठियौ सेस कहि, सका छांड निसक ॥

गीत खेम हरीसिघोत रौ — दुरसौ जी कहै—

यथा–माया माणणौ हरिसद माणै, समर वेळा सीह।
हरा रौ सिरताज हाथां, खेमलौ अण बीह ॥ १
करण सो दातार कवियां, अडिग वाचा इद।
छावीयौ छत्राळ छोटो, वेसम हव जियद ॥ २
भीम पाडव जिसौ भारथ, मळण असहा माण।
आज आलम दुनी ऊपर, वज व वजे वखाण ॥ ३
वास रचि खट दरस मांगै, अवै मोजां चीत।
वापरे आथाण वंठौ, गवाड़ै जस गीत ॥ ४

इति सोरठियौ

*

---

[1] सोरठियौ' की प्रारम्भ की पंक्ति मे १८ मात्रा, दूसरी में १०, फिर आगे १६ और १० मात्राओं के क्रम से चरण रखे जाते हैं। तुकान्त लघु होता है। रघुनाथ रूपक में इसी को 'प्रौढ़ गीत' भी माना है। यहां दिए गए उदाहरण में १४ और १० मात्राओं का क्रम रखा गया है।

अथ भाखड़ी गीत[1]

दोहा– सीहगत द्वाळं सरस, अते आद अणाइ ।
गीत भाखडी नांम गिण, व्रत सोरठां वणाइ ॥

वार्त्ता– प्रथम सोरठियौ गीत कीजे, द्वाळं रै आदि अंत मेळ राखीजै, सा भाखड़ी गीत कहीजै । सेख मतात—

यथा– रांम रै सम वड प्रथी सोभा, निवडदे भुज लाज ।
दिन बडा तिम भुजै दीपै, छळ वडा सिरताज ॥ १
सिरताज कुळ छळ लाज साहे, वडिम आज अ्रईक ।
दरवार गह मह भडा दीसै, लाख अम लाखीक ॥ २
लाखीक लाख व्रहास नीका, पास जास प्रवीत ।
दिन रीत मोटां तणी दाखै, चढै वेळा चीत ॥ ३
सुज चीत ऋति सु प्रीत साहे, भीत सारू भार ।
जिण यार सहौ संसार जाणे, ऊजळा आचार ॥ ४
आचार पेख संसार ईखे, निवड भड जस नांम ।
रवि चद जा उडयद रेणां, रिघू रजवट नांम ॥ ५

इति भाखडी

*

वार्ता– च्यार द्वाळा गीत पूरण होई । पाच द्वाळां गीत सुवायौ कहीजै । साणोरादिक रौ नेम नही । झमाळादिक रौ नेम छै । सो सवाई भाखड़ी हुई । पाचा दुवाळां सर्व गीत सवायौ कहीजे ।

अथ दोढो कथनं[2]

दोहा– कथिया जे कथसी हिवै, रण द्वाळा थी रीत ।
कथियण सेसादिक कहै, गिण जिण दोढौ गीत ॥

---

[1] रघुवरजस प्रकास तथा रघुनाथ रूपक मे 'भाखडी गीत' इससे भिन्न प्रकार का है । यहाँ दिए गए उदाहरण मे सोरठिये गीत के प्रत्येक द्वाले का अन्तिम अक्षर दूसरे द्वाले के प्रारम्भ में दोहराया गया है ।

[2] जहाँ ६ द्वालो का गीत होता है उसे 'दोढौ' कहा है । रघुनाथ रूपक तथा रघुवरजस प्रकास में दोढ़ो के लक्षण इससे भिन्न हैं ।

वार्ता– सेसादिक क्वीसरां रा ग्रंथ प्रथी मांहे छै। सो जिणां री उकति ले नै हरराज कहै। जावन मात्र जिके गीत छै तिके कितरा एक कह्या नै फेर कहिसी। जिणा रा छव द्वाळा सो दोढ़ौ गीत कहीजै। झमळादिक कोई हुवौ, पिंड रौ नेम नही। चंदबरदाई रासा रौ कर्ता तिण रो कीयौ पिंगळ जिण माहे कहीयौ। सांणोर रा द्वाळा सो दोढो गीत कहीजै। ग्रा बात सेख सिरोमणि थी भिन्न।

उदाहरण वारहट ईसर गंगा जी नै कहै—

यथा-चाली विसन रा पगा हूंत ब्रहमड हूता चाली, विसन रा कमंडळा चाली वाह वाह।

मेर रा सरगां मांह पधारी सहसमुखी, पाहड़ां ग्रनड़ां विचै गंग रा प्रवाह ।। १
निमळा तरंग वेळ ऊजळा प्रवाह नीर, समळा करम मिटै तारणी संसार।
भली भात सेवा करै भागीरथ ल्यायौ भली, धन्य २ सुरसरी मुकत री धार ।। २
सत जुग त्रेता जुग द्वापर कळो मे सत्ति, नागां लोका सुरां लोकां नरां लोका नांम।
जाह्नवी हरद्वारी वैकुठी पैड़ो जिका, पाप रा कपाट भाजै कीजियै प्रणांम ।। ३
मुनेसां महेमा सेसां जोगेसां सरीखा मुगं, कवेसां ग्रनेसां भाखै मुखा यु सक्रीत।
ब्रहमा विसन सिव सूरज मरीखा वांदं, पारखत्र कीधी गगा प्रथमी पवीत क्रीत ।। ४
उलटा हजार धार गिरदा विहार ग्राई, ग्राधार ससार सारै महमा ग्रपार।
ग्रवतारां दसा जिसौ इग्यारमो ग्रवतार, कळा रूप जोती घणी वर्णे जळाकार ।। ५
पार तार च्यार जुग वळै ई तारवा प्रथी, विमळा उजळा जळा प्रघळा वहत।
महा पाप काटै परामुगति रा द्वार मिळै, करा जोडि नमौ मात ईसरा कहत ।।

इति दोढ़ौ कथन

*

ग्रथ दूणो[१]

दोहा– दूणौ जिण नूं दाखिजै, ग्रठ द्वाळा थी ग्रग।
नेट साणोरां नेम नहिं, सुझ भाणादिक सग ।।

वार्ता– किताएक क्वीसर साणोर रा ग्राठ द्वाळा रौ नेम करै छै। सु ग्रथा माहे किणी जायगा नही देख्यो। ग्रन्य पिंगळा माहे नेम कीधौ छै। सु भमाळा-

---

[१] जिस गीत में ८ द्वाले हों उसे 'दूणो गीत' कहा है।

दिक जावन मात्र गीत आठ द्वाळा कीजे । सो दूणो ही कहीजै । जिण भांत ईसर वारहट दोढो कहीयो, तिण रीत थी दूणो पण जांणणो । पांच द्वाळां सवायो कहीजै नेम झमाळादिक सो ।

अथ संगीत[1] गीत कथनं

दोहा– झमाळादिक गीत जे, अंगां जुत्त उपंग ।
कठ लय ताल म्रदग जिम, सो संगीत सुसग ।।

यथा– ध्रोंकट ध्रोंकट ध्रुक्ट ध्रुकट ध्रों, कटध्रों कटध्रों टिक टिक ध्रं ।
तिह समय ताल ठंकार कठ कति, कठ ठठकति सं कद्द ।। १
पग नूपर छिन छिन छिन्न न्न च, छिन न न न करि छिन नद्दं ।
तो त्तथ्थेई त्तत्थेई त्थेई तत्तत्थेई, सत्थय थक ति क सद्दं ।। २
रास मज्झि सहि वाम सझिसो, केसव बाजूवंध कर ।
सो मेर जेर धर स र र र सर, तो सर सर सर सर धरां सरं ।। ३
मुरज तारा कठ सद पग नूपर, कूपर कूपर कहि वाचं ।
तोक्ट ध्रो कठ्ठ छिन न न तथेई, सथ मझ कर सर नाच ।। ४

इति संगीत गीत

*

अथ भावन गीत[2]

दोहा– गान अग छत्तीस गिण, तिण विण वोले तेथ ।
सो भावन कवि सेस कहि, जोइ उदारण जेथ ।।

यथा– माची सावळी जणणी धरा विहारणी देवी ।
चहुँपुर प्रसिध देखो चामुंडा, किलम दळां दळीया केवी ।।
मग्द वडा महिसासुर मरदण, सुंभ निसुंभ निकंदण ।
मधु आदो अते जिण मुणिया, ब्रहमांणी तुव वदण ।।
देस अदेस विदेस पूजजै, सेस महेमां सेवी ।
माची सावळी जणणी धरा विहारणी देवी ।।

इति भावन

*

---

[1] जिस गीत में संगीत सम्बन्धी तबला मृदंग आदि के बोलयुक्त चरण हों उसे 'संगीत गीत' कहा जाता है ।

[2] छत्तीस राग-रागिनियों से भिन्न प्रकार से गाया जाने वाला गीत ।

पुन. उदाहरणं कथ्यते—कवि वेणीदास री कही

आई ओळगो अहि निस उर अंतर, रळयाळ ची रांणी ।
सेवगु वांचे आवे सादे, धज वड हथ धणियाणो ॥ १
तारा त्रिपुरा अनें तोतला, गोम नतारण गंगा ।
ताहरे भजन विना नहि तरीस्ये, तरीया सुजळ तरंगा ॥ २
जोनी सरूप जगत सोह जायो, कनिया अकथ कहांणी ।
जोगी संभु तणे घर जोगवि, इंद्र घरे इंद्राणी ॥ ३
पार कौण ताह रो पावे, वेदे चहू वखाणी ।
गुणमति सार ताहरा गावे, वेणों एकण वाणी ॥ ४
आई ओळगो अहि निस उर अतर ॥

इति श्री भावन

*

अथ व्याहलो[1]

दोहा— कळ नख मित तिथ मित करो, विसम व्रत्त प्रस्तार ।
सो भणिये कवि व्याहलो, वरणां चरण विचार ॥

वार्त्ता— इण भावन रा नै व्याहला रा च्यार द्वाळा होई तद पूर्ण गीत कहीजे । छ वाळा दोढ़ो कहीजे, आठा दूणो, सोळां द्वाळा रो होई सो सोहळो गीत कहीजे ।

यथा— विच बैठी रुकमणि नारी, हथळेवे राज कुवारी,
आए कार्तिकेय गण ईसो, आए ब्रहमा सहित महेसो ।
दीनी हो ब्रहमा गांठ खुलाई, डोरडो नही छूटे ,
वसुदेव थारो पिता वुलाई, थारे कह्यं न छूटसी ॥ १
देवकी हो थारी माई वुलाई, नदजी थारो बाबो वुलाई ,
जसोदा थारी धाई वुलाई, व्रजवासी लोक वुलाई ।
गोवळ का सहि ग्वाळ वुलाई, थारे कह्यं न छूटसी ,
जीत्यो जीत्यो द्वारका रो राव, वसुदेव घरा वधावणो ॥ २

इति व्याहलो

*

---

[1] लक्षण में २० तथा १५ मात्राओं के क्रम की व्यवस्था की गई है पर उदाहरण लक्षण के अनुसार नहीं है ।

अथ त्रबक[1] गीत

दोहा– मनु मत्ता अंते गुरू, जमक बध महि जांण ।
पुनरोकति दूखण नही, त्रंबक हरि गत आंण ।।

गीत रांम भाटी रौ—

यथा– खड़े न रांमौ खंग खरां जद, खड़सी जी रांमौ खंग खरा ।
त आयकन पायकन पायकन, आयकन पायक्न फौलफरा ।। १
कर ग्रहै न रांमौ किरमाळा, करि ग्रहसी रांमौ किरमाळां ।
तव ढालंढोल ढोलंढालं, ढालंढोल ढोचाळं ।। २
राम न मिळियौ रौदरडा, जद मिळसी रांमौ रौदरडा ।
जब गाजन वीजन वीजनु गाजनु, गाजन वीजन गेंद गुड़ा ।। ३
राम न मिळियौ सुज्ज किसुं, जद मिळसै रामौ सुज्ज किसुं ।
जब कोटं ईट ईट कोटं, कोट ईंट कोसीसं ।। ४

इति त्रंबकडो

★

अथ गीत अरहटियौ[2]

दोहा– कळ मित तुक पहिला करौ, धरौ महा कवि धीर ।
अरहट जिणनों आखिजै, वीजा रवि मित वीर ।।

गीत श्री नारायण रौ—

यथा– देखौ भळ जगत मझहि दाखै, रिखवर आद रटंतां ।
नकौ नाम श्री रांम तुल नर, घट घट रूप घटतां ।। १
कस सवस मारियौ केसव, हिरणाकुस ते हतियौ ।
परठै पण देख्यौ प्रहलादै, परमेसर तौ पतियौ ।। २
सखा सुर उर छेद सांमला, रेणां ल्यायौ रेसं ।
नट जिम रूप नटवरा धारै, नमौ नाथ अनमेस ।। ३

---

[1] 'त्रबक गीत' के प्रत्येक चरण में कुल १६ मात्रायें और अंत मे गुरु होता है। यमक अलकार का निर्वाह बिना पुनरुक्ति दोष के किया जाता है।

[2] 'अरहटियौ' के प्रत्येक चरण में १६ और १२ मात्रायें होनी हैं।

वळे परसरांम तू विप्र, काळ निखत्री कीन्ही ।
गुण कवि कोण ताहरां गावै, चवनन गति तुव चीन्ही ।। ४

इति अरहटियौ

वार्त्ता– छोटा सांणोर मांहे नै अरहटिया मांहे भेद कासूं, जिको कहै छै— हे महाकवि राय, कहतां वचन सरीखा लागै । सांणोर रै पहिलै द्वाळै अठारै मात्रा, नै बीजै बारे, इण माहे पहिलै तौ सोळै नै बीजै बारै कीजै । इतरौ भेद मांहे द्रढ़ कीयौ ।

*

अथ गीत जात गोख[1]

दोहा– तेरै मत्ता तीन पद, दिग मित चौथै देह ।
आठ चरण अत तीन कठ, गुणौ गीत गोखेह ।।

गीत महाराज श्री गर्जासघजी रौ—

यथा– आखाड़ै दळा अथाह, गजै सोध गुणागाह ।
रिमां सीस खूदै राह, तत्ता तुरांताह ।।
विरद्दां आजांनवाह, थापै उथै पातसाह ।
राखै ऊभै उभौ राह, त वाह वाह वाह ।।
करंतौ करे केवांण, मार काम लंतौ माण ।
सकै त्यासू सुरताण, डरंतौ दीवांण ।
जोधरौ गुणां जुवाण, महा छळी तू सुखमाण ।
भाळीयळ जेहो भाण, त भाण भाण भाण ।
तवां कोटा छात नूर, प्रथीपती दळा पूर ।
भह केत्रां बाळ नूर, खयगां रा खूर ।।
गयदा बडा गरूर, चमू सत्रा करे चूर ।
राज बीयौ राजा सूर, त सूर सूर सूर ।।
मोड़े खळा करै मोख, त्रिज काज डावै तोख ।
परजानों दीयै पोख, राजा रदि रोख ।

---

[1] इस गीत की प्रथम तीन पंक्तियों में १३ मात्रायें और चौथी पंक्ति में १० मात्रा होती हैं। कुल आठ चरण होते हैं और अंतिम चरण में तीन अनुप्रास होते हैं।

अस्स हांसौ सदा ओख, सेवंगा समापै सोख ।
जोध धूग करै जोख, त गोख गोख गोख ।। ४

इति गीत जात गोख

★

अथ गीत जात अड़ियल[1]

दोहा– चंद्र कळा मित प्रथम चवि, इण विध वेदां आख ।
इक द्वाळौ अड़ियल अधिक, देव सेस सो दाख ।।

गुण तिलक मतात् उदाहरण--
ताप पेख अरिहर धर वाजै, वाजित्र लाख तीस धुनि वाजै ।
धरचण खळ खग्गं भटधारी, इम जैचंद तपै अवतारी ।।

अथ गीत जात कड़खौ[2]

दोहा– तेरै मत्तां प्रथम तवि, दिग मित दूजै देह ।
सो कडखौ कवि सेस कहि, गीत गांन करि गेय ।।

वार्ता—इण गीत रा च्यार द्वाळा नही ।

यथा– सवाई सुरताण कांम, ऊ तेग बहादर. जग्ग अजेरा जेरणा, वर दीध विसभर ।।
पास रणै इस फेरिया, ऊगती फज्जर. आय निहट्टा वैर हर, खड खग्गा गज्जर ।।
वाजिद पीछा वाळिया, नर वंकी निज्जुर. जोधा भूझिया जिम, लका महि रघुवर ।।
पड़िया सीस अजानवह, धड़ चेखल सद्धर. जाणि असाढ़ अकास से, सिर पडिया वज्जर ।।

इति गीत जात कडखौ

★

वार्ता– तेरै कळा प्रथम, दूजै दस कळा सो निसाणी छंद कहीजै । कडखै निसाणी माहे भेद कासू जिको कहै, निसांणी माहे तेवीस मात्रा री एक तुक ।

---

[1] 'अड़ियल' के प्रत्येक चरण मे १६ मात्रायें होती हैं ।
[2] 'कडखो गीत' की प्रत्येक पंक्ति में २३ मात्रायें होती हैं पर १३ और १० मात्राओं पर यति रहती है ।

जिण तरै री च्यार तुक सो निसांणी । इण मांहे तेरै मात्रा जुदी नै दस जुदी । भेळी करीजै नही, सो कड़खो ।

अथ ताटंको गीत[1] सो वर्ण गीत छै

दोहा– मुणि सगणां गण करि मुणो, अंत मेर कर आख ।
दखि ताटंको चरण दुव, सेस सिरोमण साख ।।

गीत रावळ श्री माल रो–

यथा– अभिमांण अणंकळ आसित उज्जळ, तेज झळाहळ तास ।
खग वोल वडा खळ साजित मव्वळ, वीर सिहूंज सवास ।। १
भिरदार सकाज मढ़ापति साहव, मेर समाजह मत्त ।
अय दैणद राजन कारण आख, विहेजमलौ खट अत्त ।। २
भड पोख महावळ देस सुसव्वळ, पोरस भीम अपाल ।
रढि रीमण भांजण सूरण सुथभण, मौज समदह माल ।। ३
जिण माल दुभाळ सिधाहि दुवांण हि पोरस भीम अपाल ।
सुरतांण सुदव्वण ढाल अड़ी सभ, साह तणै उर माल ।। ४

इति गीत ताटंको

*

अथ गीत संपखरो[2]

दोहा– दत अर्द्ध मित प्रथम दखि, मुनि मित दूजी माण ।
सो सठ अख्खर सेस कहि, अद्ध दलति महि आंण ।।

यथा– चामरां भाटका मोज, पोसाका हाटकां चोज ।
गुलावा अम्मरां स्वास, भंवरां सु गात ।
जगी चमु मोड लोहे, अभगी अजोड़ जोधो ।
छात सुरां जोड़ मोहै, हिन्दुवाणां छात ।। १
घूघरै डंडाळ धोसा, छाकीया सुडाळ घूमे ।
वेघाल पंखाळ गोण, हद्दू वधी वाल ।

---

[1] 'ताटंको' का लक्षण—सात सगण और अंत में एक ह्रस्व वर्ण ।

[2] 'संपखरो' का लक्षण—१६ और १४ अक्षरों के क्रम से ४ पंक्ति का प्रत्येक द्वाला होता है जिसमे ६० अक्षर होते हैं । चार द्वालों का पूरा गीत होता है । रघुनाथ रूपक तथा रघुवरजस प्रकास मे प्रथम चरण मे १८ अक्षर रखे हैं ।

लोहगी अडाळ कोट, अभंगी भडाळ लीधां ।
प्रथीपाळ बरावरी, प्रतपै भूपाळ ॥ २
टांची घाव भाट कारू, अवी घड़ै ग्राव टोळ ।
सुरंभी जड़ाव पाट, हाटकां समाज ।
सिंगी घाव गोखड़ां, वणाव वेल खभ सोहै ।
राव धीग सुरां जोड़, दीपतो विराज ॥ ३
हय विलद पायगा, वाह रथां जोड हीसै ।
प्रात में सक दवारै, वाचिजै पुराण ।
सेविया समंद राजा, धारणा गिरंद संत ।
प्रतपै अजांनबाह, इंद चै प्रमांण ॥ ४

इति सपंखरो गीत

*

वार्त्ता– इण गीत माहे सोळै अखर, प्रथम चवदै अखर आगै, इण रीत कीजै । पिंगळ रै मत्त वर्ण गीत छै, किणी करै मत मात्रा गीत छै । सो तौ सर्व लघु करि पढ़ियो नही जाय । वर्ण छद रै मत सर्व गुर कर भणियो नही जाय । तद सकर गीत छै ।

अथ गीत जात सेलार[1]

दोहा– चवदह मत्ता चरण दुव, इण विध च्यारे अख्य ।
सो सेलारी सेस कहि, देव सेस इम दख्य ॥

यथा– सझि काटळ फोज सवायो, असि खेड धोधदे आयो ।
जोधार खत्रीवट जाडो, ओ भीच आहड़ां आडो ॥ १
पतस्याहि हुरम पुकारै, (रे) मेवाडो अचळो मारै ॥ २

इति सेलार

*

अथ चोटीबंध[2]

दोहा– तीन द्वाळे कहि तिकौ, चोथै चोटीबंध ।
सेस आदि सु कवि सहू, बाधे एम प्रबध ॥

---

[1] 'सेलार' का लक्षण—प्रत्येक चरण में १४ मात्रा। रघुवरजस प्रकास व रघुनाथ रूपक में इसके लक्षण कुछ भिन्न हैं ।

[2] तीनो द्वालों की बात जिस गीत में चौथे द्वाले में कही जाय उसे चोटीबंध कहते हैं । जथाओं के हिसाब से इसमे अंत जथा का निर्वाह किया गया मालूम होता है ।

तत्रा दो च्यार प्रकार—एक तौ वंध, द्वीतीय नागराज, तृतीय रूपक, चतुर्थं चित्रक, वार्ता निरूपणं—तीनां द्वाळां री वात चोथै कहै सो तौ चोटीवंध कहीजै। नागराज विड तीनां री वात चौथै कहे सो नागराज कहीजै। रूपक अलंकार थी ऊपजै, चित्रक सम व्रत्त माहे चित्र थी ऊपजै। इम च्यार जात जाणवी।

गीत आढौ दुरसौ जी कहै, गीत चोटीवंध उदाहरण—

यथा– गिरे ज्यों सुमेर मेर, तरे प्राग सिरे रेण। मिणधरे सेस रूप, धनधरे नांम ॥
पणधरे नरे अन, चापधरे जेम पाथ। रूप रेई ढरे नरे, मारू हरी रांम ॥ १
तणेव ग्रहेण सूर, खगेण तगस्य तेण। वन्नरेण वेण गेण, सुत एण वाव ॥
वलेण भीमेण जेण, जोत केण जेण वभ। हरेण भडेण तेम, घूघडेण राव ॥ २
तवेण सुवेण इंद, अव एण मांण तंग, अवकेण चरेण चख, अोखधेण अन्न ॥
मिधेण गोरख मेण, सत्त तेण सिंधु सुता, जदुवेण छात जेम, दूसरौ किसन्न ॥ ३
भड छाह हेल विस, मीत जीव वाण मौज। तेज धाव डांण जोम, छूंट पुण्य तेस।
अव्व चख्य सुख्य यांन, सतसत्रवाट गिणा। नरेसां रै रूप जेम नाथ रौ नरेस। ४
इण गीत मांहे तीन द्वाळां री वात चोथै द्वाळै छै।

इति चोटीबंध गीत

★

अथ दुमेळौ गीत[1]

दोहा– चन्द कळा मित प्रथम चवि, तिथ मित आगळ तेम।
दोय तुकां मिळ दाखिजै, जोड़ दुमेळौ जेम ॥

यथा– मौजा ममपणा व्रिद लेयण मोटा, ताकवां व्रण गमण तोटा।
जुण खळां खग करण जुद्दा, आव होह नरनाह उद्दा ॥ १
गढ गढ राखण सुज सगळा ही, साभ्र अरीयं रूक सहला।
दवटा गोठ छका मण दारू, मारका भड बाहुड़ मारू ॥ २

---

[1] 'दुमेळौ' का लक्षण—इसमें १६ तथा १५ मात्राओं के क्रम से प्रत्येक चरण होता है तथा प्रत्येक दो चरणों की तुकों में मेल रहता है। रघुवरजस प्रकास तथा रघुनाथ रूपक में इसके लक्षण इससे भिन्न हैं।

घजवड भाड़ण खळांध डाटां, वड कमध चालण कुळवाटां ।
एकर सोव लिजौ अवतारो, धर माद्रू उदा व्रतधारी ।। ३
सत्र घटां खगभाट सधारण, इळ दस दिसां सुजस उचारण ।
पहु नव कोटां चाढ़ण पाणी, सत नायक आवौ सगांणी ।। ४
पाळग वंस भडा कवि पाता, वसधा रखण कीरत वातां ।
ढाहण रिण खग कुजर ढालां, राज भाण वळौ नव मालां ।। ५

इति गीत जात दुमिळा

*

अथ भ्रमरगुंजार[1] गीत

दोहा– चवदह मात्रा चरण चव, सम व्रत्तां प्रस्तार ।
सेस सुक गुर कहि सरस, गहौ भ्रमर गुंजार ।।

यथा– रांमोइ राम जप श्री रंजणं, भव पाप दुख भय भजणं ।
त्रैलोक दूतर तारण, हरि चरण पाप निवारण ।। १
जो साध मुनि गावै सही, कवी वालमीक कथि कही ।
सो ग्यांन सकर चित गही, चवि चेतना चेतन चही ।। २
रिण रावण जुडि उद्धर, इह हेत लोकं अवतरं ।
कवि ग्यानवत सु गुण करं, उद्धार पारग निरभरं ।। ३
जय जैत्र सोल सियपती, जय सिद्ध बुद्धी सदगती ।
जय जती पाळग जतपती, जो मुणय जय मुख अभीमती ।। ४

इति गीत जात भ्रमरगुंजार

*

अथ प्रस्न– हे गुरां, कवीसरां, कविरावां रा छात, हे उधार पाळग, हेतवेता रा तात, इण भ्रमर गीत गुंजार माहे भेद कासूं ? नै चवदह मात्रा छै प्रस्तार माहे जिणरी तरै रौ सुमुखी छद तिण माहे भेद कासू, सम व्रत्तां गीत नै छद पिण सम व्रत्त हीज छै सो कहै । तरै कुसळलाभ जी पिंगळ रै मतात उत्तर दियौ––

---

[1] 'भ्रमर गुंजार' का लक्षण—प्रत्येक चरण मे १४ मात्रा और चारो चरणो के तुक मिलते हैं । रघुवरजस प्रकास तथा रघुनाथ रूपक में इसके लक्षण भिन्न हैं ।

सोरठा– रघुवंमी पख रांम, रांवण पख जद राकसां ।
मिळ नारद जिण नांम, तिम गुण गीतां छद मिळ ।।

वार्त्ता– नारद मुनि श्री रांमायण रै समै रघुवंमी रौ पख देखैं । तद श्री रांमजी सों आय मिळैं । राकसां रौ पख देखै तद रांवण सू आय मिळै । त्यौं ही ओ गीत छै । छंदां माहे नै गीतां मांहे मिळै ।

*

अथ गीत काछौ[1]

दोहा– मुनि मित मत्तां पांच थळ, पांडू मित खट पाय ।
विश्रांमां कठ एण विध, काछौ गीत कहाय ।।

वार्त्ता– मत्ता जिम कही तिम ही कीजै । पिण एक मांहे व्यंग जांणणौ, सो कहै । इण मांहे प्रथम तीजी तुक मेळ राखीजै । दूजै नै चौथै मेळ कीजै ।

यथा– मारका दळ राम मेल अरि उखेले, पाज जेंले पाथरां ।
सुज चाडि सिया कोप किया, जागिया रिण जग ।
वदर बडाळा भड भुजाळा, करण चाळा कांम रा ।
वरियाम वका लिगण लंका, असंका अणभग ।। १

परठ पाथर गिवर सायर, विसम थरहर वाज ।
आवीयौ सेना रांम जेना, धजा केना धज्ज ।
घज रथ पतका आण वका, जुडे लंका काज ।
जळजळा विवा कर उलघा, सेन सधा सज्ज ।। २

दांणव कटाळा पड अटाळा, भटाळा भूगोल ।
पय लटा लट्टा चटां जुट्टां, पाछटां गज घंट ।
गाहटा घटा दरड़ भटा, खगभटां रिण वोल ।
गदा मुदगर भरर पाखर, सघई धर हर घंट ।। ३

जो कंध भग्ग द्रख्य लगा, किना खगा खेत ।
दुख टाळ सभ देव वभ, सधर खभ भज ।

---

[1] इस गीत का उदाहरण लक्षण से मेल नहीं खाता । रघुवरजस प्रकास में इसके लक्षण भिन्न दिये गये हैं ।

घर घमल मंगळ, कळ लहू वळ, भळळ भळीयळ देत ।
किळ खळळ निरमळ सळळ परमळ, हळळ मळीयळ कंज ।। ४

इति काछौ गीत

★

अथ त्रिकुट गीत[1]

दोहा– चवदह मत्ता चरण दुव, तिय सत वीसां सोइ ।
तिण थी मिळ दुव चवद वद, त्रिकुट गीत इम होइ ।।

वार्ता– प्रथम ही चवदै चवदै मात्रा री दोई तुकां कीजै । तठा आगळ सताईस मात्रा री तुक कीजै । तठै ईज मेळ राखीजै । तठा सुं वळे चवदै चवदै री दोई तुकां कीजै । पछै सात सात मात्रा री वीस तुकां कीजै । इकीसमी तुक मेळ राखीजै । इण विध सु एक द्वाळौ होई ।

यथा– आचार चहु चक ऊपरै, रण राण पारंभर मरै ।
रिण माल सुत धर सतर ऊपर खेडोया खरहंड ।
अति घोर रवि रथ उभ्भरे, थह सकह अर पुर थरहरै ।
डमर लसकर, पसर हेमर, कठठ मद झर ।
सधर कुजर, पहटि गिरहर, थरर धर पुर, ईख दिनकर ।
संकर उस्सर, अरर अपछर, सुवर आतुर, सुसर त्रमसर ।
घरर समसर, पसर लसकर, धरर पाखर, धजर जमधर ।
कुत भुज भर, चीत फर हर, चमर चौसर, सभे छत्रधर ।
सतर धर सर अतर खळ ऊ चड ।। १

जिण वस असरिण नहि वळे, दहकध सा सामत दळे ।
तिण मझ्झ सांमत सूरवर धर अकर नर वर इद ।
जिण वस कवि जण को कहै, रसण सर भर सेहि सहै ।
भळळ भळियळ, कळ लहू कळ, सळळ सळियळ, उदधि खळभळ ।
मेर धर चळ, हरिय किय छळ, प्रळय तण जळ, दानव दभळ ।
सेस टळियळ, उतळ वित्तळ, सुतळ तळ थळ, रांम तण दळ ।

---

[1] 'त्रिकुट गीत'—प्रथम चरण में १४-१४ मात्राओं पर यति से २८ मात्रा फिर दूसरे चरण मे २७ मात्रा, फिर ७-७ मात्राओ के २० चरण ।

अमित अंग बळ, सक्कळ घण थळ, अतळ कर कळ, सेस दिन खळ ।
हळळ पयदळ, अळळ असियल, ढाह ढायल, मछर मायल, हळळ रळनळ नंद ।।२
वेद उदधि री मछव दिजें, सुज कज वसी कवि कहीजें ।
देस सुख लख नांहि दुख नांहि खचर श्रत्रिय दास जित्रिय ।
जो जित हासं जंपीयं, कठिठ अरीहर कंपीयं ।
कपिय सायक, सेन नायक, पेल पाइक, गहो गाइक ।
घुम्म घायक, जेथ जायक, किलम कायक, गणा गायक ।
सरण सायक, भेद भायक, कळळ हूंकळ, ललत वंकळ ।
देस दव्यं, सोळ सव्यं, लिये लख्यं, सरण सरसं ।
सिघ दरस, कूट कंस, कपट जितिय, माठ मित्तिय ।। ३

इति विकुट गीत

*

अथ सतखणो गीत[1]

वार्ता- रस(ख)करो पिण इणनें हीज कहीजें । सालूर पिण इणनें हीज कहीजें ।

दोहा- सत सत मत्ता सतखणा, त्रिक्कळ अंत तवेण ।
सो सतखण गीतां सरस, तवि सेसं कवि तेण ।।

यथा- पुर नयर गिरवर, हुवत पाधर, थरर भंगर, विमर थरहर ।
डुळं सायर, डरं अणडर, विहर घर दुरवेस ।
पवंग फरहर, फील मदझर, चीघ धरफर ।
आवियो घण, जाण इण पर, रांण खड़ राजेस ।। १
वजत नौबत, वजत घण भत, प्रळत छपत्त, जंप अजपत ।
मुडत फणपति, अगत मूभत, मिळत गरदत मेंन ।
उवत ऊणत, छिवत अद्‌भुत, जुगत विरदत, सुतन जगपत ।
अति प्रवसत, जगत आयो सिरै असपति सेन ।। २
देखत सव्वल विजळ झव्वळ, दाणव अटल, उघळ उज्जळ ।
जळहळ विवळ प्रहस वळ वळ जोघ ।

---

[1] रघुवरजस प्रकास में 'सतखणो' 'रसखरो' तथा 'सालूर' के लक्षण भिन्न भिन्न हैं । यहाँ पर सात-सात मात्राओं पर यति और अन्त में तीन मात्राओं का क्रम अपनाया गया है ।

नीसांण वगा लंक लगा हणू खगा फावीयं ।
अटळ दाणव पटल पड़टळ भटळ संघट का गुरं ।
लांगड़ा भांगड़ हणू जांगड सोल सांमत संबरं ।
जर जोघ लखमण अंगद हणमत जामवंत गवायकं ।
कुंमेण जुट्टं करग तुट्ट महा भट्टं सायकं ।। १

तो धड महि घूमता जी रमता रिण रात्त ।
वाहरू सति राजी गंजणा गयदत्ता ।
तो गयदंत गजण भिड़े भजण रिणे मंजण रेखीयं ।
कर करड़ भगं वरवरड अनड़ं गरड़ दड़नड सेखीयं ।
पयदल लटं चटं पाछट गज घटगा ।
इम मार पेले जोम जेले उखेले अण भंगगा ।
वंड टोप वीरत रूपरेखे फतै रघुवर फावीयं ।
घरर धन जिम सरर सलिलं, जरद मरद आवीयं ।
कोसीस मेखल लक लकळ, ध्रुवे घन जिम जिम धावीयं ।
बळवंत वकळ लखण ईखे, सिया मन सघावीयं ।
गह गह गज दळां जी, बळ बळ वीजळा ।
अक वक गढ यळां जी, राकसां रिम रळां ।
तो रिम रोळ राकस फते वारु सुमी या सो कसु सोहीयं ।
सिणगार सोळह चढि हिंडोळ्ह, हाथ चूड़क मोहीय ।
खट तीस बाजा ध्रुबे भ्राजा, समाजा अण भग रा ।
ढळकावि नेजा धज पताका, विमळ वेणी संग रा ।
सुर धमळ मगळ राग संगळ सखी अपधर सांघणी ।
श्री राम वर वर सिया कर घर, वरण सभ्रम वीदणी ।
गज घट नेवर रोळ घटा हार चीर स नाहड़ा ।
कठ सरी वाधी कठ सोभा, वयण लोभा वंकड़ा ।। ३

सिणगारा सक लाजी लोयणा वकड़ा ।
लखमणा लेखवै जी वयणा फिर वहे ।
फिर वहै वैयण वाच मुग गतदि पति मुग जिम चहीयं ।
आदीतवार हुव दन उगा, लखण फिर पग वदीयं ।
आरती युतळ थाल भळहळ, दीपक कर देवागणा ।
इद्राण आवीगि वाजत फिर ब्रह्म देवी अगणा ।

सिय पाय लगी दुख उलगी भय सु भगी भ्रंतियं ।
कर जोड़ बायक अमृत सायक चिरं सहितं कनीयं ।
घण वजत त्रंबक गड़ड़ घन जिम रांम सिय बाधावियं ।
आरोह रथं भ्रात जुत्तं पंथ लिय आजोधीयं ।। ४

इति गज गीत

*

अथ पाड़गति

दोहा– नख मित सिख मित जख्य मित, चवि चवि च्यारे चर्ण ।
सेस सुधार उधार कवि, पाढ़ गति इम वर्ण ।।

यथा– गिरवर वाल रे गढ मंदिर......
.. ...गोखे कोड वरीस......कमणी घर वलहो ।
जम थारो पूजाह रावळ गावे रांणीयां ।......
वैरी थरहर थटां तरवटां घाघरटां पाटां......
......छूटां जूटां घटां ऊमरटां खगभटां, भटां नटा ज्यों ।
......भिडंत ।

इति पाढ़ गीत

*

अथ पालवणी[1]

दोहा– च्यारे चरणां चूप सों, सोळै कळ सरसाइ ।
सो पालवणी सेस कहि, सम प्रस्तार वताइ ।।
रावळ माल राज्य प्रताप वर्णन—

यथा– हुए मगळाचार मुहुर्सं, वळे उद्याह जुक्त घन वर्सं ।
दुखी नांहि जिण नगर मझारं, वणे रूप देवांण वजारं ।। १
इधक तेज आदति तप इळ, रांम राज वैकूट किनाकिल ।
वस्त अनेक देस ची वद्द, हुए हूकळा जांगळ नद्द ।। २
सोंधा अगर सुवास सरस्स, देवलोक जिम लोक दरस्स ।
जस्स सुवास दसो दिस जैरी, वडिम वखत इळा नहि वैरी ।। ३

---

[1] पालवणी का लक्षण–इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्रा होती हैं तथा चारों चरणों की तुके मिलती हैं ।

कंध सुलग्गा, असंध उलगा, हाडं भगा, दरयल जगा ।
गाहटंगा, खड़ीय खगा सोध ।। ३
पिंडा तट्टां, जू जू वट्टां, भांजण घट्टा, पेल सु छट्टां ।
नेहं हट्टां, जोध सु जुटा खेढ ।
अभ भग भारी, खग सहारी, वाण हुकारी, अग पलचारी ।
सीम उसारि, कुंवर फतारि वेढ ।। ४

इति गीत सतखणो

*

अथ एकअखरो गीत[1]

दोहा– आदि अखर कहि एकसा, द्वाळां मांझ सु दख्य ।
सो एक अखर गीत कहि, सेस सिरोमणि सख्य ।।

यथा– कहो किसन करता करणाकर, कमळा कंत कोपायां काळ ।
केसव केस कोयणां कमळ, कांन्हो कूड़ तणो कोदाळ ।। १
नारायण नर नरक निवारण, नांम नाथ नायक नाथेस ।
नलनी नील नेत्र नासावर, नारसिंघ नमो नरवेस ।। २
माणस ईस मच्छर मुर मरदण, मंद मुख अग ज्यों मूकत ।
मांण मेलवां मदन माताहत, मिळत मेळ मिण माळा मंत ।। ३
राकस रिमा रोक रंढ रांवण, राम रूप राघव रघुराव ।
रेस रसातळ रिण रोळंतं, राकस वळ छळियो द्विजराज ।। ४

इति एकअखरो गीत

*

अथ एकलवयणो गीत[2]

दोहा– अंत अखर सोइ आद कर, इम जिम तिम सम पाय ।
जोड सु एकल वयण जो, सो अंग सांणोराय ।।

यथा– कदळ लोक कियो जम माजा, जाभा भेर रिला लख खेम ।
माहरा दुख सरोवर रघुपति, तारण नद दिल लखम एम ।। १

---

[1] प्रत्येक द्वाले के प्रत्येक चरण का आदि अक्षर एकसा होता है। रघुवर-जस प्रकाश तथा रघुनाथ रूपक मे इसके लक्षण भिन्न हैं ।
[2] इसे भी 'सांणोर' का ही भेद माना है ।

मेर गिरोवर रेख खरा क्रम, माहव वाहर रिमां भ राख ।
खिमा करो राघव वसुधा पति, तार रसातळ लेखम राख ।। २
खरौ भरोसौ सुज जादव पति, त्रिभुवण नाथ थिरे वर थांन ।
नमो मुकद दमोदर रिख पति, तवि विनती तोकम करि कांन ।। ३
नीर रह्यौ जग ग्राह सु रासै, खीण न की कीरति तकि काज ।
जसुमति नद दखौ पिण पिण मह, हीय मझि खरौ ध्यांन जिण लाज ।। ४

इति एकलवयणो

*

अथ वार्ता संकर—

सांणोर ऊपर च्यार अथवा पांच अख्यर होइ सो मुकट गीत कहीजै । सूर नै भांण एक हीज सुचल गीत सर्व लघु साणोर नै कहीजै । सुचल नै कितरा एक कवीसर मणधर कहै छै । जिण रौ अर्थ समस्या माहे सो दीपक कहीजै । जिण दीपक नैं कितरा एक गहन कहै छै नै त्रिकुट मांहे वीस तुक सात मात्रा री छै । तिण जायगा तीस कीजै सो त्रिकुट कहीजै । नै जिण री ही जायगा दस दल तुक कीजै तोइ त्रिकुट कहीजै ।[1]

अथ गजगति[2]

दूहा– बारह मात्रा प्रथम वद, दिग मित आगळ देह ।
फिर बारै दिग मत्त ही, सीहगति सर सेह ।। १
सत्ताईसो भरस फिर, वसु मित विध वाखाण ।
सो गजगति सेसौ कहै, जोड़ सुकवि पण जाण ।। २

गीत श्री रामजी रौ बारहट माला रौ कह्यौ—

यथा– परठ कै पायरजी गिरवर सायरं विखम रै वाहरंजी, पाजरं उपरं ।
सो ऊपरं सायर विखम पाधर, पथर गिरवर पेलीय ।
सीत रै वाहर रीछ वानर, धरर थरहर सेलीय ।
जळ जळा विद्या पल उलघा, वळावळ दळ आवीय ।

---

[1] रघुवरजस प्रकास मे भी मोण गीत, दीपक गीत, त्रिकुट गीत हैं पर उनके लक्षण इनसे नहीं मिलते ।

[2] रघुनाथ रूपक मे दिए गए उदाहरण मे इस गीत की लय मिलती है ।

नीसांण बगा लंक लगा हणू खगा फावीयं ।
भटळ दाणव पटल पड़टळ भटळ संघट का गुरं ।
लांगड़ा भांगड़ हणू जांगड़ सोल सांमत संवरं ।
जर जोध लखमण भ्रंगद हणमत जामवंत गवायकं ।
कुंभेण जुट्टं करग तुट्टं महा भट्ट सायकं ।। १

तो धड महि घूमता जी रमता रिण रात्त ।
वाहरू सति राजी गंजणा गयदत्ता ।
तो गयदंत गजण भिड़े भजण रिणे मंजण रेखीयं ।
कर करड़ भगं वरवरड श्रनड़ं गरड दड़नड़ सेखीयं ।
पयदल लटं चटं पाछटं गज घटगा ।
इम मार पेले जोम जेले उखेले श्रण भगगा ।
वड टोप वीरत रूपरेखे फतै रघुवर फावीयं ।
घरर घन जिम सरर सलिलं, जरद मरद श्रावीयं ।
कोसीस मेखल लक लक्ळ, ध्रुवे घन जिम जिम धावीयं ।
वळवत वकळ लखण ईखे, सिया मन सधावीयं ।
गह गह गज दळां जी, वळ बळ बीजळा ।
श्रक बक गढ थळां जी, राकसा रिम रळा ।
तो रिम रोळ राकस फते वाए सुसी या सो कसु सोहीयं ।
सिणगार सोळह चढि हिंडोळह, हाथ चूड़क मोहीयं ।
खट तीस बाजा ध्रुवे श्राजा, समाजा श्रण भग रा ।
ढळकावि नेजा धज पताका, विमळ वेणी संग रा ।
सुर धमळ मगळ राग सगळ सखी श्रपधर साधणो ।
श्री राम वर वर सिया कर धर, वरण सभ्रम बीदणी ।
गज घट नेवर रोळ घटा हार चीर स नाहडा ।
कठ सरी बाधी कठ सोभा, वयण लोभा वंकड़ा ।। ३

सिणगारा सक लाजी लोयणा वकड़ा ।
लखमणा लेखवं जी वयणा फिर कहै ।
फिर कहै वेयण वाच मुख सतदि पति मुख जिम चहीयं ।
श्रादीतवार हुव दन ऊगा, लखण फिर पग वदीयं ।
श्रारती कुसळ थाल झळहळ, दीपक कर देवागणा ।
इद्राण श्रावीसि वाजत फिर ब्रह्मा देवी श्रगणा ।

सिय पाय लगी दुख उलगी मय सु भगी अतियं ।
कर जोड़ बायक अमृत सायक चिरं सहितं कनीयं ।
घण वजत त्रंबक गड़ड़ घन जिम रांम सिय बाधावियं ।
आरोह रथं भ्रात जुत्तं पंथ लिय आजोधीयं ।। ४

इति गज गीत

*

अथ पाडगति

दोहा– नख मित सिख मित जख्य मित, चवि चवि च्यारे चर्ण ।
सेम सुधार उधार कवि, पाढ गति इम वर्ण ।।

यथा– गिरवर वाल रे गढ मंदिर......
.. ...गोखे कोड वरीस......क्मणी घर वलहो ।
जम थारो पूजाहू रावळ गावे रांणीयां ।......
वेरी थरहर थटां तरवटां घाघरटां पाटां......
......छूटां जूटां घटां ऊमरटां खगभटां, भटां नटा ज्यो ।
......मिडंत ।

इति पाढ गीत

*

अथ पालवणी[1]

दोहा– च्यारे चरणा चूप सो, सोळे कळ सरसाइ ।
सो पालवणी सेस कहि, सम प्रस्तार वताइ ।।
रावळ माल राज्य प्रताप वर्णन—

यथा– हुए मगळाचार मुहुर्मं, वळे उछाह जुक्त घन वर्सं ।
दुखी नांहि जिण नगर मझारं, वणे रूप देवांण वजारं ।। १
इधक तेज आदति तप इळ, रांम राज वैकूंट किनाकिल ।
वस्त अनेक देस ची वट्ट, हुए हूकळां जागळ नट्ट ।। २
सोंघा अगर सुवास सरस्स, देवलोक जिम लोक दरस्स ।
जस्स सुवाम दसों दिस जैरी, वहिम वसत इळा नहि वैरी ।। ३

---

[1] पालवणी का लक्षण–इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्रा होती हैं तथा चारों चरणों की तुकें मिलती हैं ।

दाने करण कविंदां दाता, अरिविंदां ज्यों अधिक उदाता ।
धड़छण खळा खग झट धारी, रावळ माल तपै अवतारी ।। ४

इति पालवणी ।। इति सर्व गीत वर्णनं

*

प्रहेली– डूगर कडसै घर करै, सरली मूकै धाह ।
सो नर अजणे ऊपजै, मुझै साद सुणाई ।। १
चिहूं नारी नर नीपजै, चिहूं नरां नर होई ।
सो नर नरजा पाधरो, गाजि न सकै कोई ।। २
गळै जनोई रवि श्रवण, मस्तक ऊपर दंत ।
एह हियाळी कर ग्रही, श्रवण सुहावै कंत ।। ३
कध खिरैण लहीय मदिर. मभामि अद्ध सारयणी ।
वाळा लिसं भुयगो, कहि सुदर कवण कज्जेण ।। ४

इति प्रहेलिका

*

दोहा– पांडव मुनि सर मेदनी, सुक्ल पख्य नभ माम ।
तिथ नवमी रविवार तिम, जैसळ हरीयद वास ।। १
रावळ माल सु पाट पति, तास कुवर हरिराज ।
कुसळ लाभ कवि वरणव्यो, जास कुतूहळ काज ।। २
पल-पल प्रति दिन जो पढै, सुणै विचारै सोइ ।
कवि मारग उत्तम कथै, कविता पति हुइ जोइ ।। ३
रवि अवर जां लग रिधू, रिधू रांम तां राज ।
सुर सग्ता वाचा सक्ति, तव लग पिंगळ राज ।। ४

।। इति श्री महारावळ माल पाटोधरे तस्यात्मज कुवर श्री हरिराज विरचिते पिंगळ सिरोमणि सपूर्णं ।।

।। श्री ।। ।। श्री मस्तु ।। ।। कल्याणमस्तु ।।

।। स १८०० वर्षे श्रावण सुदी ६ चन्द्रवारे लिखी प्रोहित दुर्गादास गुमांनीरामः सेवग वसुदेव जी तत्पुत्र सदाराम पठनार्थं ।।

परिशिष्ट

अ. अनुक्रमणिका

ब. राजस्थानी छंद शास्त्रों की परम्परा

अनुक्रमणिका

छंद

दूहा

गाथा

छप्पय

अलंकार

नांममाला

गीत

राजस्थानी छंद शास्त्रों की परम्परा

श्री सीताराम लालस

राजस्थानी भाषा के साहित्य की विशेषताओं को समझने के लिए उसके छंद शास्त्र आदि का ज्ञान आवश्यक है। प्राचीन राजस्थानी कवियों ने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि से चली आने वाली साहित्यिक परम्पराओं से लाभ उठा कर कई नए छन्दों का निर्माण भी किया और छंद शास्त्र के ग्रंथों की रचना भी की। आज वे सभी छंद शास्त्र उपलब्ध नहीं होते पर उनके नाम का उल्लेख उपलब्ध ग्रंथों में अवश्य मिलता है। ऐसे प्राचीन ग्रंथों में नागराज पिंगळ अथवा पिंगळ का उल्लेख बहुत मिलता है। पिंगळ मुनि का रचा हुआ पिंगळ सूत्र तो प्रसिद्ध है ही पर उसके बाद भी पिंगळ का कोई ग्रंथ अवश्य रचा गया होगा जिसमें संस्कृत छंदों के अतिरिक्त भी परवर्ती कवियों द्वारा रचे गये छंदों का वर्णन रहा होगा। मिरगेसर ग्राम में नागराज पिंगळ नामक ग्रंथ तो मेरे देखने में भी आया।

उपलब्ध छंद-शास्त्र के ग्रन्थों में पिंगळ सिरोमणि सबसे प्राचीन है। इसके रचयिता अकबर के समकालीन जैसलमेर के रावल हरराज थे। उन्होंने अपने इस ग्रंथ की रचना बड़े विद्वतापूर्ण ढंग से की है। इस ग्रंथ की अपनी कुछ विशेषताएँ भी हैं जो इसके बाद रचे जाने वाले ग्रंथों में नहीं मिलती। कवि ने ७१ छप्पय के लक्षण बताये हैं और ६६ छप्पय उदाहरण के रूप में रचे हैं। कई गीतों का उल्लेख किया है जो अन्य छंद शास्त्रों से भिन्न हैं। स्थान-स्थान पर लक्षणों सम्बन्धी सूक्ष्म बातें समझाने के लिए वार्ता का भी प्रयोग हुआ है। गद्य और पद्य दोनों में ही भाषा बड़ी सुन्दर प्रयुक्त हुई है। इस ग्रंथ को देखने से पता चलता है कि इसका रचयिता छंद शास्त्र का बहुत अच्छा और सुलझा हुआ विद्वान था। जो भी खोज राजस्थानी के ग्रंथों की अभी तक हुई है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि यह ग्रंथ अपने समय का बहुत महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

कुंवर हरराज के बाद संवत् १७२१ में जोगीदास चारण का रचा हुआ हरि पिंगळ उपलब्ध होता है।[1] कवि के आश्रयदाता प्रतापगढ़ नरेश हरिसिंह के वंश की प्रशंसा इस ग्रन्थ

---

[1]इसकी हस्तलिखित प्रति सरस्वती भंडार, उदयपुर में सुरक्षित है ऐसा कहा जाता है।

से ग्रंथ के परिच्छेद में की गई है। इसमें करीब २२ डिंगल गीतों का भी वर्णन है। रघुवर-जस प्रकास के रचयिता किसनजी आढ़ा ने भी अपने ग्रंथ में इसका जिक्र किया है। डिंगल की छंद-परम्परा को समझने में इस ग्रन्थ का अपना स्थान है। ग्रंथ का अन्तिम छंद इस प्रकार है—

संवत सतर इक्वीस में, कातिक सुभ पख चंद।
हरिपिंगळ हरिचंद जस, वणियो सीर समंद॥

राजस्थानी छंद शास्त्र की रचना करने वालों में हमीरदान रतनू का नाम विशेष तौर से उल्लेखनीय है। ये मारवाड़ राज्य के घड़ोई गांव के निवासी थे। कच्छभुज के राजकुमार लखपत के कृपापात्र थे। डिंगल भाषा के विद्वान कवियों में उनका नाम लिया जाता है। उन्होंने लगभग १७५ ग्रन्थों की रचना की।

इन ग्रन्थों में लखपत पिंगळ, गुण पिंगळ प्रकास, हमीर नाममाळा[1], जोतिस जड़ाव, ब्रह्मांड पुराण, भागवत दर्पण, जदुवंस वंसावळी आदि प्रसिद्ध हैं। लखपत ने एक बड़े युद्ध में प्रसिद्ध योद्धा गजबुलन्द को परास्त किया था। इस विषय को लेकर भी उन्होंने बड़ी सुन्दर वचनिका का निर्माण किया था।

इन ग्रन्थों में से प्रथम दो ग्रन्थ छंद शास्त्र के हैं। गुणपिंगळ प्रकास[2] की रचना कवि ने सं० १७६८ में की थी। मात्रा परिच्छेद तथा वर्ण परिच्छेद इन दो भागों में पूरा ग्रन्थ विभक्त किया गया है। डिंगल गीतों में प्रस्तार की रीति नहीं अपनाई गई है पर इस ग्रन्थ में इसी प्रस्तार के सहारे वेलियो सांणोर के अनेक भेद किये हैं और आदि तथा अन्त के गीतों के उदाहरण भी दिये हैं। प्रहास सांणोर का भी उदाहरण दिया है। ७१ तरह के छप्पय, २१ तरह के दोहे तथा २६ तरह की गाथा के नाम भी दिये हैं। सावझ्झ (स्कंध) गाथा के २८ भेद बताये हैं तथा गाथाओं के विभिन्न भेदों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इन छंदों के उदाहरणों में ईश्वर का गुणगान किया है।

इसका दूसरा ग्रन्थ लखपत पिंगळ भी सुन्दर व उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें कई प्रकार के छंदों, २६ प्रकार की [illegible], [illegible] वर्णन तथा २४-२५ प्रकार के गीत हैं जिनमें [illegible], सिहचली, भाखड़ी, वेलियो सांणोर आदि हैं। ये गीत प्रायः लखपत की प्रशंसा में रचे गए हैं।

इस ग्रन्थ का अन्त इस प्रकार से किया गया है—

महादेव गुरु करि महरि, हम्मीरि सुमति हमीर।
कूंवर बणायो [illegible] पिंगळ, [illegible] [illegible]॥

त उत्तम दीजै उक्ति, सरसति हु प्रसन्न।
गावा लखपत्ती गुणे, महिपत्ती वड मन्न।।

इस ग्रन्थ का रचनाकाल ग्रंत के छप्पय मे सं० १७६६ दिया गया है। भाषा व छन्द-निरूपण दोनों ही दृष्टियों से यह ग्रंथ ग्रध्ययन करने योग्य है।

राजस्थानी के छंद शास्त्रो मे रघुनाथ रूपक[1] सबसे ग्रधिक लोकप्रिय हुग्रा है। इसका रचयिता कवि मंछाराम जाति का सेवग ग्रौर जोधपुर का रहने वाला था। इस ग्रंथ की रचना के फलस्वरूप वह यहा के महाराजा मानसिंहजी का कृपापात्र भी हो गया था। उसके वंशजों को कई वर्षों तक मानसिंहजी की स्वीकृत की हुई पेन्शन भी मिलती रही थी।

इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बहुत सुव्यवस्थित तथा संक्षिप्त रूप में लिखा गया है तथा छंदों को समझने व स्मरण करने में बड़ी सहूलियत रहती है। इस ग्रंथ में रामायण की कथा के बहाने कवि ने कुंडलिया, छप्पय, उक्त, रस, कथाग्रो ग्रादि के ग्रतिरिक्त ७२ प्रकार के गीतों को समझाने का प्रयत्न किया है। वचनिका के रूप मे गद्य का भी ग्रच्छा प्रयोग किया गया है। डिंगल काव्य की जानकारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह ग्रंथ बहुत उपयोगी है।

पांचेटिया ग्राम (मारवाड़) के निवासी ग्रौर डिंगल के प्रसिद्ध कवि दुरसाजी ग्राढ़ा[2] के वंशज किशनजी ने भी रघुवरजस प्रकाश के नाम से एक सुन्दर छन्द शास्त्र का निर्माण किया। किशनजी ग्राढ़ा, उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी के कृपा-पात्र थे। डिंगल के उच्च कोटि के कवि होने के साथ-साथ इतिहास का भी उन्हें ग्रच्छा ज्ञान था। कर्नल टॉड ने इनकी बड़ी प्रशंसा की है।

उन्होने ग्रपने ग्रंथों में कई छन्दो के लक्षणों के ग्रतिरिक्त २३ प्रकार के दोहों, २६ प्रकार की गाथायें, ७१ प्रकार के छप्पय, ६१ प्रकार के गीत, १२ प्रकार की जथाग्रो, ११ प्रकार के दोष, कुछ नीसाणियां ग्रादि के लक्षण दिये हैं। पर ७१ प्रकार के छप्पय जहां प्रस्तार के ग्रनुसार बताये है वहा उनका उदाहरण नही दिया। इस प्रकार के छप्पयों के ग्रतिरिक्त उन्होंने २१ प्रकार के छप्पय उदाहरण सहित दिये हैं, यह इस ग्रंथ की विशेषता है। डिंगल गीतों की रचना-प्रणाली पर भी उन्होंने गहराई से विचार किया है। प्रत्येक गीत के लक्षण को समझाने के लिए गद्य का भी प्रयोग किया है। समस्त गीतों का विकास भी उन्होंने वयंण सगणो, ग्रणाल ग्रादि तीन मुख्य गीतो से बताने का प्रयत्न किया है। ग्रंथ की कथा में भगवान् राम का ही यशोगान किया गया है।

---

[1] काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

[2] यह ग्रंथ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की ग्रोर से प्रकाशित हो चुका है।

अपने पूर्वाचार्यों के ग्रंथों में से लखपत पिंगळ, हरि पिंगळ तथा रघुनाथ रूपक आदि का उल्लेख किया है तथा कहीं-कहीं उनसे तुलना भी की है। भाषा, भाव, रचना-प्रणाली आदि की दृष्टि से यह भी एक श्रेष्ठ ग्रंथ कहा जा सकता है।

राजस्थानी छन्द शास्त्रों की रचना करने वाले आचार्यों में थबूकड़ा (मारवाड) के निवासी उदयराम गूंगा का भी विशेष स्थान है। उन्होंने कविकुळबोध[1] नामक सुन्दर ग्रंथ की रचना की है। वे जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के समकालीन थे तथा भुज के राजा देसलजी के राज्याश्रय में ही अधिक रहे। वे साहित्य व छंद शास्त्र के अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्र आदि अनेक विद्याओं के अच्छे जानकार थे।

कविकुळबोध १० तरंगों मे विभक्त किया गया है—(१) गीतों का वर्णन, (२) गीतों के भेद व जथायें आदि, (३) अस्त्र-शस्त्र वर्णन, (४) डिंगल-पिंगल प्रश्नोत्तर, (५) उकत वर्णन, (६) रस वर्णन, (७, ८) अवधान माळा, (९) एकाक्षरी नाम माळा, (१०) अनेकार्थी नाम माळा। तरंगों की समाप्ति कर कहीं-कहीं कवि का नाम उमेदराम भी मिलता है।

रघुनाथरूपक आदि ग्रंथो से इस ग्रंथ मे गीतो का विवेचन अधिक वैज्ञानिक है। इसमे मात्रिक गीतो, गण गीतो, वर्णिक अर्धसम और विषम गीतो का वर्णन क्रमवार किया गया है।

इसमें ८४ प्रकार के गीतों, १८ प्रकार की उक्तो, २१ प्रकार की जथाग्रो आदि का विद्वतापूर्ण ढग से वर्णन किया है। इनके अतिरिक्त अवधान माळा, अनेकार्थी कोश, एकाक्षरी कोश[2] आदि मे शब्दो की अच्छी जानकारी दी है।

पूरे ग्रंथ मे कवि ने अपनी विद्वता का अच्छा परिचय दिया है। उन्होंने कई एक गीतो पर अपनी मौलिक सूझ भी व्यक्त की है। उनके इस ग्रन्थ के अध्ययन के बिना राजस्थानी छद शास्त्रो का ज्ञान अधूरा है।

आधुनिक युग मे छद शास्त्र के रचयिता के नाते बून्दी के कवि राजा मुरारीदानजी का नाम लिया जा सकता है। वे कविराजा सूर्यमलजी के दत्तक पुत्र थे। संस्कृत, पिंगल और डिंगल आदि भाषाओ पर उनका समान अधिकार था। उनका ग्रन्थ डिंगल कोष मुख्यतया कोश का ही ग्रन्थ है पर उसमे कुछ छदो और गीतो के लक्षण आदि भी दिये गये हैं। लक्षण को स्पष्ट करते हुए गीत के उदाहरण के रूप मे उन्होंने डिंगल के पर्यायवाची शब्दो की

---

[1] इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजस्थानी शोध संस्थान के संग्रह मे है।

[2] ये तीनो कोश 'परम्परा' के डिंगल कोश अक मे प्रकाशित हो चुके हैं।

अच्छी जानकारी दी है। उनका यह ग्रंथ बून्दी से प्रकाशित भी हो चुका है।[1] यह ग्रन्थ भाषा शास्त्रियों के लिए अधिक उपयोगी है।

राजस्थानी के इन मुख्य छन्द शास्त्रों के अतिरिक्त भी कई ग्रन्थ रचे गये। राजकोट के दीवान रणछोड़जी द्वारा सम्पादित छन्द शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ रण-पिंगळ के तीसरे भाग में डिंगल गीतों का वर्णन मिलता है। गीतों का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रन्थकर्ता ने गीतों पर प्रकाश डालते समय लखपत पिंगळ और रघुनाथ रूपक की पूरी सहायता ली है।

महाराजा मानसिंहजी के समकालीन कवि उदैचंद भंडारी ने भी एक छंद शास्त्र की रचना की है। जोधपुर निवासी हरिकिशन ने रूपदीप पिंगळ की रचना की जिसमें ५२ प्रकार के छंदों का वर्णन है। मोगड़े के निवासी हरदानजी सिढायच ने भी छंद दिवाकर नाम से एक ग्रन्थ की रचना की। सेवापुरी (जयपुर) के निवासी हिंगळाजदानजी कविया ने भी छंदों का एक बड़ा ग्रन्थ बनाया था। मोगड़ा गांव के निवासी दूलजी सिढायच ने भी छंदों पर ग्रंथ का निर्माण किया जिसमें गीतों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राजस्थानी में छन्द शास्त्रों की परम्परा भी उसकी काव्य-परम्परा की तरह समृद्ध रही है। इन छंद शास्त्रों के अध्ययन से न केवल प्राचीन राजस्थानी काव्य को समझने में ही सहायता मिलती है वरन् उस साहित्य के विभिन्न अंगों की पूरी जानकारी प्राप्त करने में भी इनसे बड़ी सहूलियत हो जाती है। पिंगळ सिरोमणि जैसे दुर्लभ ग्रन्थ का प्रकाशन भी इस दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है।

---

[1] इस ग्रंथ के कोशों वाला अंश 'परम्परा' के डिंगल कोश अंक में प्रकाशित हो चुका है।

राजस्थानी शोध-संस्थान जोधपुर का महत्वपूर्ण प्रकाशन

राजस्थांनी सबद कोस

संपादक

सीताराम लालस

१. लगभग हजार-हजार पृष्ठो की चार बडी जिल्दों मे प्रकाशित होगा।

२. प्रथम जिल्द शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है।

३. लेखक ने तीस वर्ष के असाध्य परिश्रम से शब्दों का सकलन राजस्थानी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों, नवीन प्रकाशित पुस्तको, लोक-साहित्य, लोक-गीतो, बोलचाल की भाषा एव आधुनिक राजस्थानी प्रकाशनो से किया है।

४ इस कोश मे कृषि एवं अन्य पेशो-संबधी शब्द, ज्योतिष, वैद्यक, धर्म-दर्शन, शकुन-संबंधी शब्द, गणित, खगोल, भूगोल, भूतत्व, प्राणी-शास्त्र-संबधी शब्द, सगीत, साहित्य, भवन, चित्र एव मूर्तिकला-संबंधी शब्द समाहित किये गये हैं।

५. कोश राजस्थानी जीवन की सर्वागीरा गतिविधि का प्रामाणिक शब्दात्मक प्रतिबिम्ब है।

६. राजस्थान की विभिन्न बोलियो के शब्द भी इस कोश मे हैं, यथा : मेवाड़ी, हाडौती, मारवाड़ी, शेखावाटी, मेवाती, ढूंढाड़ी, मालवी, बागड़ी आदि।

७. शब्द की सपूर्ण आत्मा को समझने के लिए प्रत्येक शब्द को इस प्रकार व्यवस्थित किया है-राजस्थानी शब्द, उसका व्याकरण-स्वरूप, तत्सम् प्रति शब्द और जहा-जहा सभव हुआ वहां शब्द का धातुरूप, महत्वपूर्ण शब्दो के अनेक पर्यायवाची शब्द, विवादात्मक अर्थों के स्थान पर राजस्थानी प्रयोग के उदाहरण, क्रिया-प्रयोग, शब्दो पर आधारित मुहावरे एव कहावतें, शब्दो के रूप-भेद, यौगिक शब्द, अल्पार्थ, महत्ववाची, विलोम शब्द आदि कुछ मुख्य बाते हैं।

८. कोश मे लगभग दस हजार मुहावरे-कहावतो का अर्थसहित प्रयोग किया गया है। हजारो दोहो एव पद्यांशो का प्रयोग उदाहरणो मे किया गया है।

९ राजस्थान के प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियो एव स्थानो, धार्मिक सम्प्रदायो एव उनके उन्नायको, उत्सवो एव त्यौहारो, जातियो एव उनके रीतिरिवाजो पर यथास्थान प्रामाणिक टिप्पणिया दी गई हैं।

१० कोश के प्रथम जिल्द के साथ लेखक द्वारा विरचित एक सुविस्तृत एवं विवेचनात्मक प्रस्तावना है जो शब्द कोश की आन्तरिक समस्याओं को समझाने का उपक्रम करेगी और राजस्थानी साहित्य पर भी प्रकाश डालेगी।

'राजथांनी सबद कोस' पर सम्मतिय

★ *I found it conceived in a fine scientific spirit, and it's execution appeared to me to be perfectly in order.*
I wish your venture all success.

Dr. Sunitikumar Chatterji

★ 'राजस्थानी सबद कोस' का प्रथम भाग मिला। बिना किसी हल्ला-गुल्ला के ठोस काम करने का यह उत्तम उदाहरण है। राजस्थानी साहित्य के रूप में हिन्दी को विस्तृत तथा बहुमूल्य देन मिली है। जब इसके सारे रत्न प्रकाशित होकर सुलभ हो जायेंगे तब विद्वान इसके मूल्य को समझ पायेंगे। उसके समझने के लिए ऐसे विशाल कोश की आवश्यकता थी।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

★ मैंने इस शब्द-कोश के कुछ पृष्ठ पढ लिये हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। बहुत दिनों से ऐसे कोश का अभाव खटक रहा था। इसके प्रकाशन से केवल राजस्थानी भाषा के समझने में ही सहायता नहीं मिलेगी, अन्य सम्बन्धित भाषाओं के समझने में भी बडी सहायता मिलेगी। कई अपभ्रंश साहित्य के ऐसे शब्द जो अस्पष्ट या विवादास्पद हैं, इसमें मिल जाते हैं। इसका प्रकाशन कर के शोध संस्थान ने साहित्य के विद्यार्थियों का बडा उपकार किया है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

★ मैं कोश की सर्वतोमुखी जागरूकता देख कर दंग रह गया। भारत में जितने भाषा-कोश बने हैं उनको मैंने समय-समय पर देखा है, पर उनसे यह सर्वथा भिन्न है। पांडित्य और संदर्भ दोनों का इसमें असाधारण संयोग हुआ है। कोशकार की कार्य-पद्धति देखी और देखा श्री लालस का अध्यवसाय। अपने देश की प्राचीन परिस्थितियों में पंडित जिस निष्ठा से निरुक्त लिखा करते थे उसकी कुछ झलक मैंने यहां पाई।

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

★ देवताओं ने समुद्र का मन्थन कर के १४ रत्न निकाले थे। किन्तु भाषा-समुद्र का मथन कर के उससे शब्द-रत्न निकालना, उनको परखना, उनकी बारीकियों को दिखलाना यह और भी दुष्कर कार्य है। किन्तु श्री सीतारामजी लालस की अनवरत तपस्या और साधना ने इसे भी संभव कर के दिखला दिया है। यह एक बहुत बडा अनुष्ठान है जिसकी सफलता से राजस्थान का मस्तक ऊंचा रहेगा।

★ श्री सीतारामजी ने इस कोश की भूमिका लिखने में भी बहुत श्रम किया है। प्रस्तावना में उन्होंने राजस्थानी भाषा और व्याकरण के सम्बन्ध में बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत की है। मेरी दृष्टि में राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास में इस कोश को ऐतिहासिक महत्व प्राप्त होगा।

डॉ० कन्हैयालाल सहल

★ अपने ढंग का सर्वप्रथम कोश होने के कारण यह प्रयत्न सर्वथा प्रशंसनीय है। पुराने प्रयोगों के उदाहरण देकर इस कोश को वस्तुतः महत्वपूर्ण बना दिया है।...यह राजस्थानी कोश अच्छा बन गया है और राजस्थानी साहित्य का अध्ययन करने वालों के लिए बहुत ही सहायक और उपयोगी प्रमाणित होगा।

डॉ० रघुबीरसिंह, सीतामऊ

परम्परा पर कुछ सम्मतियाँ

★ परम्परा के विशेषांको के रूप में आप जो इन दुर्लभ ग्रन्थो का प्रकाशन कर रहे है उससे हमे वडा सन्तोष होता है। यह कार्य वहुत महत्वपूर्ण है।

—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

★ Your's is a unique contribution to the literature of Rajasthan and I congratulate you on the splendid achievements you have made.

—**Dr. K. L. Sahal**

★ राजस्थानी शोध-संस्थान के कार्य को मैं अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखता हूं। परम्परा द्वारा आप लोग राजस्थान के वारे मे सभी हिन्दी मनीषियो का ज्ञान-वर्द्धन कर रहे हैं।

—डॉ० रामविलास शर्मा

★ आपके सम्पादन में परम्परा हिन्दी की अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा कर रही है और उसे मैं हिन्दी के लिए गौरव-रूप मानता हूं।

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

★ आप अपनी परम्परा के द्वारा राजस्थानी भाषा और साहित्य की जो सेवा कर रहे हैं वह अत्यन्त श्लाघ्य है।

—डॉ० सत्येन्द्र

★ परम्परा का स्थान हिन्दी शोध पत्रों में निस्संदेह सर्वोच्च है।

'आजकल' मासिक

★ परम्परा के साधारण संस्करण भी राज-संस्करण होते हैं।

—'साहित्य'

★ परम्परा हिन्दी साहित्य और विशेष कर राजस्थानी साहित्य की सम्यक् परम्पराओ का उद्धार कर स्वयं एक अनवद्य परम्परा वन गई है।

—'सम्मेलन पत्रिका'

परम्परा के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

१. लोकगीत—मू. ३ रु. (अप्राप्य)
राजस्थानी लोक गीतों का एक अध्ययन व परिशिष्ट में चुने हुए गीत

१. गोरा हटजा—मू. ३ रु. (अप्राप्य)
अंग्रेजी साम्राज्य-विरोधी कविताओं का संकलन ऐतिहासिक टिप्पणियों सहित

३. डिंगल कोश—मू. १२ रु. (अप्राप्य)
डिंगल के प्राचीन पद्य-बद्ध कोशों का संकलन

४. जेठवे रा सोरठा—मू. ३ रु.
जेटवा सम्बन्धी राजस्थानी व गुजराती सोरठे तथा विवेचन

५. राजस्थानी बातां संग्रह—मू. ७ रु.
राजस्थानी की प्राचीन चुनी हुई बातें तथा विवेचन

६. रसराज—मू. ३ रु.
शृंगार-रस-सम्बन्धी राजस्थानी के चुने हुए दोहों का संकलन

७. नीति प्रकास—मू. ६ रु.
फारसी के ग्रंथ अखलाक-ए-मोहसनी का राजस्थानी गद्यानुवाद

८. ऐतिहासिक बातां—मू. ३ रु.
मारवाड़ के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली प्राचीन बातें व विवेचन

९. राजस्थानी साहित्य का आदिकाल—मू. ३ रु.
आदिकालीन राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी विविध लेख

सम्पादक : नारायणसिंह भाटी
प्रकाशक : राजस्थानी शोध-संस्थान
रिसाला रोड, जोधपुर